"नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला"

दास धर्म के 12 वें दिवस पर

विश्व शान्ति संस्करण

1991-92

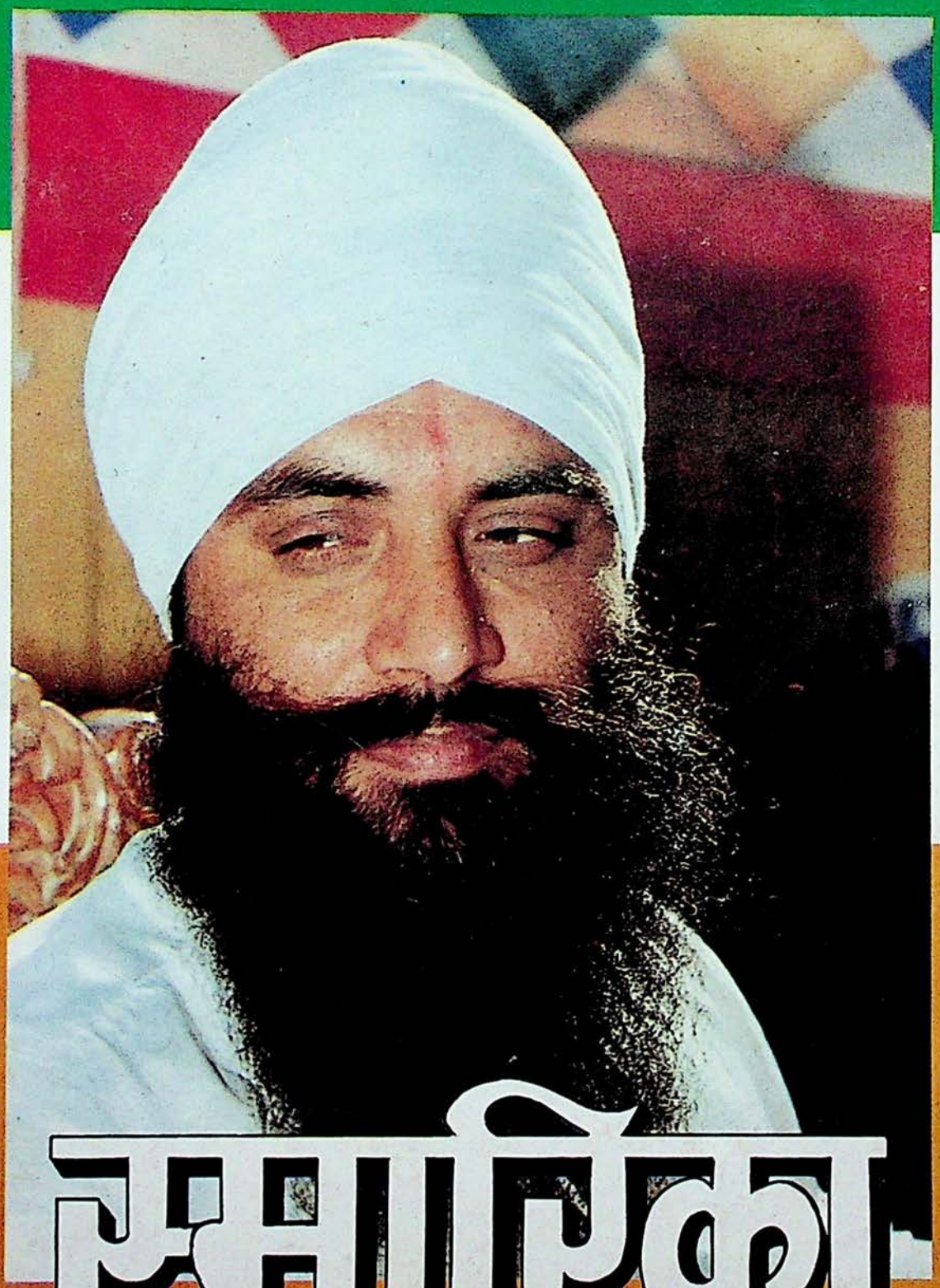

स्मारिका

"NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA"

S.N.D.

ELECTRICAL

WHOLESALERS

Suppliers to

Electricians Retailers Trade

and Industries

S.N.D.
ELECTRICAL (Leicester) LTD
90 NARBOROUGH ROAD
LEICESTER, LE3 0BS
Telephone (0533) 550025

25 CONSTITUTION HILL
HOCKLEY, BIRMINGHAM
WEST MIDLANDS, B19 3LG
Telephone 021-236 5012

सचखण्ड नानक धाम

डेरा महाराज दर्शन दास जी

WZK-12 A, न्यू महावीर नगर
नजफ़गढ़ रोड, नई दिल्ली-110 018.
फोन: 5412161

महाराज दर्शन दास जी की
असीम कृपा से उन्ही को समर्पित

स्मारिका

1991

अध्यक्ष
दास जगदीप सिह

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala Tere Bhane Sarbat Da Bhala

With Best Compliments from:

NAVIN JEWELLERS

All type of latest jewellery available.

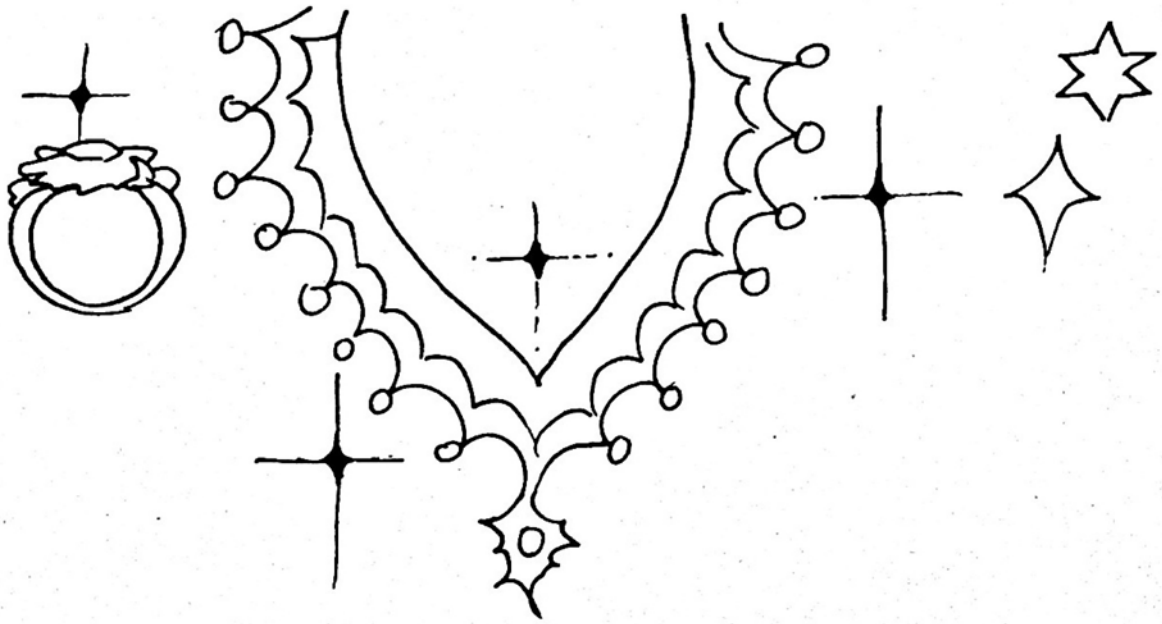

171, Ilford Lane,
Ilford, Essex,

Phone 081-478-1687

107, Broadway
Southall,
Middlesex-U.K.
Phone 081-571-2756

सचखण्ड नानक धाम

दर्शन दरबार महावीर नगर नजफगढ़ रोड का एक दृश्य.
यहाँ महाराज दर्शन दास जी के संगत ने अंतिम दर्शन किये थे।

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

Save OIL

Save PEACE

dasad

B-100 Lajpat Nagar-I, New Delhi-110024

Ph. 6833121

दासधर्म-स्थापना दिवस

16 फरवरी का दिन सचखण्ड नानक धाम के इतिहास में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस दिन वर्ष 1980 में महाराज दर्शन दास जी ने मानव कल्याण हेतु "दास धर्म" की स्थापना की। इस दिन पूरे भारतवर्ष में सूर्य ग्रहण लगा हुआ था और सभी लोग सूर्य ग्रहण से भयभीत होकर अपने-अपने घरों में दुबके थे। परन्तु अध्यात्मिक शक्ति से परिपूर्ण महाराज दर्शन दास जी ने इसी दिन "दास धर्म" की स्थापना कर सचखण्ड नानक धाम के अनुयाईयों को एक प्यार भरा वाक, "नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत्त दा भला।।" दिया जो आज सचखण्ड नानक धाम के अनुयाइयों का मधुर प्रणाम बना।

दास धर्म की स्थापना के साथ ही साथ महाराज जी ने इसके संविधान की एक रूप रेखा भी तैयार की। संविधान में उद्देश्य के साथ मर्यादा, रहत व हिदायतें रखीं जिसके पालन के लिए सब अनुयाई बाध्य हैं। इस तरह महाराज जी ने सचखण्ड नानक धाम के सभी अनुयाईयों को एक धर्म सूत्र में बांध दिया, यह एक ऐसा सूत्र है जिससे कोई भी मुक्त नहीं है जिसे महाराज जी ने अपने शब्दों में बयान किया, "धर्म एक वादा है परमात्मा के साथ कि धरती पर जा कर हम तेरे बनाये हुए इंसानों से प्यार करेंगे तथा सेवा करेंगे। महाराज जी का कथन है कि धर्म का दूसरा अर्थ ही भला करना है।

महाराज जी द्वारा बनाये गए "दास धर्म" के संविधान के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए 16 फरवरी 1990 को, रमेश नगर, दिल्ली में सचखण्ड नानक धाम ने पूरी शानो शौकत से मनाया। मर्यादा के अनुसार सुबह अरजोई के पश्चात् लंगर शुरु हुआ और समयानुसार महाराज जी की बाणी का कीर्तन शुरु हुआ। विभिन्न जत्थों ने मधुर कीर्तन से संगत को निहाल किया।

कीर्तन के पश्चात् वर्तमान रहनुमा महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी, संत बाबा घसीटा राम जी, बाबा बलवंत सिंह जी, बाबा जीत जी व सचखण्ड नानक की प्रबंधक समिति के साथ मंच पर पधारे और फिर विचार व्यक्त करने का दौर शुरु हुआ। विभिन्न वक्ताओं ने अपनेअपने विचार रखे। मुख्य वक्ताओं में थे, दासधर्म युवा वर्ग की दास आदर्श, दास धर्म महिला वर्ग की दास सत्यावती व केन्द्रीय प्रबंधक समिति के सचिव दास नरेन्द्र सिंह। बाद में हुजूर महाराज के व्यक्तिगत सचिव व सचखण्ड नानक धाम के मुख्य सचिव दास मान सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा :-

आदरणीय महाराज जी, बाबा जी और गुरु रूप प्यारी साध संगत जी,

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत दा भला

आज दास धर्म का वार्षिक सम्मेलन है। धर्म की बुनियाद दया, सत्य, सन्तोष और नाम है यही धर्म के पैर हैं इन्हीं पर आधारित पांच असूल हैं सच, सरबत का भला, साध संगत, सिदक और शाहदत (विकारों की) जिसका नाम 'दास धर्म' है महाराज जी को यह खजाना आज ही के दिन वर्ष 1980 में प्राप्त हुआ था जिसकी उपमा नहीं दी जा सकती।

कर्तव्य का पालन करना ही धर्म है माँ बच्चे को पालती है पिता बच्चो का पालन करता है। पिता बच्चे की शादी ब्याह करता है। भाई बहन की रक्षा करता है। यदि माता पिता भाई बहन अपने लालच या स्वार्थ के लिये किसी को उसके मार्ग से भटकाता है तो वह धर्म नहीं अधर्म है। अवतार पीर-पैगम्बरों द्वारा धर्म बनाये गये हैं। हम अपनी जरूरतों और लालसा के लिये इन्सान द्वारा बनाई गई नई रीतियां रस्मो को अपनाते हैं दूसरों के लिये नहीं। हम हर प्रकार का कर्म कमाने की कोशिश करते हैं इस शरीर को जिन्दा रखने के लिये या अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये जो माया के कारण पूरे नहीं हो सके। परन्तु सन्त-महात्माओं ने आ कर क्या मांगा? उन्होंने केवल प्यार के अलावा किसी भी चीज की इच्छा नहीं की प्रेम की पूजा ऐसे पुष्प हैं जो सबके चरणो में भी और गले में भी पड़ते हैं।

यदि हममें किसी पर दया करने की या सच बोलने की, या नाम जपने और जपाने की शक्ति है तो हम धर्मी हैं वरना नहीं।

सन्त महात्माओं की निंदा चुगली होती आई है। अच्छे कार्यों के निन्दक भी होते हैं परन्तु महापुरुष अपने धर्म के रास्ते से नहीं हिलते। महापुरुष इन चीजों से ऊपर उठ कर कार्य करते हैं। महाराज दर्शन दास जी ने 30.1.83 को अपने सत्संग में कहा था "रूहानी मण्डल के साथ आपको अपना जन्म सफल बनाने के लिये जो सेवा दी गई है वह है दास धर्म। तन-मन और धन की सेवा करो जीवन सुखी होगा।" महाराज जी ने दास का अर्थ सेवादार व खिदमतगार बताया है। सेवक की महिमा महाराज जी ने अपनी बाणी में स्थान-स्थान पर की है। उसको मुख्य रखते हुए पहले स्वयं को दास बनाया और हमें दास बनने की प्रेरणा दी। महाराज दर्शन दास जी ने 18 वर्ष की आयु में ही धर्म के चार पैर दया, सच, सन्तोष और नाम को अपनाया और तैयार करते रहे और 16 फरवरी 1980 को एक 'दास धर्म' का भव्य रूप तैयार कर हमें दिया। वे कहा करते थे सच को कोई नहीं बदल सकता। इसलिये तुम इसके बनो या ना बनो चाहे इसकी पोशाक पहनो या ना पहनो किन्तु हम अपनी डयूटी पर आये हैं। हमें जुल्म से टक्कर लेनी है। महाराज जी का कहना है परिस्थितियों के वश हो कर डाकू बन जाना जुल्म से टक्कर नहीं है। इस समय जुल्म से टक्कर है अपने आप से टक्कर अपने विकारो से टक्कर, उन खुराको से टक्कर जो हमें विषय चक्र में फसाये बैठी है।

वे अपने सत्संगीयो के समक्ष उस संस्कृति के मूल्य और महत्त्व को रखते कभी न थकते जिसे उन लोगों ने अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त किया था। यह ऐसी संस्कृति थी जिसकी तुलना में अतीत या वर्तमान की अन्य कोई भी सभ्यता तुच्छ साबित होती। यदि हम राष्ट्र की प्रतिभा के प्रति सच्चे होना चाहते हैं यदि

हम राष्ट्र की आत्मा के प्रति अपील करना चाहते हैं तो हमें अतीत के इस स्रोत का आकण्ठ पान करना होगा और तब भविष्य का निर्माण करने आगे बढ़ना होगा। हमें अतीत से प्राप्त हुई विरासत वस्तुतः एक धार्मिक विरासत है। अतएव भारत की मूलभूत समस्या है-सारे देश को आध्यात्मिक आदर्श के इर्द गिर्द संगठित करना। राष्ट्र अपने व्यक्तिगत घटको के चरित्र और गुणों पर खड़ा रहता है। अतः इस बात पर जोर दिया जाये कि जो भी समूचे राष्ट्र का कल्याण चाहता है उसे वह चाहे जिस क्षेत्र का व्यक्ति हो अपने चरित्र निर्माण का प्रयत्न करना चाहिए। और त्याग व सेवा का मार्ग अपनाना चाहिये।

महाराज दर्शन दास में सभी गुण पाये जाते हैं। प्रायः हमारे पास कुछ भी नहीं होता और हम एकदूसरे के धर्मों की या महापुरुषों की बुराई निन्दा चुगली करते हैं। परन्तु महाराज कभी किसी धर्म व पीर पैगम्बर की निन्दा चुगली नहीं करते यही महापुरुष की पहचान है। वे अतीत की रचना को ही अपना उपदेश बनाते हैं और इसी लिये उन्नति करते हैं। और विश्व में अपना उपदेश और संदेश छोड़ जाते हैं।

गुरु नानक साहिब कलयुग के मालिक हैं। त्रेता के वाली श्री राम और द्वापर के श्री कृष्ण। गुरु नानक जी आये और कलयुग का उद्धार कर चले गये। अब कलयुग कला का चल रहा है। महाराज जी ने हम सभी को एक शस्त्र दिया "नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत दा भला" नम्रता का नारा है जो सचखण्ड नानक धाम का मधुर प्रणाम है। इस नारे के सामने जो भी चीज आयेगी, निरंकार के सामने झुक जायेगी।

सचखण्ड नानक धाम से जो नाम मिला वह एक मोहर है और इसी प्रथा को आगे कायम रखने के लिये महाराज दर्शन दास जी के पश्चात सचखण्ड नानक धाम की द्वितीय कर्णधार महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी आये हैं। महाराज दर्शन दास जी ने समय-समय पर जो भी कहा वह उसी तरह पूरा हुआ और आगे भी होगा और हो भी रहा है। हम तो एकमात्र कठपुतली हैं। परन्तु कर्तव्य करना हमारा फर्ज है ऐसा काम करे जो हमारा धर्म बन जाये। जैसा कि पहले कहा है धर्म है किसी की खिदमतगारी। इस सदमार्ग पर चलाने वाले तत्त्व हैं जो इस मार्ग की पौष्टिक खुराक हैं वह हैं सच सरबत का भला, साध संगत सिदक और शाहदत। यह बाहरी ढांचा है और इसकी आत्मा है नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला। यह नारा वक्त की आवाज है।

दास धर्म ने या अनुयाईयों ने जो भी पिछले वर्षों में उन्नति की वह आपके सामने है। आपको इस वार्षिक समारोह की बधाई देते हुए यह आशा करते हैं कि महाराज जी द्वारा दर्शाये गये मार्ग पर दृढ़ता के साथ चलेंगे।

नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

दास मान सिंह जी के बाद दिल्ली के गद्दीनशीन संत बाबा घसीटा राम जी ने संगत को संबोधित किया।

साध संगत जी,

"दीन दुनियां दोनो बद्धे, अंदर जुल्फ प्यारे

रोमरोम मुर्शिद दे उत्तों मैं जावां बलिहारे।"

हमारे वालिद महाराज दर्शन दास जी, उनके बाद हमारे रहनुमां महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी, महाराज जी द्वारा सजाए गए समूह बाबा जी, महाराज जी द्वारा प्रस्थापित सेवा समितियाँ तथा महाराज जी के प्यार में आनन्द विभोर हो रही साध-संगत जी,

नानक नाम चढ़दी कला

तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

रात के अंधेरे में आकाश पर अनगिनत सितारे टिमटिमाते हैं परन्तु कुछ सितारों की रोशनी राहगीरों को राह बतलाती है। इस जगत में अनेकानेक जीव ईश्वर की मर्जी के साथ जन्म लेते हैं दैनिक दिन चर्या में रहते हुए अपनी जीवन लीला पूरी कर के अपना सफर पूरा करते हैं। दुनियां में हमें कुछ ऐसे भी महापुरुष मिलते हैं जो न केवल अपने परिवार अपने रिश्तेदारों, अपने घर का ख्याल करते हैं अपितु दुनियां की रहनुमाई का दायित्व अपने कंधों पर लेते हैं। अंधेरे में राहगीरों को रोशनी दिखाने वाला वह प्रकाश स्तम्भ महाराज दर्शन दास जिन्होंने दास धर्म की स्थापना की जो दुनियां में अपनी रफ्तार से चल रहा है जो कभी मिट नहीं सकता। दास से पहले अनेक वक्ताओं ने दास धर्म के प्रति अपने विचार रखे।

साध संगत जी, जैसे शहद के छत्तों के हर सुराख में मिठास होती है गुलाब की हर पत्ती में खुश्बू व रंगत होती है उसी प्रकार महाराज जी की उपमा, महाराज जी की बातें व उनकी वडियाई ब्यान क्या करें, उनकी तो हरेक बात उपमा वडियाई के साथ भरी है। ऐसी उपमा, शोभा का भंडार, भारत का ही नहीं, दुनियां का शहीद है, शहीद-ए-आजम है, वह महापुरुष महाराज दर्शन दास हमें दास धर्म दे गया जिसकी ग्यारहवीं वर्षगांठ हम मना रहे हैं। जो स्वयं इतना महान है उसके बताये हुए विचार, चलाया हुआ धर्म महान क्यों न होगा। कबीर साहिब कहते हैं :-

जननी जने तो भक्त जन या दाता या सूर

नहीं तो नारी बांझ रहे काहे गवावै नूर।

अब आइए, इस बात पर विचार करें कि "जननी जने तो भक्त जन" महाराज दर्शन दास जी बहुत बड़े भक्ति के भंडार हुए हैं उनकी रहमत के साथ अनेक भक्तों ने जन्म लिया। भक्ति की माला में पिरोये हुए दुनियां के डर से आजाद होकर, भय से गति प्राप्त करके हम आज यहां उसी रहनुमा की बदौलत बैठे हैं। अब है "या दाता" तो दुनियां जानती है कि महाराज दर्शन दास जी इतने बड़े दानी हुए हैं जिन्होंने अपने खजाने में से दुनियां को नामदान तो दिया ही, अपने जीवन का सुख, आराम, अपने बच्चों से बढ़कर प्यारे दुलारे अपने भक्त भी देश की एकता व अखण्डता के लिए दान कर दिए और यहां तक कि अपना आप भी दान के पलड़े में रख दिया। "या दाता या सूर" वे इतने

निर्भीक थे कि गुलामी के आगे कभी सिर न झुकाया, झूठ के आगे कभी नहीं झुके। उस महापुरुष, उस शूरवीर ने, उस महान योद्धा ने कभी भी समाज की कुरीतियों के समक्ष घुटने नहीं टेके। अपने आप को बलि वेदी पर रख दिया परन्तु झुके नहीं।

आज चाहे महाराज जी के विचार हमारी समझ से परे हों, या हम उन पर न चल पाते हों परन्तु एक समय आएगा जब महाराज़ जी को दुनियां में एक महान समाज सुधारक, ओर अज्ञानता के अंधेरे में डूबे हुए लोगों में प्रकाश स्तम्भ के नाम से भी याद किया जायेगा। महाराज जी की कही हुई प्रत्येक बात मील-पत्थर साबित होगी दुनियां की उन्नति के लिए यह हमारा अटूट विश्वास है। अध्यात्मिक पुरुष, महाबली योद्धा तो महाराज जी हैं ही उसके साथ ही साथ दुनियां को मानवता, मानवता के हृदय में सो रहे अध्यात्म को आपने जागृत किया। यह नहीं कि उन्होंने अध्यात्म को मन या अहं (हऊमै) के इर्द गिर्द घुमाया बल्कि उसे ईश्वर के साथ, ईश्वर के भरोसे के साथ जोड़ा और दुनियां की चलती हुई आंधी में एक सुखद रास्ता हमें दिया।

साध-संगत जी दुनियां में धर्म कभी नहीं बदलता। धर्म एक था, एक है और एक रहेगा। हां उसे समझने के लिए अलग अलग अर्थ अवश्य निकालने पड़ते हैं। जैसे धुरे के बिना साईकल का पहिया नहीं चल सकता उसी प्रकार धर्म के बिना दुनियां नहीं चल सकती। धर्म वह धुरा है जिसके इर्द-गिर्द समाज, कबीले, मजहब, रीति-रिवाज व संस्कृति व दुनियां को घूमना है। धर्म एक आधार है। जिस प्रकार कोई इमारत बिना नींव के नहीं बनाई जा सकती उसी प्रकार हमारे जीवन का महल धर्म की नींव के बिना नहीं बन सकता। गीतोपदेश में श्री कृष्ण फर्मान करते हैं, "हे अर्जुन धर्म वह आस्था है जिसके सहारे दुनियां टिकी है धर्म ईश्वर में जीव की आस्था है।" धर्म है ईश्वर को जानना। धर्म मानव जीवन की अंतिम सच्चाई है। धर्म है ईश्वर में लीन हो जाना, एक जुट हो जाना। धर्म एक वादा है, बहन का भाई के प्रति, भाई का बहन के प्रति, माँ बाप का बच्चों के प्रति, बच्चों का माँ बाप के प्रति, मुरीद का मुर्शिद के प्रति, मुर्शिद का मुरीद के प्रति और इस वादे की गांठ विशुद्ध अध्यात्मिक, भरोसे विश्वास और ईश्वर के रंग में रंगी है। धर्म है नाम सुमिरन। गुरु वाणी में हुजूर साहिब फर्मान करते हैं :–

"सगल धरमु महि स्रेषठ धरम
हरि को नामु जपु निरमलु करम।"

कि दुनियां में सर्वप्रथम व श्रेष्ठ धर्म है ईश्वर का नाम जपना और यह भी कहा गया है "अहिंसा परमः धर्मा" अहिंसा, हर जीव, प्राणी मात्र के लिये, दया भावना अपने हृदय में रखना यह भी एक धर्म है क्योंकि दया ही धर्म का आधार है, मूल है। तुलसीदास जी का फर्मान है :–

"दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान,
तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्राण।"

जपुजी साहिब में श्री गुरु नानक साहब फर्मान करते हैं :–

"धौल धरमु, दइआ का पूतु,
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।"
(जपुजी साहिब)

कि धर्म दया का पुत्र है। धर्मी आदमी कभी भी किसी पर आक्रमण नहीं करता, दो धर्मी कभी आपस में नहीं लड़ते कभी आपस में टकराव नहीं रखते क्योंकि धर्म प्यार है, परस्पर मिल बैठना है। धर्म एकता है। अब धर्म के साथ अनेकों नाम लगे हुए हैं जैसे हिन्दु, सिख, ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध। तो महाराज जी ने धर्म के साथ यह दास शब्द क्यों लगाया। जब से दुनियां बनी है समाज का स्वरुप दिन-ब-दिन निखरा है, निखर कर सामने आया है। समयानुसार समाज सुधारकों ने दुनियां को चलाने के लिए नीति-निर्धारण की है, कुछ नियम बनाए। जिन्होंने यह नियम बनाए वे रहनुमा कहलाए और नियमों पर चलने वाले अनुयाई। कहते हैं कि किसी परिवार, संस्था, देश को चलाने के लिए जब तक नीति का निर्धारण नहीं होता, नियम नहीं बनते तब तक संचालन नहीं हो सकता। धर्म अंकुश है और नीति जो राज सिंहासन को चलाती है वह शक्ति है, एक ताकत है। नीति के बिना धर्म निर्बल है, उसकी शक्ति ही नीति है, नियम व विनियम ही नीति हैं। यदि यह नियम धर्म में नहीं होंगे तो धर्म केवल संसार के रस्मों रिवाज, संस्कारों, छोटीमोटी अवस्थाओं में उलझ कर रह जायेगा। और उसे वह शक्ति नहीं मिलेगी, पावर नहीं मिलेगी, खेत को संभालने के लिए बाड़ नहीं मिलेगी। यदि राजनीति में से धर्म निकाल दिया जाए तो वह जुल्म व तशद्दुद का रूप धारण कर लेगी। यह ठीक है लोग कहते हैं कि राजनीतिज्ञ को धार्मिक काम नहीं करना चाहिए व धार्मिक आदमी को राजनीति में नहीं आना चाहिए परन्तु गुरु गोबिंद सिंह जी का फर्मान है :–

"राज बिना नहीं धरमु चलै है,
धरम बिना सभु दले मलै है।।"

कि राज्य के बिना धर्म नहीं चल सकता। तब तक धर्म नहीं चल सकता जब तक नियम बना कर एक ताकत नहीं बनाई जाती, समयानुसार देश की भलाई के लिए, धर्म की भलाई के लिए मिल बैठ कर कोई फैसला नहीं किया जाता, कोई राह नहीं बनाई जाती। पुरातन समय में बादशाह लोग किसी धार्मिक गुरु की शरण में, उसकी आज्ञा लेकर देश का कामकाज चलाते थे, अनेक मिसालें इतिहास के पन्नों पर हमें मिलती हैं। धर्म को स्थिर रखने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद का भी प्रयोग किया गया। साम का अर्थ–शरण में लेकर, दाम–पैसा देकर, लालच दे कर खरीदना या अपने साथ जोड़ना, दण्ड–उनके जुल्मों के लिए सजा देकर, उन्हें पराजित करके अपने साथ जोड़ना, भेद–कि फूट डालो राज करो (Divide & Rule), पुरातन समय में यह भी धर्म की चार नीतियां रही हैं। महाराज दर्शन दास जी ने इसे और सुदृढ़ किया, नया नया आयाम दिया, दास धर्म में प्रत्येक जीव को आने का मौका दिया कि :–

"सरणि आवै तिसु कंठि लावै।।"

कहते हैं कि जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की तो पंडित पुरोहितों ने कहा कि आपने इतना ऊंचा व

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala **Tere Bhane Sarbat Da Bhala**

With best compliments from :-

The VOGUE

Boutique

Exclusive Ladies Salwars & Suits Retailers and Wholesalers

17, Meena Bazar Pragati Maidan New Delhi.

Tel. : Showroom : 3312826, 3713305 Resi. : 652342

S.K. SHARMA

पवित्र पंथ बनाया है और सब छोटी-बड़ी जातियां एकत्र कर ली। तो गुरु जी ने फर्माया :–

"इन ही की कृपा के सजे हम है,
नही मो से गरीब करोर परे।।"

(ज्ञान प्रबोध पा. 10)

दास धर्म में महाराज दर्शन दास जी ने हर कौम, हर सूबे, हर बिरादरी, हर मजहब, हर दूर व नजदीक वाले, हर छोटे बड़े की जगह दी, अपने दरबार में, अपने चरणों में स्थान दिया, अपने गले से लगाया। दरबार में आए किसी भी इंसान को लौटाया नहीं अपितु यथा सम्भव आर्थिक सांसारिक व ईश्वरीय सहायता देकर उसे अपने गुलशन का, दास धर्म की फुलवाड़ी का एक हिस्सा बनाया, शोभायमान किया और आज आप उसी रूप में सजे बैठे हो। अब आता है दाम। इस नीति को महाराज जी ने थोड़ा सा परिवर्तन का रंग दे दिया। हमें पैसा देकर खरीदा नहीं, लालच देकर बिठाया नहीं बल्कि बहुत बड़ा दाम दिया, अपने खजाने में से पवित्र नाम दे दिया जिससे आत्मा का परमात्मा से मिलन हो सकता है. वह दान, वह कल्याणकारी नाम हमारी झोली में डाल दिया। रात दिन मेहनत मुशक्कत की, हम पर प्यार की वर्षा की, हमें अथाह प्रेम व अपना बलिदान देकर मुग्ध कर दिया मोह लिया, और हमें यहां बिठा लिया। हम उन के कर्जदार हैं, उनकी शहादत के, उनके गुणों व प्यार के, उनके सत्कार के जो हमें देकर चले गए। ऐसा दाम दे दिया जो शायद हमारी आने वाली पीढ़ियां भी नहीं चुका पाएंगी।

महाराज जी ने दण्ड दिया हमारे विकारों, हमारी बुरी आदतों को, हमारी गलत रीति-रिवाजों के खिलाफ आवाज भी उठाई। देश में पनप रहे नफरत के बीज, झूठ और बेइंसाफी से हार नहीं मानी, उनके खिलाफ डटे रहे, अपना सिर दे दिया परन्तु सिर न दिया। हऊमैं, अहंकार को दण्ड देकर धरती मां का लाडला सपूत अपने प्रेमियों को साथ लेकर, दाम देकर, बेइंसाफी व नफरत के बीजों को दण्ड देकर शारीरिक तौर पर चला गया।

अब आता है भेद। जिसे Divide & Rule भी कहा जाता है। वक्त के अनुसार इसे महाराज जी ने प्यार में तबदील किया। यहां कौन महसूस करता है कि वह हिन्दू है, सिक्ख है, मुस्लिम या ईसाई है? सब एकक पिता, ईश्वर की संतान है। कबीर साहिब कहते हैं :–

"अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे,
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे।।"

(प्रभाती कबीर जीओ पृष्ठ- 1349-50)

महाराज जी ने फूट डाल कर दिलों पर राज नहीं किया, किसी को छोटा बड़ा कह कर, किसी धर्म-मजहब को छोटा बड़ा बता कर अपने आप को नहीं उभारा, न ही उभारना चाहा, अपितु हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई को एक माला की तरह पिरोकर इक्ट्ठा किया और सबके दिलों पर अपना नाम लिख कर चले गए। दे गए, प्रेम और परस्पर बंधुत्व।

कहा जाता है कि आर्य लोगों ने पुरातन काल में समाज का वर्गीकरण किया, जो जैसा काम करता था उसे वैसा नाम दे दिया। जो लकड़ी का काम करता था उसे बढ़ई, जो निर्माण का काम करता था उसे राज, जो कपड़े सीता था उसे दर्जी कह दिया। वही वर्ग आज मजहब व कबीलों के नाम से जाने जाते हैं। महाराज जी गुरवाणी में फर्मान करते हैं

"जाति जनमु न बूझिअै सचु करि लेहु बताए,
सा जाति सा पाति है जेहा करमि कमाए।।"

कि जैसा कर्म जीव करता है वही उसकी जाति है। महाराज जी ने किसी को हिन्दु-सिक्ख-मुस्लिम-ईसाई कह कर याद नहीं किया, ईश्वर के बंदे कहा।

सबसे पहले धर्म की बात की गई है क्योंकि धर्म के बिना हम खड़े नहीं हो सकते, जी नहीं सकते, धर्म के बिना परिवार का रिश्ता कायम नहीं रह सकता, परस्पर प्रेमभाव नहीं रह सकता। धर्म को ताकत देने की जरूरत है जैसे पुरातन समय के नीति निर्धारकों ने धर्म से पहले हिन्दु-सिक्ख-मुस्लिम-ईसाई लगाया, रीति-रिवाज, संस्कार बनाए। कुछ असूल बनाने वालों ने ईश्वर को माना, कईयों ने नहीं माना। कईयों ने धर्म में या मजहब में मनुष्य को बराबरी दी गई तो कईयों में नहीं। कुछेक इतने कठोर थे कि उनके नियम या ग्रंथों की मूल भाषा थी, छोटे छोटे हिस्सों में बँट कर रह गई और साधारण जीव की समझ से परे ही रही। उनके बाद आने वाले रहनुमाओं ने लोगों को धर्म की राह से बिखरे देखा, उनकी तकलीफों को महसूस किया और उन्हें पुनः धर्म की राह पर चलाना चाहा।

पुरातन इतिहास का पुनर्वलोकन किया जाए तो पता चलता है कि हिन्दु धर्म के वेद-पुराण-शास्त्र स्मृतियां संस्कृत में हैं। अब इन्हें तो कोई संस्कृत का ज्ञाता ही पढ़ कर समझ सकता है, उन पर चल सकता है। मुस्लिम साहित्य अरबी फारसी में है। अब किसी को यह भाषा आए तो उसे पढ़ कर उस पर चले। इसी का परिणाम था कि अट्ठारह-बीस भाषाओं का मिश्रण करके गुरु ग्रंथ साहिब की रचना की गई मानवता को धर्म की राह पर चलाने हेतु। एक आसान सा मार्ग दिया। अब सिक्ख धर्म को ही ले लें, इनके अपने असूल हैं, नाम जपना, ईश्वर को मानना इत्यादि। महाराज गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं :–

"रहित पिआरी है मुझ कउ सिख पिआरा नाहि।।"

कि अपनी कुछ रहतों का नाम उन्होंने सिक्खी रख दिया। पहली पातशाही से लेकर नौवीं पातशाही है जो भी नौ गुरुओं ने हमें पैगाम दिया उसे मानने वाले सिक्ख कहलाए और सिक्खी में बंध गए। यह बात और है कि यह शब्द "सिक्ख" गुरु नानक साहिब से पहले भक्त कबीर जी के समय में प्रचलित था। वाणी भी इसे प्रमाणित करती है।

"सुणि परतापु कबीर का, दूजा सिख होआ सैणु नाई।।

(वार- 10, पउडी- 16)

सिक्ख अर्थात् शिष्य, जो गुरु की पुरजनों की शिक्षा पर चले। इसी शब्द को

दसम पातशाही ने एक नई रोशनी दी। आप ईसाई धर्म को ही ले लो या कोई भी दूसरा धर्म है। सबके अपने अपने असूल हैं। समयानुसार जो भी कमी बेशी आई, कोई और सोच साथ जोड़ी गई, नया नाम दिया गया, धर्म नहीं बदला, जोड़ तोड़ा नहीं गया परन्तु असूल समय के मुताबिक नये बना दिए गए। महाराज जी ने महसूस किया कि आम आदमी में धर्म के प्रति आस्था बहुत कम है, कई बार ऐसा होता है कि धर्म के रहनुमा या उनके पैरोकार धर्म की परिभाषा को स्वयंसिद्धी के लिए इतना कठिन बना देते हैं कि साधारण मनुष्य धर्म की राह छोड़ कर अधर्मी हो जाता है। ऐसे ही कई प्रपंचों से कर्म कांडों से, समय की नब्ज को पहचानते हुए, समय के कुछ मालिकों ने हमें मुक्ति दिलाई। दुनियां की बुरी हालत देखकर, समय की नब्ज को पहचान कर गुरु नानक साहिब ने ही आह भरी कि :–

"ऐती मार पई कुरलाणे तैं की दरदु न आया"

(गु.ग्रं.सा. पृष्ठ-)

लड़ाई, जंग, नफरत, यह तो किसी समस्या का हल नहीं है, कब तक किसी को ताकत से दबाया जा सकता है? यह नफरत के कांटे हमें मिल कर नहीं बैठने देंगे। ईश्वर की सृष्टि छिन्न-भिन्न हो जाएगी।

साध-संगत जी, कोई भी संत-महापुरुष, चाहे वह नानक साहिब हुए हैं चाहे कृष्ण, ईसा हुए हैं चाहे मुहम्मद साहिब, चाहे राम, चाहे बुद्ध, किसी एक वर्ग-विशेष के लिए इनका अवतरण नहीं हुआ। वे आये तो कुल कायनात के लिए। इसी तरह हुजूर महाराज दर्शन दास जी भी सबके लिए आए। यह बात दूसरी है कि भारत की, खास तौर पर बटाला की धरती को यह गौरव हासिल है जिसने ऐसे सपूत को जन्म दिया जिसे दुनियां की रहनुमाई करनी है। क्योंकि यह लोग जन्म-मरण के बंधन से आजाद होते हैं कि :–

जनम मरण दुहहू महि नाही,
जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि,
"हरि सिउ लैनि मिलाए॥"

(गु.ग्रं.सा. पृष्ठ- 748-49)

इनका आना जाना लगा ही रहता है। यह लोग गए कहां हैं, यहीं हैं। आज नानक, गोबिंद, राम, कृष्ण कहाँ गए हैं? यहीं हैं। बस हमारे पास देखने वाली आँख नहीं है कि :–

"बुलेआ शहु तेथों क्ख नई,
सच आखां ते रैंहदा कख नई,
पर तेरी वेखण वाली अख नई॥"

साध-संगत जी, चुम्बक के बिना लोहा इक्ट्ठा नहीं किया जा सकता, कभी भी छोटे छोटे टुकड़ों को खींच कर एकत्र नहीं किया जा सकता। यदि दर्शन दास यहां नहीं है तो आप किस आकर्षण से प्रभावित यहाँ बैठे हो? कौन सी ताकत है जो आप को बिठाए हुए है? वह है महाराज दर्शन दास जी और महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी में व्याप्त उनकी ज्योति। और उन्होंने दुनियां में एक ही आवाज दी एकता की, परस्पर बंधुत्व की, प्यार की, बलिदान की और जब भी कोई आवाज देगा सुधार की आवाज देगा। यदि गफलत की, अज्ञानता की नींद में सोये हुए को कोई उठाएगा तो उसे अच्छा तो लगेगा नहीं। आप अपने घर में ही देखो आपका बच्चा नींद में सोया है, स्कूल जाने का समय हो गया है, आप उसे उठाते हो तो उसे नींद से उठाया जाना कितना बुरा लगता वह माँ की बांह झटक भी देता है, नींद में गालियां भी निकाल देता है क्योंकि उसे नींद में मजा आ रहा है परन्तु क्या माँ उसे उठाना छोड़ देती है? नहीं, क्योंकि माँ बच्चे का हित चाहती है। संत-महात्मा भी तो हमारे मात-पिता हैं। हमारा जीवन तो हाथी जैसा है जिसका शरीर तो बड़ा है परन्तु आंखें छोटी छोटी हैं जिस कारण उसे अपने शरीर, अपनी ताकत के बारे में पता ही नहीं होता। तो यदि महाराज दर्शन दास जी ने महसूस किया कि अज्ञानता में लोग सोये हैं, दुनियां बारुद के ढेर पर टिकी है तो उसने हमें बांह पकड़ कर उठाया है, मां-बाप तो कभी गुस्सा नहीं करते, कोई जागा है या नहीं जागा, आज नहीं जागा तो 50 साल बाद, 100 साल बाद जागेगा। यदि दर्शन दास हमारा मात-पिता है तो वह जगाने से तो नहीं हटेगा, बांह पकड़ कर झंकोड़ने से तो नहीं हटेगा ना।

संत-महात्मा कीड़ों-मकौड़ों को तो कभी नहीं कहते क्योंकि वह तो अपने असूलों पर कायम हैं, उन्होंने तो इंसान को ही आवाज दी है कि ऐ इंसान तू इंसान बन जा। संत-महात्माओं का जन्म गुणी, ज्ञानी, भक्तों के लिए नहीं होता अपितु राह से भटके हुए लोगों के लिए होता है। जिन्हें मानवता के साथ प्यार भूल चुका है, आपस में मिल बैठना भूल गया है, वह तो सोये हुओं को जगाने आते हैं। यदि राम, कृष्ण, नानक, गोबिंद नींद से जगाना नहीं छोड़ते तो दर्शन दास कब छोड़ेगा क्योंकि यह उनका कार्य है। मशाल तो प्रकाश देती है, फूल तो महक देगा ही, कोई ले, न ले, वह अपना स्वभाव नहीं बदलते।

आज तो यह माहौल है कि घर परिवार में न बच्चे बड़ों का कहना मानते हैं न बड़े बच्चों की बात सुनते हैं। एक समय था कि नौं वर्षीय गोबिंद राय (गुरु गोबिंद सिंह) के इतना कहने पर, "आप से बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है?" नवम् पातशाह हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु अपना सीस बलिदान करने चल दिए। आप तो अपने बच्चों का तो क्या बड़ों का कहना नहीं मानते। पाठशालाओं में शिष्य गुरु का कहा नहीं मानते तो हम किस भारत की आशा किए बैठे हैं? देश है तो घर, धर्म, मजहब, कौम है, देश ही नहीं रहेगा तो क्या अंतरिक्ष में मकान बनाओगे, चंदमा पर चढ़ोगे? इस धरती मां का एहसान इस तरह नहीं उतर सकता। आपस में प्यार सत्कार बढ़ाओ, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत को तिलांजलि दे दो तो ही खुशहाली आ सकती है।

इस समय जो समारोह मनाने हम एकत्र हुए हैं वह है "दास धर्म" धर्म तो वही है, परन्तु साथ लगा दिया है दास। कई सोचते हैं कि पहले ही कई धर्म हैं तो महाराज जी ने यह नया धर्म क्यों बनाया?

दास वह है जो प्रभात समय उठता है, स्नान करके अपने गुरु मुर्शिद का दिया हुआ नाम जपता है, परिश्रम करके रोटी कमाता है और जो मिलता है उसमें संतुष्ट

रहता है और ईश्वर का धन्यवाद करता है। महाराज जी ने प्रत्येक को समान दर्जा दिया। जहां पुरुष को दर्जा दिया वहीं औरत को भी सम्मान दिया। औरत-मर्द को बराबर का दर्जा देकर साध-संगत का स्वरुप बनाया। जो हमें ईश्वर ने दिया है, शांति चाहते हो तो उसी में संतुष्ट रहो और सब्र से रहो। महाराज जी ने कहा है, "हे ईश्वर, दास धर्म में आने वाले प्रत्येक जीव को सब्र देना, सहनशीलता देना ताकि वह तेरी रजा में रह सके।" आपने स्वयं ईश्वर से मांगा, "हे ईश्वर, मुझे अधिक से अधिक दुख दे ताकि मुझे दुख सहने की आदत हो जाए।" यदि दुनियां के लिए कुछ मांगा है तो भलाई ही मांगी है कि, "नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत्त दा भला।" कि हे ईश्वर जहां अपने घर का नाम दे वहीं खुशहाली, समृद्धि भी दे दे।

जिसमें सब्र, सिदक, संतोष है, देश के प्रति अथाह, अटूट प्रेम है, जो मीट, शराब, अंडे से दूर रहता है वह दास है। जो परस्पर मेल-मिलाप रखता है वह दास है, एक मालिक की खलकत के साथ जो स्वयं को जोड़ कर रखता है वह दास है। समाज की कुरीतियां, रीति-रिवाज, संस्कार जो इस समय आदमी को झंझट में डाल रहे हैं और आदमी उनसे नफरत खा कर अपने आप से भाग रहा है, उससे ऊपर उठाने के लिए महाराज जी ने दास धर्म की स्थापना की। आज जो दहेज-रहित विवाह हुए हैं यह उसी नीति का एक अंग थे जो महाराज जी ने हमें दी। दास धर्म के अनुयाई यथार्थवादी होंगे, शुद्ध खुराक खायेंगे व शुद्ध विचार रखेंगे, अमन चाहने वाले होंगे सभी धर्म ग्रंथों का एक जैसा आदर करेंगे, सभी धार्मिक स्थानों का एक जैसा आदर करेगा चाहे वह किसी भी धर्म से संबंधित क्यों न हों। दास लेना कम, देना अधिक सीखे, महाराज जी ने कहा है, "देना है तो हमें अपने विकार दे जाओ, लेना है तो इस दरबार से झोलियां भर-भर खुशी ले जाओ।" दर्शन दास के दरबार ने क्या कभी किसी को मना किया है? किसी को कुछ कहा है? कलयुग है जिसके हाकिम गुरु नानक ने सदा तेरह-तेरह तोला है कभी कम नहीं तोला, और तेरह-तेरह ही तोला जाता रहेगा। परन्तु हम सब लोग ले नहीं सकते। हमें अपनी गद्दियों की भूख है, अपने मान-सम्मान की भूख है, भूख है अपने अहंकार की, और इन्हीं भूखों में हम जी रहे हैं, मिथ्या ही। यह सब दास के गुणों में शामिल नहीं है। सम्मान उसी का होगा जिसे ईश्वर ने सम्मानित करके भेजा है, जिसे रहनुमा बनाकर भेजा है, जिस पर अपनी मोहर लगा कर भेजा है। जिस समय तुलसी दास जी रामायण लिख रहे थे तो उनसे पूछा गया कि आपने लक्ष्मण और शत्रुघ्न के आगे तो श्री लिख दिया भरत के आगे क्यों नहीं लिखा तो कहने लगे कि उनसे ही पूछ लो तो भरत ने कहा, मेरा मन तो भंवरा है और कमल हैं श्री राम के चरण, उनकी चरण पादुकाएँ, मेरा मन इन्हीं चरण-कमलों का भंवर बना रहे तो बेहतर है, चरण रज बनने में जो आनन्द है वह और कहीं कहाँ। साध संगत जी, ईश्वर तो ईश्वर ही है, वह एक है और एक ही रहेगा

सभना जीआ का इकु दाता,
सो मै विसरि न जाई॥"

(जपुजी साहिब)

हम उसकी संतान हैं, दास हैं और दास बन कर रहना ही हमें शोभा देता है। तो महाराज दर्शन दास जी ने जो समय के अनुसार महसूस किया, एक नियमावली बना दी, एक गांठ बना दी, एक भंडार बना दिया और नाम दे दिया दास। धर्म तो सनातन है, जिसका न आरम्भ है न अंत। यदि आप दास धर्म के असूलों पर विश्वास करके यहां बैठे हो तो उन पर अमल करके भी देखो, फिर देखो, शांति मिलती है या नहीं, आनन्द मिलता है या नहीं, उस मालिक के दर्शन होते हैं या नहीं। ईसा कहते हैं :-

If you love me, then keep my command ments.

कि यदि मुझसे प्यार करते हो तो मेरे असूलों पर चलो। तो महाराज दर्शन दास जी ने नाम सुमिरन, भक्ति, सब्र, सिदक, संतोष और विकारों की शहादत व तामसिक भोजन की मनाही के जो असूल बनाए उसका नाम दास है और धर्म तो वही है जिस पर हम विचार कर चुके हैं। दास-धर्म स्वयं में इतना विशाल विषय है, इतना बड़ा है, महाराज जी के नाम जैसा ईश्वर के नाम जैसा कि चाहे सारी उम्र बोलते रहो, ग्रंथों पर ग्रंथ लिखते रहो इसका वर्णन कर पाना सम्भव नहीं।

अपने बच्चों को शुरू से ही स्वास्तिक बनाओ, देश प्रेम सिखाओ, बड़ों का अदब-सत्कार करना सिखाओ और उन्हें गुरु और नाम के साथ लगाओ ताकि वे भविष्य के कर्णधार बन सकें। अध्यात्म के साथ साथ उन्हें संसार-जगत की भी शिक्षा दो जिसे महाराज जी ने भक्ति-शक्ति के रूप में दर्शाया है।

दास, "दास धर्म" की ग्यारहवीं वर्षगांठ पर आप सबको बधाई देता है और नमन है सर्वप्रथम उस महान हस्ती, महाराज दर्शन दास जी को जिन्होंने इसकी नीवों को मजबूती प्रदान करने के लिए अपने खून से सींचा, उसके बाद महाराज जी के महान सपूत बाबा सतवंत सिंह जी, चाचा जोगा सिंह जी को जिन्होंने दास धर्म की खातिर प्राणों की आहुति दे दी। फिर मेला सिंह, फौरमैन, सुरेन्द्र, काला जैसे महान सपूतों को जिन्होंने इस धरातल को मजबूत करने के लिए अपना बलिदान दिया जिस पर दास धर्म आज खड़ा है। प्रणाम है उस महान माता को जिन्होंने धर्म की राह पर अपना सपूत दिया फिर हमारे रहनुमा महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी और समूह बाबा जी को। और अंत में साध-संगत को मुबारकबाद के साथ–

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत्त दा भला॥

फिर वह समय आया जिस की इंतजार समूह संगत कर रही थी। वर्तमान रहनुमा महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी ने संगत को संबोधित करते हुए कहा :-

गुरु रूप प्यारी साध संगत जी,
नानक नाम चढ़दी कला–
तेरे भाणे सरबत्त दा भला॥

आज के दिन की महानता हमारे मिशन में बहुत अधिक है क्योंकि महाराज दर्शन दास जी ने आज ही के दिन आज से दस वर्ष पहले 16 फरवरी 1980 के दिन, जब सूर्य ग्रहण लगा था, उसी दिन महाराज जी ने हम लोगों को वहम-भ्रमों से ऊपर उठाने के लिए दास धर्म की स्थापना की और हमें सच्चाई और आपसी भाई चारे का संदेश दिया, हिंसा को छोड़ प्यार और सच्चाई का मार्ग अपनाने का संदेश दिया।

महाराज जी कहा करते थे कि दूसरों के लिए जीना ही असल में जीना है, अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। दास धर्म के मानने वालों के लिए पांच उसूलों पर चलना जरूरी है—सच बोलना, साध-संगत करना, सिदक संतोष रखना, सरबत्त का भला मांगना व शहादत देना (विकारों की)। शहादत से उनका अर्थ विकारों से था। महाराज जी कहा करते थे, "आप अपने गुनाहों से तौबा कर लो परमात्मा आपको क्षमा कर देगा।

महाराज जी कहा करते थे दास धर्म रंगबिरंगे फूलों का चमन होगा न कि एक रंग के फूलों का और इस का उजाला सूर्य की भांति सारी दुनियां में रौशन होगा। साध संगत जी, महाराज जी ने सचखण्ड नामक धाम व दास धर्म के लिए जितना भी काम किया वह सब आंपके सहयोग से हुआ हम भी आपसे सहयोग की आशा करते हैं और महाराज दर्शन दास जी के चरणों में आप सब की उन्नति के लिए प्रार्थना करते हैं। हम हर समय आपकी सेवा के लिए हाजिर हैं।

नानक नाम चढ़दी कला—तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

तदोपरांत साध-संगत ने गद्दी पर नमस्कार किया और शाम 7 बजे दर्शन दरबार, न्यू महावीर नगर में हुजूर महाराज दर्शन दास जी की महान परम्परा को कायम रखते हुए महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी ने जिज्ञासु जीवों को नाम दान दिया और फिर सारी रात का गीत गजलों का मुशायरा भी हुआ।

(ਦਾਸ ਧਰਮ)

ਸਹਿਜ ਸੁਖ ਸਨੇਂਦੜੇ ਸਤਿਗੁਰ
ਸੱਚ, ਸੰਤੋਖ, ਦਇਆ ਨਾਮ,
ਚਹੁੰ ਧਰਮਾਂ ਦੇ ਸਾਈ।
ਇਕੋ ਵਰਨ, ਇਕੋ ਧਰਮ,
ਇਕੋ ਕਰਮ ਗੋਂਸਾਈ, ਤੂੰ ਹਰਿ, ਹਰ ਥਾਂਈ ॥
ਸਿਰਜਨਹਾਰ ਸੱਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ,
ਸੱਚ ਤਪਸਿਆ ਸੱਚ ਚੰਦਰਮਾਏ
ਦਿਸੇ ਨਾਹੀ ਦਿਸਾਏ ॥
ਸਿਦਕ ਭਿਓ ਹਰਿ ਅਰਜਨ ਕੋ,
ਸ਼ਹਾਦਤ ਸਿਰ ਦੀਜੇ ॥
ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ, ਪਿਤਾ ਗੋਬਿੰਦ ਰਾਇ।
ਜਿਨੀ ਦੀਓ, ਪੰਥ ਖਾਲਸਾਇ ॥

ਸੱਚ, ਸਿਦਕ, ਸਰਬੱਤ, ਸਾਧ ਸੰਗਤ,
ਸ਼ਹਾਦਤ ਸਿੰਘ, ਜੋ ਬਣ ਜਾਏ।
ਭੂਲ ਗਿਓ ਵਚਨ, ਗੁਰੂਵਨ ਕੇ,
ਦੀਓ ਫਿਰ ਸਮਝਾਏ।
ਦਾਸ ਧਰਮ ਚਲਿਓ, ਫਿਰ ਕਲਿ ਮਾਹੇ,
ਜਿਸ ਦੇ ਸਾਂਈ, ਦਰਸ਼ਨ ਅਗਮ ਗੋਸਾਂਈ।
ਜਿਥੇ ਜਾਈ, ਤਿਥੈ ਸਭਨੀ ਥਾਈ,
ਤੇਰੇ ਸਾਂਈ, ਅਗਮ ਗੋਸਾਈ ॥

"ਯਕੀਨ"

दासधर्म-स्थापना दिवस

16 फरवरी का दिन सचखण्ड नानक धाम के इतिहास में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस दिन वर्ष 1980 में महाराज दर्शन दास जी ने मानव कल्याण हेतु "दास धर्म" की स्थापना की। इस दिन पूरे भारतवर्ष में सूर्य ग्रहण लगा हुआ था और सभी लोग सूर्य ग्रहण से भयभीत होकर अपने-अपने घरों में दुबके थे। परन्तु अध्यात्मिक शक्ति से परिपूर्ण महाराज दर्शन दास जी ने इसी दिन "दास धर्म" की स्थापना कर सचखण्ड नानक धाम के अनुयाईयों को एक प्यार भरा वाक, "नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत्त दा भला।।" दिया जो आज सचखण्ड नानक धाम के अनुयाइयों का मधुर प्रणाम बना।

दास धर्म की स्थापना के साथ ही साथ महाराज जी ने इसके संविधान की एक रूप रेखा भी तैयार की। संविधान में उद्देश्य के साथ मर्यादा, रहत व हिदायतें रखीं जिसके पालन के लिए सब अनुयाई बाध्य हैं। इस तरह महाराज जी ने सचखण्ड नानक धाम के सभी अनुयाईयों को एक धर्म सूत्र में बांध दिया, यह एक ऐसा सूत्र है जिससे कोई भी मुक्त नहीं है जिसे महाराज जी ने अपने शब्दों में बयान किया, "धर्म एक वादा है परमात्मा के साथ कि धरती पर जा कर हम तेरे बनाये हुए इंसानों से प्यार करेंगे तथा सेवा करेंगे। महाराज जी का कथन है कि धर्म का दूसरा अर्थ ही भला करना है।

महाराज जी द्वारा बनाये गए "दास धर्म" के संविधान के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए 16 फरवरी 1990 को, रमेश नगर, दिल्ली में सचखण्ड नानक धाम ने पूरी शानो शौकत से मनाया। मर्यादा के अनुसार सुबह अरजोई के पश्चात् लंगर शुरु हुआ और समयानुसार महाराज जी की बाणी का कीर्तन शुरु हुआ। विभिन्न जत्थों ने मधुर कीर्तन से संगत को निहाल किया।

कीर्तन के पश्चात् वर्तमान रहनुमा महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी, संत बाबा घसीटा राम जी, बाबा बलवंत सिंह जी, बाबा जीत जी व सचखण्ड नानक की प्रबंधक समिति के साथ मंच पर पधारे और फिर विचार व्यक्त करने का दौर शुरु हुआ। विभिन्न वक्ताओं ने अपनेअपने विचार रखे। मुख्य वक्ताओं में थे, दासधर्म युवा वर्ग की दास आदर्श, दास धर्म महिला वर्ग की दास सत्यावती व केन्द्रीय प्रबंधक समिति के सचिव दास नरेन्द्र सिंह। बाद में हुजूर महाराज के व्यक्तिगत सचिव व सचखण्ड नानक धाम के मुख्य सचिव दास मान सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा :-

आदरणीय महाराज जी, बाबा जी और गुरु रूप प्यारी साध संगत जी,

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत दा भला

आज दास धर्म का वार्षिक सम्मेलन है। धर्म की बुनियाद दया, सत्य, सन्तोष और नाम है यही धर्म के पैर हैं इन्हीं पर आधारित पांच असूल हैं सच, सरबत का भला, साध संगत, सिदक और शाहदत (विकारों की) जिसका नाम 'दास धर्म' है महाराज जी को यह खजाना आज ही के दिन वर्ष 1980 में प्राप्त हुआ था जिसकी उपमा नहीं दी जा सकती।

कर्तव्य का पालन करना ही धर्म है माँ बच्चे को पालती है पिता बच्चो का पालन करता है। पिता बच्चे की शादी ब्याह करता है। भाई बहन की रक्षा करता है। यदि माता पिता भाई बहन अपने लालच या स्वार्थ के लिये किसी को उसके मार्ग से भटकाता है तो वह धर्म नहीं अधर्म है। अवतार पीर-पैगम्बरों द्वारा धर्म बनाये गये हैं। हम अपनी जरूरतों और लालसा के लिये इन्सान द्वारा बनाई गई नई रीतियां रस्मो को अपनाते हैं दूसरों के लिये नहीं। हम हर प्रकार का कर्म कमाने की कोशिश करते हैं इस शरीर को जिन्दा रखने के लिये या अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये जो माया के कारण पूरे नहीं हो सके। परन्तु सन्त-महात्माओं ने आ कर क्या मांगा? उन्होंने केवल प्यार के अलावा किसी भी चीज की इच्छा नहीं की प्रेम की पूजा ऐसे पुष्प हैं जो सबके चरणो में भी और गले में भी पड़ते हैं।

यदि हममें किसी पर दया करने की या सच बोलने की, या नाम जपने और जपाने की शक्ति है तो हम धर्मी हैं वरना नहीं।

सन्त महात्माओं की निंदा चुगली होती आई है। अच्छे कार्यों के निन्दक भी होते हैं परन्तु महापुरुष अपने धर्म के रास्ते से नहीं हिलते। महापुरुष इन चीजों से ऊपर उठ कर कार्य करते हैं। महाराज दर्शन दास जी ने 30.1.83 को अपने सत्संग में कहा था "रूहानी मण्डल के साथ आपको अपना जन्म सफल बनाने के लिये जो सेवा दी गई है वह है दास धर्म। तन-मन और धन की सेवा करो जीवन सुखी होगा।" महाराज जी ने दास का अर्थ सेवादार व खिदमतगार बताया है। सेवक की महिमा महाराज जी ने अपनी बाणी में स्थान-स्थान पर की है। उसको मुख्य रखते हुए पहले स्वयं को दास बनाया और हमें दास बनने की प्रेरणा दी। महाराज दर्शन दास जी ने 18 वर्ष की आयु में ही धर्म के चार पैर दया, सच, सन्तोष और नाम को अपनाया और तैयार करते रहे और 16 फरवरी 1980 को एक 'दास धर्म' का भव्य रूप तैयार कर हमें दिया। वे कहा करते थे सच को कोई नहीं बदल सकता। इसलिये तुम इसके बनो या ना बनो चाहे इसकी पोशाक पहनो या ना पहनो किन्तु हम अपनी डयूटी पर आये हैं। हमें जुल्म से टक्कर लेनी है। महाराज जी का कहना है परिस्थितियों के वश हो कर डाकू बन जाना जुल्म से टक्कर नहीं है। इस समय जुल्म से टक्कर है अपने आप से टक्कर अपने विकारो से टक्कर, उन खुराको से टक्कर जो हमें विषय चक्र में फसाये बैठी है।

वे अपने सत्संगीयो के समक्ष उस संस्कृति के मूल्य और महत्त्व को रखते कभी न थकते जिसे उन लोगों ने अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त किया था। यह ऐसी संस्कृति थी जिसकी तुलना में अतीत या वर्तमान की अन्य कोई भी सभ्यता तुच्छ साबित होती। यदि हम राष्ट्र की प्रतिभा के प्रति सच्चे होना चाहते हैं यदि

रहता है और ईश्वर का धन्यवाद करता है। महाराज जी ने प्रत्येक को समान दर्जा दिया। जहां पुरुष को दर्जा दिया वहीं औरत को भी सम्मान दिया। औरत-मर्द को बराबर का दर्जा देकर साध-संगत का स्वरुप बनाया। जो हमें ईश्वर ने दिया है, शांति चाहते हो तो उसी में संतुष्ट रहो और सब्र से रहो। महाराज जी ने कहा है, "हे ईश्वर, दास धर्म में आने वाले प्रत्येक जीव को सब्र देना, सहनशीलता देना ताकि वह तेसी रजा में रह सके।" आपने स्वयं ईश्वर से मांगा, "हे ईश्वर, मुझे अधिक से अधिक दुख दे ताकि मुझे दुख सहने की आदत हो जाए।" यदि दुनियां के लिए कुछ मांगा है तो भलाई ही मांगी है कि, "नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत्त दा भला।" कि हे ईश्वर जहां अपने घर का नाम दे वहीं खुशहाली, समृद्धि भी दे दे।

जिसमें सब्र, सिदक, संतोष है, देश के प्रति अथाह, अटूट प्रेम है, जो मीट, शराब, अंडे से दूर रहता है वह दास है। जो परस्पर मेल-मिलाप रखता है वह दास है, एक मालिक की खलकत के साथ जो स्वयं को जोड़ कर रखता है वह दास है। समाज की कुरीतियां, रीति-रिवाज, संस्कार जो इस समय आदमी को झंझट में डाल रहे हैं और आदमी उनसे नफरत खा कर अपने आप से भाग रहा है, उससे ऊपर उठाने के लिए महाराज जी ने दास धर्म की स्थापना की। आज जो दहेज-रहित विवाह हुए हैं यह उसी नीति का एक अंग थे जो महाराज जी ने हमें दी। दास धर्म के अनुयाई यथार्थवादी होंगे, शुद्ध खुराक खायेंगे व शुद्ध विचार रखेंगे, अमन चाहने वाले होंगे सभी धर्म ग्रंथों का एक जैसा आदर करेंगे, सभी धार्मिक स्थानों का एक जैसा आदर करेगा चाहे वह किसी भी धर्म से संबंधित क्यों न हों। दास लेना कम, देना अधिक सीखे, महाराज जी ने कहा है, "देना है तो हमें अपने विकार दे जाओ, लेना है तो इस दरबार से झोलियां भर-भर खुशी ले जाओ।" दर्शन दास के दरबार ने क्या कभी किसी को मना किया है? किसी को कुछ कहा है? कलयुग है जिसके हाकिम गुरु नानक ने सदा तेरह-तेरह तोला है कभी कम नहीं तोला, और तेरह-तेरह ही तोला जाता रहेगा। परन्तु हम सब लोग ले नहीं सकते। हमें अपनी गद्दियों की भूख है, अपने मान-सम्मान की भूख है, भूख है अपने अहंकार की, और इन्हीं भूखों में हम जी रहे हैं, मिथ्या ही। यह सब दास के गुणों में शामिल नहीं है। सम्मान उसी का होगा जिसे ईश्वर ने सम्मानित करके भेजा है, जिसे रहनुमा बनाकर भेजा है, जिस पर अपनी मोहर लगा कर भेजा है। जिस समय तुलसी दास जी रामायण लिख रहे थे तो उनसे पूछा गया कि आपने लक्ष्मण और शत्रुघ्न के आगे तो श्री लिख दिया भरत के आगे क्यों नहीं लिखा तो कहने लगे कि उनसे ही पूछ लो तो भरत ने कहा, मेरा मन तो भंवरा है और कमल हैं श्री राम के चरण, उनकी चरण पादुकाएँ, मेरा मन इन्हीं चरण-कमलों का भंवर बना रहे तो बेहतर है, चरण रज बनने में जो आनन्द है वह और कहीं कहाँ। साध संगत जी, ईश्वर तो ईश्वर ही है, वह एक है और एक ही रहेगा

सभना जीआ का इकु दाता,
सो मै विसरि न जाई॥"

(जपुजी साहिब)

हम उसकी संतान हैं, दास हैं और दास बन कर रहना ही हमें शोभा देता है। तो महाराज दर्शन दास जी ने जो समय के अनुसार महसूस किया, एक नियमावली बना दी, एक गांठ बना दी, एक भंडार बना दिया और नाम दे दिया दास। धर्म तो सनातन है, जिसका न आरम्भ है न अंत। यदि आप दास धर्म के असूलों पर विश्वास करके यहां बैठे हो तो उन पर अमल करके भी देखो, फिर देखो, शांति मिलती है या नहीं, आनन्द मिलता है या नहीं, उस मालिक के दर्शन होते हैं या नहीं। ईसा कहते हैं :-

If you love me, then keep my command ments.

कि यदि मुझसे प्यार करते हो तो मेरे असूलों पर चलो। तो महाराज दर्शन दास जी ने नाम सुमिरन, भक्ति, सब्र, सिदक, संतोष और विकारों की शहादत व तामसिक भोजन की मनाही के जो असूल बनाए उसका नाम दास है और धर्म तो वही है जिस पर हम विचार कर चुके हैं। दास-धर्म स्वयं में इतना विशाल विषय है, इतना बड़ा है, महाराज जी के नाम जैसा ईश्वर के नाम जैसा कि चाहे सारी उम्र बोलते रहो, ग्रंथों पर ग्रंथ लिखते रहो इसका वर्णन कर पाना सम्भव नहीं।

अपने बच्चों को शुरू से ही स्वास्तिक बनाओ, देश प्रेम सिखाओ, बड़ों का अदब-सत्कार करना सिखाओ और उन्हें गुरु और नाम के साथ लगाओ ताकि वे भविष्य के कर्णधार बन सकें। अध्यात्म के साथ साथ उन्हें संसार-जगत की भी शिक्षा दो जिसे महाराज जी ने भक्ति-शक्ति के रूप में दर्शाया है।

दास, "दास धर्म" की ग्यारहवीं वर्षगांठ पर आप सबको बधाई देता है और नमन है सर्वप्रथम उस महान हस्ती, महाराज दर्शन दास जी को जिन्होंने इसकी नीवों को मजबूती प्रदान करने के लिए अपने खून से सींचा, उसके बाद महाराज जी के महान सपूत बाबा सतवंत सिंह जी, चाचा जोगा सिंह जी को जिन्होंने दास धर्म की खातिर प्राणों की आहुति दे दी। फिर मेला सिंह, फौरमैन, सुरेन्द, काला जैसे महान सपूतों को जिन्होंने इस धरातल को मजबूत करने के लिए अपना बलिदान दिया जिस पर दास धर्म आज खड़ा है। प्रणाम है उस महान माता को जिन्होंने धर्म की राह पर अपना सपूत दिया फिर हमारे रहनुमा महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी और समूह बाबा जी को। और अंत में साध-संगत को मुबारकबाद के साथ–

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

फिर वह समय आया जिस की इंतजार समूह संगत कर रही थी। वर्तमान रहनुमा महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी ने संगत को संबोधित करते हुए कहा :-

गुरु रूप प्यारी साध संगत जी,
नानक नाम चढ़दी कला–
तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

दसम पातशाही ने एक नई रोशनी दी। आप ईसाई धर्म को ही ले लो या कोई भी दूसरा धर्म है। सबके अपने अपने असूल हैं। समयानुसार जो भी कमी बेशी आई, कोई और सोच साथ जोड़ी गई, नया नाम दिया गया, धर्म नहीं बदला, जोड़ा तोड़ा नहीं गया परन्तु असूल समय के मुताबिक नये बना दिए गए। महाराज जी ने महसूस किया कि आम आदमी में धर्म के प्रति आस्था बहुत कम है, कई बार ऐसा होता है कि धर्म के रहनुमा या उनके पैरोकार धर्म की परिभाषा को स्वयंसिद्धी के लिए इतना कठिन बना देते हैं कि साधारण मनुष्य धर्म की राह छोड़ कर अधर्मी हो जाता है। ऐसे ही कई प्रपंचों से कर्म कांडों से, समय की नब्ज को पहचानते हुए, समय के कुछ मालिकों ने हमें मुक्ति दिलाई। दुनियां की बुरी हालत देखकर, समय की नब्ज को पहचान कर गुरु नानक साहिब ने ही आह भरी कि :–

"ऐती मार पई कुरलाणे तैं की दरदु न आया"

(गु.ग्रं.सा. पृष्ठ-)

लड़ाई, जंग, नफरत, यह तो किसी समस्या का हल नहीं है, कब तक किसी को ताकत से दबाया जा सकता है? यह नफरत के कांटे हमें मिल कर नहीं बैठने देंगे। ईश्वर की सृष्टि छिन्न-भिन्न हो जाएगी।

साध-संगत जी, कोई भी संत-महापुरुष, चाहे वह नानक साहिब हुए हैं चाहे कृष्ण, ईसा हुए हैं चाहे मुहम्मद साहिब, चाहे राम, चाहे बुद्ध, किसी एक वर्ग-विशेष के लिए इनका अवतरण नहीं हुआ। वे आये तो कुल कायनात के लिए। इसी तरह हुजूर महाराज दर्शन दास जी भी सबके लिए आए। यह बात दूसरी है कि भारत की, खास तौर पर बटाला की धरती को यह गौरव हासिल है जिसने ऐसे सपूत को जन्म दिया जिसे दुनियां की रहनुमाई करनी है। क्योंकि यह लोग जन्म-मरण के बंधन से आजाद होते है कि :–

जनम मरण दुहहू महि नाही,
जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि,
"हरि सिउ लैनि मिलाए॥"

(गु.ग्रं.सा. पृष्ठ- 748-49)

इनका आना जाना लगा ही रहता है। यह लोग गए कहां हैं, यहीं हैं। आज नानक, गोबिंद, राम, कृष्ण कहाँ गए हैं? यहीं हैं। बस हमारे पास देखने वाली आँख नहीं है कि :–

"बुलेआ शहु तेथों क्ख नई,
सच आखां ते रैहदा कख नई,
पर तेरी वेखण वाली अख नई॥"

साध-संगत जी, चुम्बक के बिना लोहा इक्ट्ठा नहीं किया जा सकता, कभी भी छोटे छोटे टुकड़ों को खींच कर एकत्र नहीं किया जा सकता। यदि दर्शन दास यहां नहीं है तो आप किस आकर्षण से प्रभावित यहाँ बैठे हो? कौन सी ताकत है जो आप को बिठाए हुए है? वह है महाराज दर्शन दास जी और महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी में व्याप्त उनकी ज्योति। और उन्होंने दुनियां में एक ही आवाज दी एकता की, परस्पर बंधुत्व की, प्यार की, बलिदान की और जब भी कोई आवाज देगा सुधार की आवाज देगा। यदि गफलत की, अज्ञानता की नींद में सोये हुए को कोई उठाएगा तो उसे अच्छा तो लगेगा नहीं। आप अपने घर में ही देखो आपका बच्चा नींद में सोया है, स्कूल जाने का समय हो गया है, आप उसे उठाते हो तो उसे नींद से उठाया जाना कितना बुरा लगता वह माँ की बांह झटक भी देता है, नींद में गालियां भी निकाल देता है क्योंकि उसे नींद में मजा आ रहा है परन्तु क्या माँ उसे उठाना छोड़ देती है? नहीं, क्योंकि माँ बच्चे का हित चाहती है। संत-महात्मा भी तो हमारे मात-पिता हैं। हमारा जीवन तो हाथी जैसा है जिसका शरीर तो बड़ा है परन्तु आंखें छोटी छोटी हैं जिस कारण उसे अपने शरीर, अपनी ताकत के बारे में पता ही नहीं होता। तो यदि महाराज दर्शन दास जी ने महसूस किया कि अज्ञानता में लोग सोये हैं, दुनियां बारुद के ढेर पर टिकी है तो उसने हमें बांह पकड़ कर उठाया है, मां-बाप तो कभी गुस्सा नहीं करते, कोई जागा है या नहीं जागा, आज नहीं जागा तो 50 साल बाद, 100 साल बाद जागेगा। यदि दर्शन दास हमारा मात-पिता है तो वह जगाने से तो नहीं हटेगा, बांह पकड़ कर झंकोड़ने से तो नहीं हटेगा ना।

संत-महात्मा कीड़ों-मकौड़ों को तो कभी नहीं कहते क्योंकि वह तो अपने असूलों पर कायम हैं, उन्होंने तो इंसान को ही आवाज दी है कि ऐ इंसान तू इंसान बन जा। संत-महात्माओं का जन्म गुणी, ज्ञानी, भक्तों के लिए नहीं होता अपितु राह से भटके हुए लोगों के लिए होता है। जिन्हें मानवता के साथ प्यार भूल चुका है, आपस में मिल बैठना भूल गया है, वह तो सोये हुओं को जगाने आते हैं। यदि राम, कृष्ण, नानक, गोबिंद नींद से जगाना नहीं छोड़ते तो दर्शन दास कब छोड़ेगा क्योंकि यह उनका कार्य है। मशाल तो प्रकाश देती है, फूल तो महक देगा ही, कोई ले, न ले, वह अपना स्वभाव नहीं बदलते।

आज तो यह माहौल है कि घर परिवार में न बच्चे बड़ों का कहना मानते हैं न बड़े बच्चों की बात सुनते हैं। एक समय था कि नौ वर्षीय गोबिंद राय (गुरु गोबिंद सिंह) के इतना कहने पर, "आप से बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है?" नवम् पातशाह हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु अपना सीस बलिदान करने चल दिए। आप तो अपने बच्चों का तो क्या बड़ों का कहना नहीं मानते। पाठशालाओं में शिष्य गुरु का कहा नहीं मानते तो हम किस भारत की आशा किए बैठे हैं? देश है तो घर, धर्म, मजहब, कौम है, देश ही नहीं रहेगा तो क्या अंतरिक्ष में मकान बनाओगे, चंद्रमा पर चढ़ोगे? इस धरती मां का एहसान इस तरह नहीं उतर सकता। आपस में प्यार सत्कार बढ़ाओ, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत को तिलांजलि दे दो तो ही खुशहाली आ सकती है।

इस समय जो समारोह मनाने हम एकत्र हुए हैं वह है "दास धर्म" धर्म तो वही है, परन्तु साथ लगा दिया है दास। कई सोचते हैं कि पहले ही कई धर्म हैं तो महाराज जी ने यह नया धर्म क्यों बनाया?

दास वह है जो प्रभात समय उठता है, स्नान करके अपने गुरु मुर्शिद का दिया हुआ नाम जपता है, परिश्रम करके रोटी कमाता है और जो मिलता है उसमें संतुष्ट

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala

Tere Bhane Sarbat Da Bhala

With best compliments from :-

The VOGUE

Boutique

Exclusive Ladies Salwars & Suits Retailers and Wholesalers

17, Meena Bazar Pragati Maidan New Delhi.

Tel. : Showroom : 3312826, 3713305 Resi. : 652342

S.K. SHARMA

पवित्र पंथ बनाया है और सब छोटी-बड़ी जातियां एकत्र कर ली। तो गुरु जी ने फर्माया :–

"इन ही की कृपा के सजे हम हैं,
नही मो से गरीब करोर परे॥"

(ज्ञान प्रबोध पा. 10)

दास धर्म में महाराज दर्शन दास जी ने हर कौम, हर सूबे, हर बिरादरी, हर मजहब, हर दूर व नजदीक वाले, हर छोटे बड़े की जगह दी, अपने दरबार में, अपने चरणों में स्थान दिया, अपने गले से लगाया। दरबार में आए किसी भी इंसान को लौटाया नहीं अपितु यथा सम्भव आर्थिक सांसारिक व ईश्वरीय सहायता देकर उसे अपने गुलशन का, दास धर्म की फुलवाड़ी का एक हिस्सा बनाया, शोभायमान किया और आज आप उसी रूप में सजे बैठे हो। अब आता है दाम। इस नीति को महाराज जी ने थोड़ा सा परिवर्तन का रंग दे दिया। हमें पैसा देकर खरीदा नहीं, लालच देकर बिठाया नहीं बल्कि बहुत बड़ा दाम दिया, अपने खजाने में से पवित्र नाम दे दिया जिससे आत्मा का परमात्मा से मिलन हो सकता है. वह दान, वह कल्याणकारी नाम हमारी झोली में डाल दिया। रात दिन मेहनत मुशक्कत की, हम पर प्यार की वर्षा की, हमें अथाह प्रेम व अपना बलिदान देकर मुग्ध कर दिया मोह लिया, और हमें यहां बिठा लिया। हम उन के कर्जदार हैं, उनकी शहादत के, उनके गुणों व प्यार के, उनके सत्कार के जो हमें देकर चले गए। ऐसा दाम दे दिया जो शायद हमारी आने वाली पीढ़ियां भी नहीं चुका पाएंगी।

महाराज जी ने दण्ड दिया हमारे विकारों, हमारी बुरी आदतों को, हमारी गलत रीति-रिवाजों के खिलाफ आवाज भी उठाई। देश में पनप रहे नफरत के बीज, झूठ और बेइंसाफी से हार नहीं मानी, उनके खिलाफ डटे रहे, अपना सिर दे दिया परन्तु सिर न दिया। हऊमैं, अहंकार को दण्ड देकर धरती मां का लाडला सपूत अपने प्रेमियों को साथ लेकर, दाम देकर, बेइंसाफी व नफरत के बीजों को दण्ड देकर शारीरिक तौर पर चला गया।

अब आता है भेद। जिसे Divide & Rule भी कहा जाता है। वक्त के अनुसार इसे महाराज जी ने प्यार में तबदील किया। यहां कौन महसूस करता है कि वह हिन्दू है, सिक्ख है, मुस्लिम या ईसाई है? सब एकक पिता, ईश्वर की संतान हैं। कबीर साहिब कहते हैं :–

"अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे,
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥"

(प्रभाती कबीर जीओ पृष्ठ- 1349-50)

महाराज जी ने फूट डाल कर दिलों पर राज नहीं किया, किसी को छोटा बड़ा कह कर, किसी धर्म-मजहब को छोटा बड़ा बता कर अपने आप को नहीं उभारा, न ही उभारना चाहा, अपितु हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई को एक माला की तरह पिरोकर इक्ट्ठा किया और सबके दिलों पर अपना नाम लिख कर चले गए। दे गए, प्रेम और परस्पर बंधुत्व।

कहा जाता है कि आर्य लोगों ने पुरातन काल में समाज का वर्गीकरण किया, जो जैसा काम करता था उसे वैसा नाम दे दिया। जो लकड़ी का काम करता था उसे वढ़ई, जो निर्माण का काम करता था उसे राज, जो कपड़े सीता था उसे दर्जी कह दिया। वही वर्ग आज मजहब व कबीलों के नाम से जाने जाते हैं। महाराज जी गुरवाणी में फर्मान करते हैं।

"जाति जनमु न बूझिअै सचु करि लेहु बताए,
सा जाति सा पाति है जेहा करमि कमाए॥"

कि जैसा कर्म जीव करता है वही उसकी जाति है। महाराज जी ने किसी को हिन्दु-सिक्ख-मुस्लिम-ईसाई कह कर याद नहीं किया, ईश्वर के बंदे कहा।

सबसे पहले धर्म की बात की गई है क्योंकि धर्म के बिना हम खड़े नहीं हो सकते, जी नहीं सकते, धर्म के बिना परिवार का रिश्ता कायम नहीं रह सकता, परस्पर प्रेमभाव नहीं रह सकता। धर्म को ताकत देने की जरूरत है जैसे पुरातन समय के नीति निर्धारकों ने धर्म से पहले हिन्दु-सिक्ख-मुस्लिम-ईसाई लगाया, रीति-रिवाज, संस्कार बनाए। कुछ असूल बनाने वालों ने ईश्वर को माना, कईयों ने नहीं माना। कईयों ने धर्म में या मजहब में मनुष्य को बराबरी दी गई तो कईयों में नहीं। कुछेक इतने कठोर थे कि उनके नियम या ग्रंथों की मूल भाषा थी, छोटे छोटे हिस्सों में बँट कर रह गई और साधारण जीव की समझ से परे ही रही। उनके बाद आने वाले रहनुमाओं ने लोगों को धर्म की राह से बिखरे देखा, उनकी तकलीफों को महसूस किया और उन्हें पुनः धर्म की राह पर चलाना चाहा।

पुरातन इतिहास का पुनर्वलोकन किया जाए तो पता चलता है कि हिन्दु धर्म के वेद-पुराण-शास्त्र स्मृतियां संस्कृत में हैं। अब इन्हें तो कोई संस्कृत का ज्ञाता ही पढ़ कर समझ सकता है, उन पर चल सकता है। मुस्लिम साहित्य अरबी फारसी में है। अब किसी को यह भाषा आए तो उसे पढ़ कर उस पर चले। इसी का परिणाम था कि अट्ठारह-बीस भाषाओं का मिश्रण करके गुरु ग्रंथ साहिब की रचना की गई मानवता को धर्म की राह पर चलाने हेतु एक आसान सा मार्ग दिया। अब सिक्ख धर्म को ही ले लें, इनके अपने असूल हैं, नाम जपना, ईश्वर को मानना इत्यादि। महाराज गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं :–

"रहित पिआरी है मुझ कउ सिख पिआरा नाहि॥"

कि अपनी कुछ रहतों का नाम उन्होंने सिक्खी रख दिया। पहली पातशाही से लेकर नौवीं पातशाही है जो भी नौं गुरुओं ने हमें पैगाम दिया उसे मानने वाले सिक्ख कहलाए और सिक्खी में बंध गए। यह बात और है कि यह शब्द "सिक्ख" गुरु नानक साहिब से पहले भक्त कबीर जी के समय में प्रचलित था। वाणी भी इसे प्रमाणित करती है।

"सुणि परतापु कबीर का, दूजा सिख होआ सैभु नाई॥

(वार- 10, पउडी- 16)

सिक्ख अर्थात् शिष्य, जो गुरु की पुरजनों की शिक्षा पर चले। इसी शब्द को

निर्भीक थे कि गुलामी के आगे कभी सिर न झुकाया, झूठ के आगे कभी नहीं झुके। उस महापुरुष, उस शूरवीर ने, उस महान योद्धा ने कभी भी समाज की कुरीतियों के समक्ष टने नहीं टेके। अपने आप को बलि वेदी र रख दिया परन्तु झुके नहीं।

आज चाहे महाराज जी के विचार मारी समझ से परे हों, या हम उन पर न चल पाते हों परन्तु एक समय आएगा जब महाराज़ जी को दुनियां में एक महान समाज सुधारक, ओर अज्ञानता के अंधेरे में डूबे हुए लोगों में प्रकाश स्तम्भ के नाम से भी याद किया जायेगा। महाराज जी की कही हुई प्रत्येक बात मील-पत्थर साबित होगी दुनियां की उन्नति के लिए यह हमारा अटूट विश्वास है। अध्यात्मिक पुरुष, महाबली योद्धा तो महाराज जी हैं ही उसके साथ ही साथ दुनियां को मानवता, मानवता के हृदय में सो रहे अध्यात्म को आपने जागृत किया। यह नहीं कि उन्होंने अध्यात्म को मन या अहं (हऊमै) के इर्द गिर्द घुमाया बल्कि उसे ईश्वर के साथ. ईश्वर के भरोसे के साथ जोड़ा और दुनियां की चलती हुई आंधी में एक सुखद रास्ता हमें दिया।

साध-संगत जी दुनियां में धर्म कभी नहीं बदलता। धर्म एक था, एक है और एक रहेगा। हां उसे समझने के लिए अलग अलग अर्थ अवश्य निकालने पड़ते हैं। जैसे धुरे के बिना साईकल का पहिया नहीं चल सकता उसी प्रकार धर्म के बिना दुनियां नहीं चल सकती। धर्म वह धुरा है जिसके इर्द-गिर्द समाज, कबीले, मजहब, रीति-रिवाज व संस्कृति व दुनियां को घूमना है। धर्म एक आधार है। जिस प्रकार कोई इमारत बिना नींव के नहीं बनाई जा सकती उसी प्रकार हमारे जीवन का महल धर्म की नींव के बिना नहीं बन सकता। गीतोपदेश में श्री कृष्ण फर्मान करते हैं, "हे अर्जुन धर्म वह आस्था है जिसके सहारे दुनियां टिकी है धर्म ईश्वर में जीव की आस्था है।" धर्म है ईश्वर को जानना। धर्म मानव जीवन की अंतिम सच्चाई है। धर्म है ईश्वर में लीन हो जाना, एक जुट हो जाना। धर्म एक वादा है, बहन का भाई के प्रति, भाई का बहन के प्रति, माँ बाप का बच्चों के प्रति, बच्चों का माँ बाप के प्रति, मुरीद का मुर्शिद के प्रति, मुर्शिद का मुरीद के प्रति और इस वादे की गांठ विशुद्ध अध्यात्मिक, भरोसे विश्वास और ईश्वर के रंग में रंगी है। धर्म है नाम सुमिरन। गुरु वाणी में हुजूर साहिब फर्मान करते हैं :–

"सगल धरमु महि स्रेषठ धरम
हरि को नामु जपु निरमलु करम।"

कि दुनियां में सर्वप्रथम व श्रेष्ठ धर्म है ईश्वर का नाम जपना और यह भी कहा गया है "अहिंसा परमः धर्मा" अहिंसा, हर जीव, प्राणी मात्र के लिये, दया भावना अपने हृदय में रखना यह भी एक धर्म है क्योंकि दया ही धर्म का आधार है, मूल है। तुलसीदास जी का फर्मान है :–

"दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान,
तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्राण।"

जपुजी साहिब में श्री गुरु नानक साहब फर्मान करते हैं :–

"धौल धरमु, दइआ का पूतु,
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।"
(जपुजी साहिब)

कि धर्म दया का पुत्र है। धर्मी आदमी कभी भी किसी पर आक्रमण नहीं करता, दो धर्मी कभी आपस में नहीं लड़ते कभी आपस में टकराव नहीं रखते क्योंकि धर्म प्यार है, परस्पर मिल बैठना है। धर्म एकता है। अब धर्म के साथ अनेकों नाम लगे हुए हैं जैसे हिन्दु, सिख, ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध। तो महाराज जी ने धर्म के साथ यह दास शब्द क्यों लगाया। जब से दुनियां बनी है समाज का स्वरुप दिन-ब-दिन निखरा है, निखर कर सामने आया है। समयानुसार समाज सुधारकों ने दुनियां को चलाने के लिए नीति-निर्धारण की है, कुछ नियम बनाए। जिन्होंने यह नियम बनाए वे रहनुमा कहलाए और नियमों पर चलने वाले अनुयाई। कहते हैं कि किसी परिवार, संस्था, देश को चलाने के लिए जब तक नीति का निर्धारण नहीं होता, नियम नहीं बनते तब तक संचालन नहीं हो सकता। धर्म अंकुश है और नीति जो राज सिंहासन को चलाती है वह शक्ति है, एक ताकत है। नीति के बिना धर्म निर्बल है, उसकी शक्ति ही नीति है, नियम व विनियम ही नीति हैं। यदि यह नियम धर्म में नहीं होंगे तो धर्म केवल संसार के रस्मों रिवाज, संस्कारों, छोटीमोटी अवस्थाओं में उलझ कर रह जायेगा। और उसे वह शक्ति नहीं मिलेगी, पावर नहीं मिलेगी, खेत को संभालने के लिए बाड़ नहीं मिलेगी। यदि राजनीति में से धर्म निकाल दिया जाए तो वह जुल्म व तशद्दुद का रूप धारण कर लेगी। यह ठीक है लोग कहते हैं कि राजनीतिज्ञ को धार्मिक काम नहीं करना चाहिए व धार्मिक आदमी को राजनीति में नहीं आना चाहिए परन्तु गुरु गोबिंद सिंह जी का फर्मान है :–

"राज बिना नहीं धरमु चलै है,
धरम बिना सभु दले मलै है।।"

कि राज्य के बिना धर्म नहीं चल सकता। तब तक धर्म नहीं चल सकता जब तक नियम बना कर एक ताकत नहीं बनाई जाती, समयानुसार देश की भलाई के लिए, धर्म की भलाई के लिए मिल बैठ कर कोई फैसला नहीं किया जाता, कोई राह नहीं बनाई जाती। पुरातन समय में बादशाह लोग किसी धार्मिक गुरु की शरण में, उसकी आज्ञा लेकर देश का कामकाज चलाते थे, अनेक मिसालें इतिहास के पन्नों पर हमें मिलती हैं। धर्म को स्थिर रखने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद का भी प्रयोग किया गया। साम का अर्थ–शरण में लेकर, दाम–पैसा देकर, लालच दे कर खरीदना या अपने साथ जोड़ना, दण्ड–उनके जुल्मों के लिए सजा देकर, उन्हें पराजित करके अपने साथ जोड़ना, भेद–कि फूट डालो राज करो (Divide & Rule), पुरातन समय में यह भी धर्म की चार नीतियां रही हैं। महाराज दर्शन दास जी ने इसे और सुदृढ़ किया, नया नया आयाम दिया, दास धर्म में प्रत्येक जीव को आने का मौका दिया कि :–

"सरणि आवै तिसु कंठि लावै।।"

कहते हैं कि जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की तो पंडित पुरोहितों ने कहा कि आपने इतना ऊंचा व

हम राष्ट्र की आत्मा के प्रति अपील करना चाहते हैं तो हमें अतीत के इस स्रोत का आकण्ठ पान करना होगा और तब भविष्य का निर्माण करने आगे बढ़ना होगा। हमें अतीत से प्राप्त हुई विरासत वस्तुतः एक धार्मिक विरासत है। अतएव भारत की मूलभूत समस्या है-सारे देश को आध्यात्मिक आदर्श के इर्द गिर्द संगठित करना। राष्ट्र अपने व्यक्तिगत घटको के चरित्र और गुणों पर खड़ा रहता है। अतः इस बात पर जोर दिया जाये कि जो भी समूचे राष्ट्र का कल्याण चाहता है उसे वह चाहे जिस क्षेत्र का व्यक्ति हो अपने चरित्र निर्माण का प्रयत्न करना चाहिए। और त्याग व सेवा का मार्ग अपनाना चाहिये।

महाराज दर्शन दास में सभी गुण पाये जाते हैं। प्रायः हमारे पास कुछ भी नहीं होता और हम एकदूसरे के धर्मों की या महापुरुषों की बुराई निन्दा चुगली करते हैं। परन्तु महाराज कभी किसी धर्म व पीर पैगम्बर की निन्दा चुगली नहीं करते यही महापुरुष की पहचान है। वे अतीत की रचना को ही अपना उपदेश बनाते हैं और इसी लिये उन्नति करते हैं। और विश्व में अपना उपदेश और संदेश छोड़ जाते हैं।

गुरु नानक साहिब कलयुग के मालिक हैं। त्रेता के वाली श्री राम और द्वापर के श्री कृष्ण। गुरु नानक जी आये और कलयुग का उद्धार कर चले गये। अब कलयुग कला का चल रहा है। महाराज जी ने हम सभी को एक शस्त्र दिया "नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत दा भला" नम्रता का नारा है जो सचखण्ड नानक धाम का मधुर प्रणाम है। इस नारे के सामने जो भी चीज आयेगी, निरंकार के सामने झुक जायेगी।

सचखण्ड नानक धाम से जो नाम मिला वह एक मोहर है और इसी प्रथा को आगे कायम रखने के लिये महाराज दर्शन दास जी के पश्चात सचखण्ड नानक धाम की द्वितीय कर्णधार महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी आये हैं। महाराज दर्शन दास जी ने समय-समय पर जो भी कहा वह उसी तरह पूरा हुआ और आगे भी होगा और हो भी रहा है। हम तो एकमात्र कठपुतली हैं। परन्तु कर्तव्य करना हमारा फर्ज है ऐसा काम करे जो हमारा धर्म बन जाये। जैसा कि पहले कहा है धर्म है किसी की खिदमतगारी। इस सदमार्ग पर चलाने वाले तत्त्व हैं जो इस मार्ग की पौष्टिक खुराक हैं वह हैं सच सरबत का भला, साध संगत सिदक और शाहदत। यह बाहरी ढांचा है और इसकी आत्मा है नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला। यह नारा वक्त की आवाज है।

दास धर्म ने या अनुयाईयों ने जो भी पिछले वर्षों में उन्नति की वह आपके सामने है। आपको इस वार्षिक समारोह की बधाई देते हुए यह आशा करते हैं कि महाराज जी द्वारा दर्शाये गये मार्ग पर दृढ़ता के साथ चलेंगे।

नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

दास मान सिंह जी के बाद दिल्ली के गद्दीनशीन संत बाबा घसीटा राम जी ने संगत को संबोधित किया।

साध संगत जी,

"दीन दुनियां दोनो बद्धे, अंदर जुल्फ प्यारे

रोमरोम मुर्शिद दे उत्तों मैं जावां बलिहारे।"

हमारे वालिद महाराज दर्शन दास जी, उनके बाद हमारे रहनुमां महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी, महाराज जी द्वारा सजाए गए समूह बाबा जी, महाराज जी द्वारा प्रस्थापित सेवा समितियाँ तथा महाराज जी के प्यार में आनन्द विभोर हो रही साध-संगत जी,

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

रात के अंधेरे में आकाश पर अनगिनत सितारे टिमटिमाते हैं परन्तु कुछ सितारों की रोशनी राहगीरों को राह बतलाती है। इस जगत में अनेकानेक जीव ईश्वर की मर्जी के साथ जन्म लेते हैं दैनिक दिन चर्या में रहते हुए अपनी जीवन लीला पूरी कर के अपना सफर पूरा करते हैं। दुनियां में हमें कुछ ऐसे भी महापुरुष मिलते हैं जो न केवल अपने परिवार अपने रिश्तेदारों, अपने घर का ख्याल करते हैं अपितु दुनियां की रहनुमाई का दायित्व अपने कंधों पर लेते हैं। अंधेरे में राहगीरों को रोशनी दिखाने वाला वह प्रकाश स्तम्भ महाराज दर्शन दास जिन्होंने दास धर्म की स्थापना की जो दुनियां में अपनी रफ्तार से चल रहा है जो कभी मिट नहीं सकता। दास से पहले अनेक वक्ताओं ने दास धर्म के प्रति अपने विचार रखे।

साध संगत जी, जैसे शहद के छत्तों के हर सुराख में मिठास होती है गुलाब की हर पत्ती में खुश्बू व रंगत होती है उसी प्रकार महाराज जी की उपमा, महाराज जी की बातें व उनकी वडियाई ब्यान क्या करें, उनकी तो हरेक बात उपमा वडियाई के साथ भरी है। ऐसी उपमा, शोभा का भंडार, भारत का ही नहीं, दुनियां का शहीद है, शहीद-ए-आजम है, वह महापुरुष महाराज दर्शन दास हमें दास धर्म दे गया जिसकी ग्यारहवीं वर्षगांठ हम मना रहे हैं। जो स्वयं इतना महान है उसके बताये हुए विचार, चलाया हुआ धर्म महान क्यों न होगा। कबीर साहिब कहते हैं :-

जननी जने तो भक्त जन या दाता या सूर

नहीं तो नारी बांझ रहे काहे गवावै नूर।

अब आइए, इस बात पर विचार करें कि "जननी जने तो भक्त जन" महाराज दर्शन दास जी बहुत बड़े भक्ति के भंडार हुए हैं उनकी रहमत के साथ अनेक भक्तों ने जन्म लिया। भक्ति की माला में पिरोये हुए दुनियां के डर से आजाद होकर, भय से गति प्राप्त करके हम आज यहां उसी रहनुमा की बदौलत बैठे हैं। अब है "या दाता" तो दुनियां जानती है कि महाराज दर्शन दास जी इतने बड़े दानी हुए हैं जिन्होंने अपने खजाने में से दुनियां को नामदान तो दिया ही, अपने जीवन का सुख, आराम, अपने बच्चों से बढ़कर प्यारे दुलारे अपने भक्त भी देश की एकता व अखण्डता के लिए दान कर दिए और यहां तक कि अपना आप भी दान के पलड़े में रख दिया। "या दाता या सूर" वे इतने

आज के दिन की महानता हमारे मिशन में बहुत अधिक है क्योंकि महाराज दर्शन दास जी ने आज ही के दिन आज से दस वर्ष पहले 16 फरवरी 1980 के दिन, जब सूर्य ग्रहण लगा था, उसी दिन महाराज जी ने हम लोगों को वहम-भ्रमों से ऊपर उठाने के लिए दास धर्म की स्थापना की और हमें सच्चाई और आपसी भाई चारे का संदेश दिया, हिंसा को छोड़ प्यार और सच्चाई का मार्ग अपनाने का संदेश दिया।

महाराज जी कहा करते थे कि दूसरों के लिए जीना ही असल में जीना है, अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। दास धर्म के मानने वालों के लिए पांच उसूलों पर चलना जरूरी है--सच बोलना, साध-संगत करना, सिदक संतोष रखना, सरबत्त का भला मांगना व शहादत देना (विकारों की)। शहादत से उनका अर्थ विकारों से था। महाराज जी कहा करते थे, "आप अपने गुनाहों से तौबा कर लो परमात्मा आपको क्षमा कर देगा।

महाराज जी कहा करते थे दास धर्म रंगबिरंगे फूलों का चमन होगा न कि एक रंग के फूलों का और इस का उजाला सूर्य की भांति सारी दुनियां में रौशन होगा। साध संगत जी, महाराज जी ने सचखण्ड नामक धाम व दास धर्म के लिए जितना भी काम किया वह सब आपके सहयोग से हुआ हम भी आपसे सहयोग की आशा करते हैं और महाराज दर्शन दास जी के चरणों में आप सब की उन्नति के लिए प्रार्थना करते हैं। हम हर समय आपकी सेवा के लिए हाजिर हैं।

नानक नाम चढ़दी कला--तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

तदोपरांत साध-संगत ने गद्दी पर नमस्कार किया और शाम 7 बजे दर्शन दरबार, न्यू महावीर नगर में हुजूर महाराज दर्शन दास जी की महान परम्परा को कायम रखते हुए महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी ने जिज्ञासु जीवों को नाम दान दिया और फिर सारी रात का गीत गजलों का मुशायरा भी हुआ।

(दास धरम)

ਸਹਿਜ ਸੁਖ ਸਨੇਂਦੜੇ ਸਤਿਗੁਰ

ਸੱਚ, ਸੰਤੋਖ, ਦਇਆ ਨਾਮ,

ਚਹੁੰ ਧਰਮਾਂ ਦੇ ਸਾਈ।

ਇਕੋ ਵਰਨ, ਇਕੋ ਧਰਮ,

ਇਕੋ ਕਰਮ ਗੋਂਸਾਈ, ਤੂੰ ਹਰਿ, ਹਰ ਥਾਂਈ ॥

ਸਿਰਜਨਹਾਰ ਸੱਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ,

ਸੱਚ ਤਪਸਿਆ ਸੱਚ ਚੰਦਰਮਾਏ

ਦਿਸੇ ਨਾਹੀ ਦਿਸਾਏ ॥

ਸਿਦਕ ਭਿਓ ਹਰਿ ਅਰਜਨ ਕੋ,

ਸ਼ਹਾਦਤ ਸਿਰ ਦੀਜੇ ॥

ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ, ਪਿਤਾ ਗੋਬਿੰਦ ਰਾਇ।

ਜਿਨੀ ਦੀਓ, ਪੰਥ ਖਾਲਸਾਇ ॥

ਸੱਚ, ਸਿਦਕ, ਸਰਬੱਤ, ਸਾਧ ਸੰਗਤ,

ਸ਼ਹਾਦਤ ਸਿੰਘ, ਜੋ ਬਣ ਜਾਏ।

ਭੂਲ ਗਿਓ ਵਚਨ, ਗੁਰੂਵਨ ਕੇ,

ਦੀਓ ਫਿਰ ਸਮਝਾਏ।

ਦਾਸ ਧਰਮ ਚਲਿਓ, ਫਿਰ ਕਲਿ ਮਾਹੇ,

ਜਿਸ ਦੇ ਸਾਂਈ, ਦਰਸ਼ਨ ਅਗਮ ਗੋਸਾਂਈ।

ਜਿਥੇ ਜਾਈ, ਤਿਥੈ ਸਭਨੀ ਥਾਈ,

ਤੇਰੇ ਸਾਂਈ, ਅਗਮ ਗੋਸਾਈ ॥

"ਯਕੀਨ"

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :-

Phone : 7122772

STAR ELECTRONICS

B-1251 Jahangir Puri, Delhi-33

Deals in :

Crown, Murphy, Telly Weston TVs, VCP & VCRS.
Refrigerator : Godrej, Kelvinator
Two-in-one, Fans & Coolers, Washing Machines etc.

on Cash and Easy Instalments

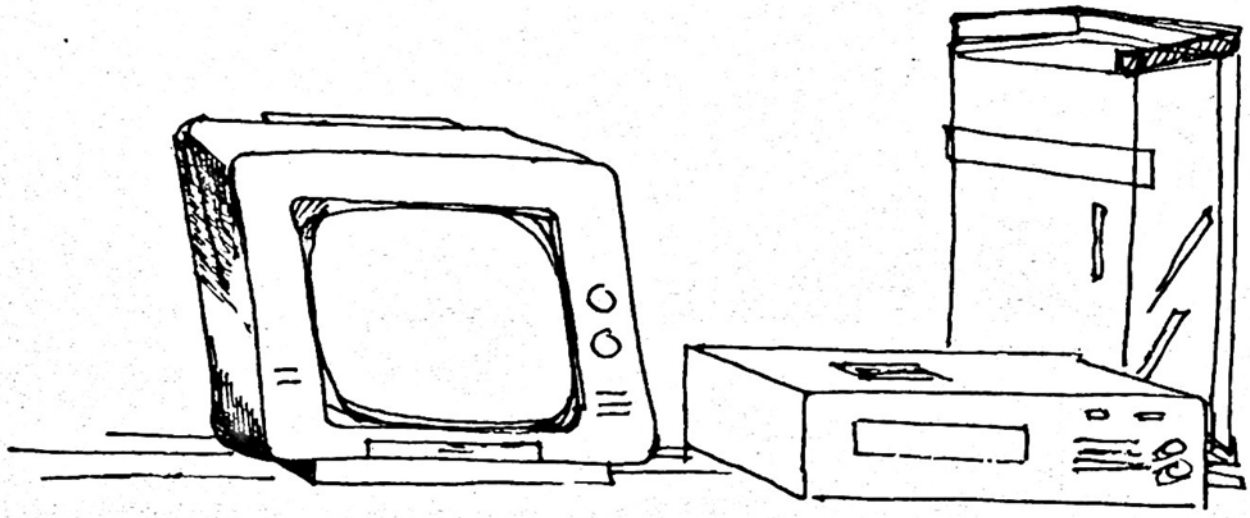

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala Tere Bhane Sarbat Da Bhala

With best compliments from :-

Tel. : 5417516

SONY LIGHTS

Manufacturers of Zero Watt to 200 Watt Bulbs.
A-28, Phase II, Mayapuri Industrial Area,
New Delhi.

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala **Tere Bhane Sarbat Da Bhala**

With Best Compliments from:

NANAK GRAPHICS Tel. : 531274

Designing, Processing, Planning and Printing.

WH-16, Ist Floor, Phase-I,
Mayapuri Ind. Area, New Delhi-64.

DHAN DARSHAN

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त दा भला

BONE SPECIALIST

कुलबीर सिंह पुत्र स. अवतार सिंह

पुरानी सब्जी मंडी वाले,

सर्दियों में

सुबह 8 बजे से 11 बजे तक
शाम 3 बजे से 4½ बजे तक

गर्मियों में

सुबह 7 बजे से 10½ बजे तक
शाम 3.30 बजे से 5 बजे तक

इतवार 8 बजे से 10 बजे तक

यहाँ पर टूटी हड्डियों तथा उतरे हुए जोड़ों का इलाज
तसल्लीबख्श
किया जाता है।

टी-९, मल्कागंज रोड, लाल साई मन्दिर के सामने

पुरानी सब्जी मंडी दिल्ली-७

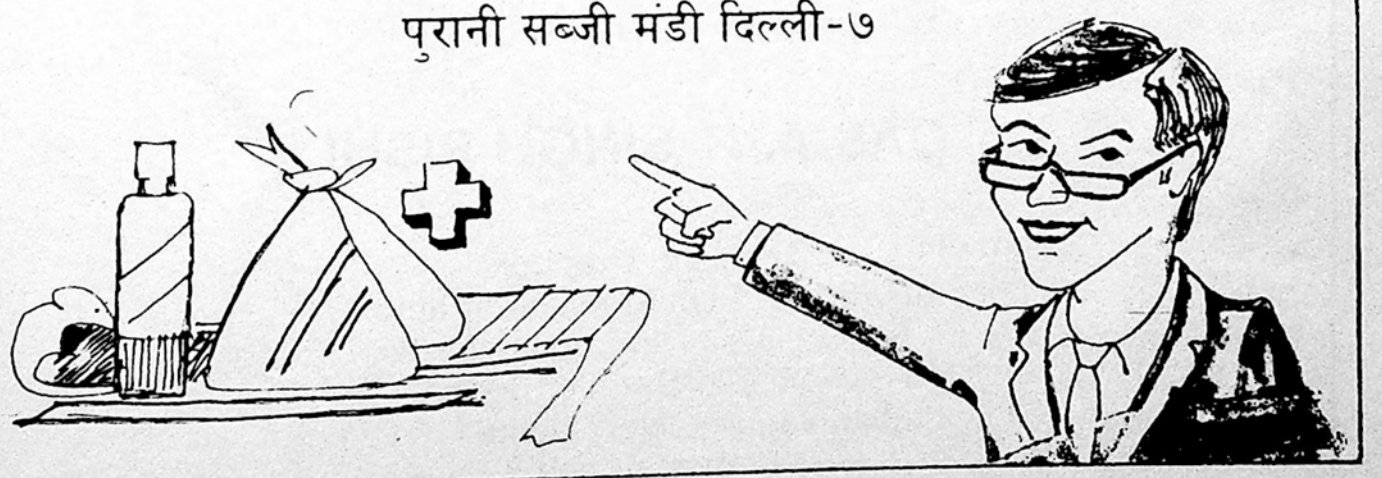

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala Tere Bhane Sarbat Da Bhala

With Best Compliments From:

MANOJ PLASTIC INDUSTRIES

SPL. AUTO GLASS IND. ACCESSORIES

E-206, SHASTRI NAGAR, DELHI-110052

Tel. :- 773215

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

DAS AJIT SINGH RISHI

Tailors & Drappers
Government Uniforms Contractors
Spl. in: Das Dharam Uniforms
1/18, Old Double Storey
Lajpat Nagar-4, New Delhi-110 024
Phone: 6410163

युवा सम्मेलन

14 मई का दिन सचखण्ड नानक धाम के इतिहास में अब एतिहासिक दिन है। इस दिन को अब दो कारणों से बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। पहला-यह दिन दास-धर्म की युवा शाखा का स्थापना दिवस व दूसरा–सचखण्ड नानक धाम के वर्तमान संचालक महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी का ज्योति दिवस। ज्ञात रहे कि महाराज दर्शन दास जी की हत्या के पश्चात् महाराज जी के बड़े सुपुत्र महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी को सभी की सहमति से सचखण्ड नानक धाम का द्वितीय गद्दी नशीन नियुक्त किया गया था।

इस वर्ष यह दिन "युवा सम्मेलन" के नाम से मावालंकार हाल, रफी मार्ग, दिल्ली में मनाया गया। इस समारोह में सचखण्ड नानक धाम व इसकी क्षेत्रीय समितियों के अलावा, हरिजन सेवक समाज, स्पिरिंग डेल्स स्कूल-सुदर्शन पार्क व एम. सी. डी. स्कूल-शास्त्री नगर-दिल्ली ने भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम शुरू होने से पहले सभी को लंगर परोसा गया। हाल दर्शकों से खचा-खच भरा हुआ था।

महाराज जी द्वारा समारोह का उद्घाटन किया गया तद् उपरान्त महाराज जी ने ज्योति प्रचंड की। समारोह की शुरूआत महाराज दर्शन-दास जी द्वारा रचित वाणी के कीर्तन से किया गया। कार्यक्रम के बीच-बीच में हास्य–विनोद का भी क्रम चलता रहा। देश–भक्ति के गीत भी गाये गये। दास अविन्दर ने महाराज जी द्वारा रचित गीत गा कर महाराज की फिर याद दिलाई। स्पिरिंग डेल्स स्कूल के बच्चों ने कव्वाली व गिद्दा के कार्यक्रम द्वारा सभी का मन मोह लिया। छोटे–छोटे प्यारे बच्चे गिद्दा डालते हुए चमकते तारों की भांति लगते थे।

महाराज जी ने समाज की गरीब औरतों को जीविका कमाने के लिए सिलाई मशीने दान की। एम. सी. डी. स्कूल शास्त्री नगर के 31 छात्रों को स्कूल की वर्दी व कापियां, पेन दान में दिये गये। हरिजन सेवक समाज के स्कूल के 51 छात्रों को चादरें दान में दी गई। इस संस्था की मुखिया निर्मला देश पाण्डे जी है जो दिल्ली के बाहर होने के कारण समारोह में हिस्सा नहीं ले सकी। वक्ताओं ने महाराज दर्शन दास जी एवम् संस्था के कार्यों की सराहना की।

कार्यक्रम और भी मनोरंजक हुआ जब संत बाबा घसीटा राम जी ने खुद स्टेज सम्भाला और लगातार डेढ़ घण्टे तक अपने गीत बोलते रहे। इससे भी अधिक मनोरंजक घटना तब घटी जब महाराज जी भी गीतों की डायरी ले कर स्टेज पर पहुंचे ओर महाराज दर्शन दास जी द्वारा रचित गीतों को अपनी मधुर आवाज से गुंजाया। इस के अलावा युवा शाखा के सदस्यों ने कई धार्मिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम के अंत में महाराज जी व बाबा जी ने अपने-अपने भाषणों से सभी को देश व मिशन के प्रति सन्देश दिया। इस शुभ अवसर पर सभी को लड्डूओं का प्रसाद दिया गया।

महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी 14 मई को कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए।

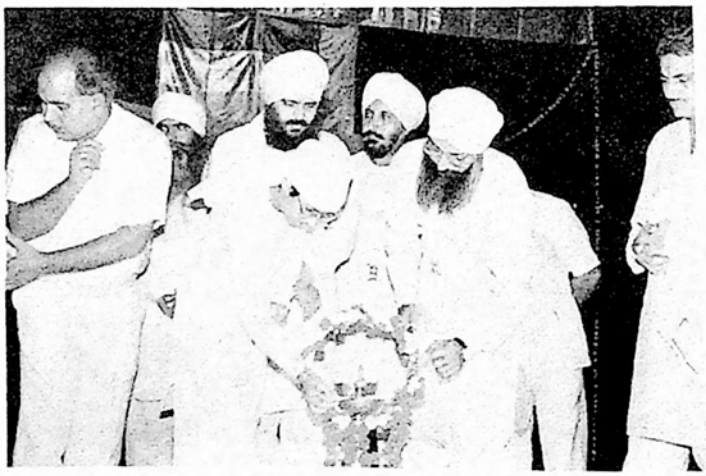

महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी 14 मई को मावालंकार हाल में ज्योति प्रचंड करते हुए।

दर्शन स्नेहे

मेरा दाता कहता है, "जब तुम सब लोग अपने वास्तविक घर की ओर वापस चल पड़ोगे तो मेरे घर के द्वार तुम्हारे लिये अपने आप खुल जायेगे।

संत सदैव जीव के आत्मा स्वरूप दीये को जलाने आते है न कि बुझाने।

स्पिरिंग डेल्स स्कूल के बच्चे 14 मई को कव्वाली गाते हुए।

मावालंकार हाल में गिद्दा डालते हए स्कूल के बच्चे।

बच्चो को कापियाँ स्कूल वर्दी वितरण के पश्चात —बच्चो के बीच संत बाबा घसीटा राम जी, महाराज तिरलोचन दर्शनदास जी और बाबा बलवन्त सिंहजी

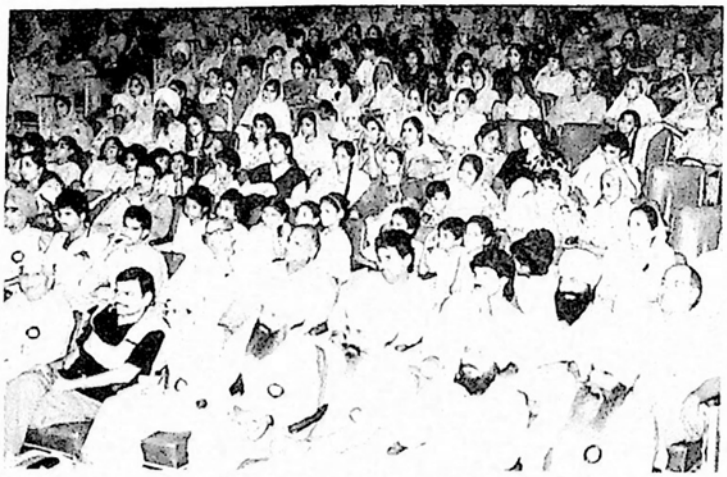

संगत समूह का एक दृश्य

ਧੰਨ ਦਰਸ਼ਨ

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚੜ੍ਹਦੀ ਕਲਾ ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਸਰਬਤ ਦਾ ਭਲਾ

ਦ ਦਾਤੇ ਕੀ ਦਰਗਾਹ ਕੀ ਚਾਹਵਾਨ

ਾ ਆਸ਼ਾ ਕੇ ਆਂਗਨ ਮੇ ਰਵਿ ਚੰਦ ਕੀ ਜੋਤਿ ਜਗਾਏ ਹੁਏ

ਸ ਸਬਰ ਸਿਦਕ ਸੰਤੋਖ ਕੇ ਸਾਥ

ਧ ਧਸਨੇ, ਬਸਨੇ, ਰਸਨੇ ਵਾਲੀ ਜੀਵ ਆਤਮਾ

ਰ ਰੋਮ ਰੋਮ ਸੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦਿਵਯ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਮੇ ਲੀਨ ਹੋਤੇ ਹੁਏ

ਮ ਮਾਇਆ ਸੇ ਰਹਿਤ ਹੋਕਰ ਇਕ ਜੋਤਿ ਹੋਨੇ ਕੀ ਲਗਨ ਮੇ ਮਗਨ

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

MAGMA PLASTICS

MANUFACTURERS OF :
BUTTONS, CROCKERY & BUTTON MAKING MACHINERY

PHONE : 82-41727

Plot No. 27, Sector 6,
FARIDABAD-121006
Haryana (India)

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA,
TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

M/s KAMPA INDUSTRIES

A-89, Sanjay Gandhi Memorial Nagar Faridabad

All kinds of heavy jobs for Lathe
Capacity for 20 feet long.

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

H.K. ENGINEERING WORKS

Specialist in :

ALL KINDS OF MECHANICAL JOBS
FABRICATION AND WELDING WORKS
5G-39 C
N.I.T. FARIDABAD

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

M/s VISHKARMA ENTERPRISES

B-42 NEHRU GROUND FARIDABAD

GENERATOR SALE AND PURCHASE OF OLD AND
NEW GENERATOR

ALSO AVAILABLE GENERATOR ON HIRE PURPOSE
ALL SIZE

PROP MOHINDER SINGH

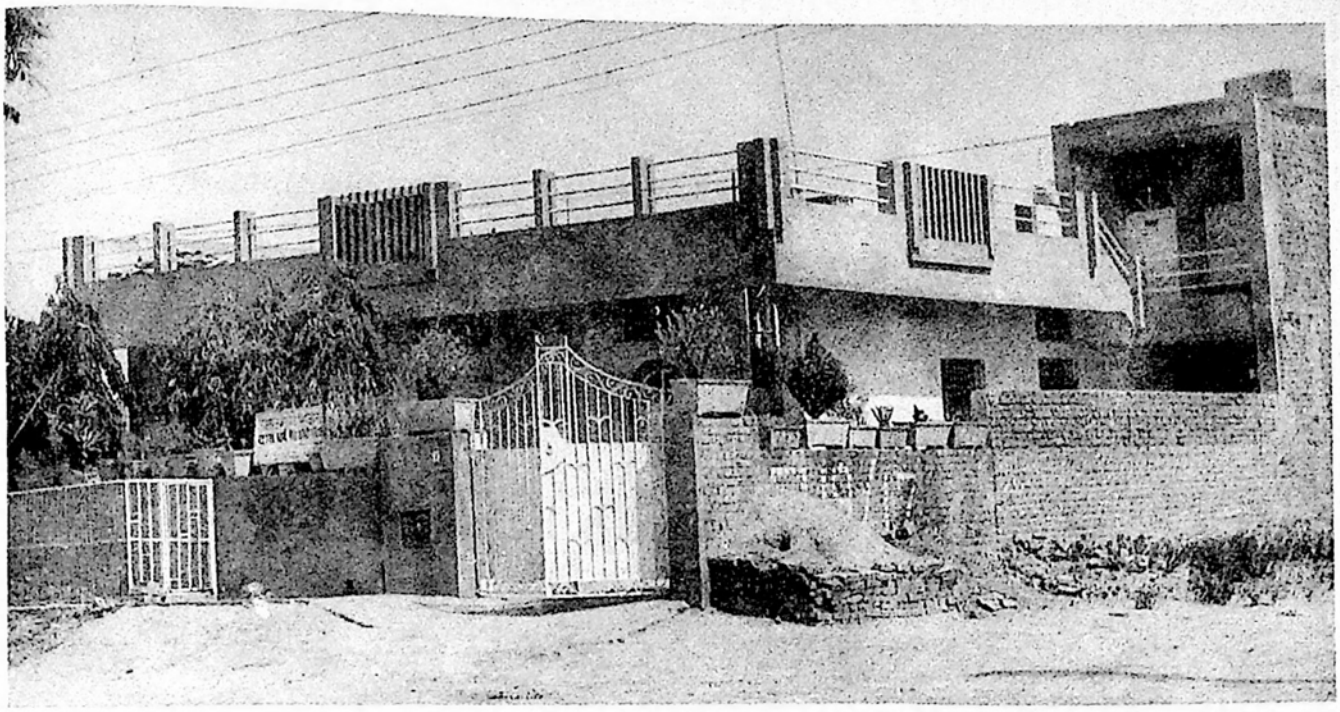

दर्शन दरबार, फरीदाबाद का एक दृश्य.

फरीदाबाद की दास धर्म सेवा समिति

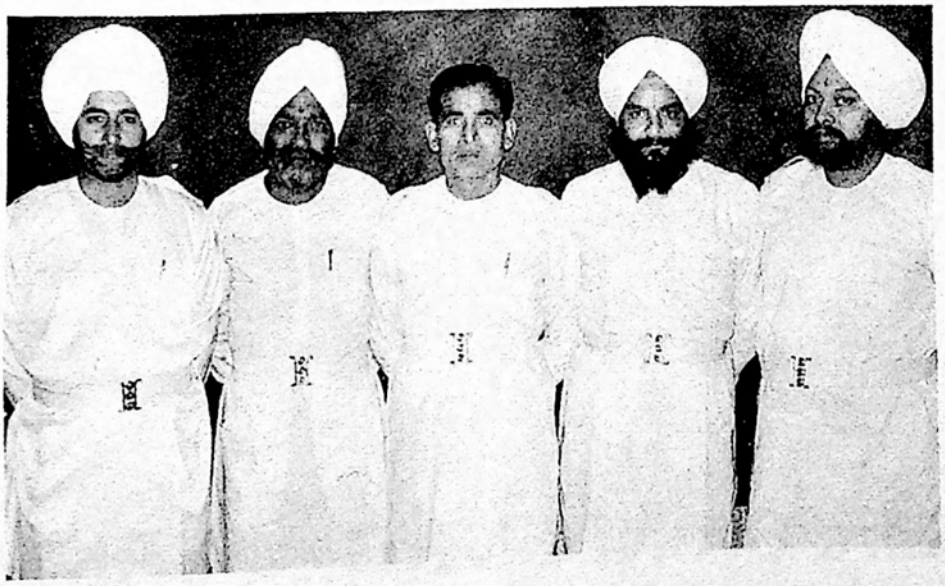

बाये से : दास महेन्द्र सिंह (सदस्य), त्रिलोक सिंह (प्रधान) सुभाष चन्द्र (सचिव), इकबाल सिंह (सह-सचिव) महेन्द्र सिंह (उप प्रधान)

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

S. AKWAL SINGH Phone : 651922

AMIGO BATTERIES

SERVICE STATION

EXIDE AMCO

ROYAL INDUSTRIAL ESTATE SHOP NO. 5, DAHISAR CHECK NAKA
P.O. MIRA DISTT. THANE 401104

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

M/s SAINI ENGG. WORKS

Shop No. 7 Mkt. No. 3
NIT FARIDABAD

फरीदाबाद में 15 अगस्त का कार्यक्रम बड़ी धूम धाम से मनाया गया।

महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी संगत को सम्बोधित करते हुए।

संगत समूह का एक दृश्य।

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Castrol

I P

Phone Office : 21139
20954
Resi. : 22720

G.D. SIDHU OIL TRADERS

Distributors :

IBP Co. Ltd., Castral India Ltd. & The Wax Pole Industries Ltd.
Jail Road Gurgaon.

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

MARUTI

With best compliments from :

Rajinder Kumar Kanda

Ph. : 531569

KANDA MOTOR'S & TRAVELS

Sale & Purchase of New & Old

MARUTI CAR, VAN, FIAT SCOOTER & MOTOR CYCLES
On Commission Basis

GET MARUTI, SCOOTERS & MOTOR CYCLES ON EASY INSTALMENTS
ORIENTAL INSURANCE FOR VEHICLES ALSO AVAILABLE
MARUTI VAN AVAILABLE ON HIRE

Pocket-3 Flat No. 549, Paschim Puri (Punjabi Bagh Club Road) Near Gurdwara,
New Delhi-110063.

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA,

TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

Phone : 533358
Office : & Residence

Bhullar Timber Traders

Deals in

Teak-Kail, Deodar Chill Saal—Pinewood, Hollan-Champ Khokkan, Plywood, Sunmica

Bhullar Furnitures

Manufacturers of

TV Trolleys, Side Board Show case, All Kind of High Class Latest Fancy Furniture.

Bhullar Saw Mills

Bhullar Plastics

JOGINDER SINGH

1/40, W.H.S. Near Timber Mkt. Kirti Nagar Near Maya Puri New Delhi-110015.

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDi KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Tel. : 8-713087
713088
713089

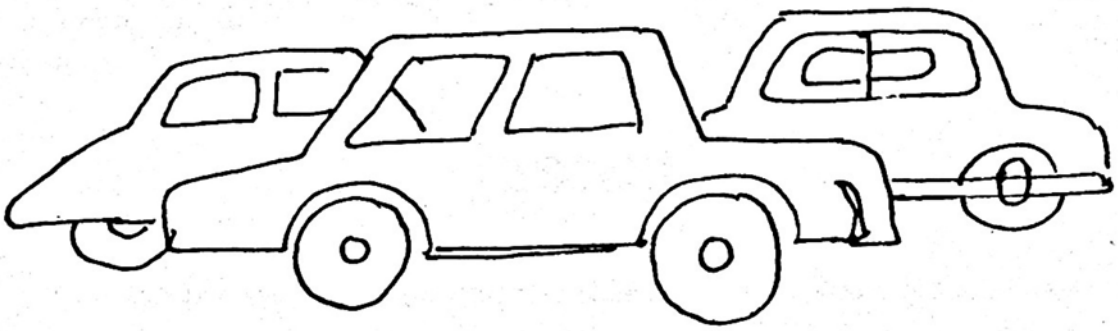

DURGA MOTORS

Specialist in denting painting, Job Work of all kinds of Cars.

YOGESH CHOPRA

II-B/1 Nehru Nagar Near Basant Cinema Ghaziabad

HAPPENING

CAR ACCESSORIES AND CAR SEAT COVERS

बाबा करनैल सिँह जी का भारतवर्ष में स्वागत

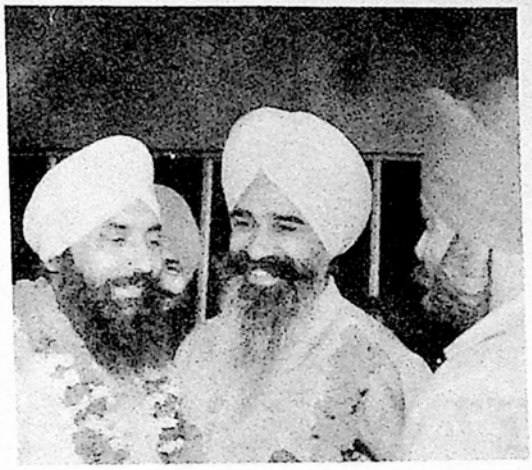

दास जगदीप सिह प्रधान व दास नरेन्द्र सिंह,
सचिव एयरपोर्ट पर स्वागत करते हुए

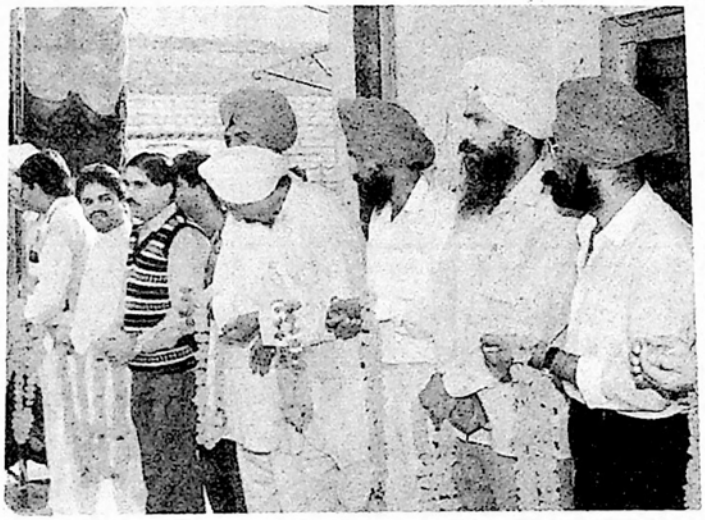

दिल्ली की संगत स्वागत करते हुए।

संत बाबा घसीटा राम जी स्वागत करते हुए

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

SANGEET VILAS

Bombay (Regd.)

Branches : Sion Matunga, Dadar, Bombay Central Peddar Road, Nepean Sea Road, Cafe Prade Colaba, Kurla, Bardra, Santa Cruz, Juhu, Saat Bangalow Vashi & Kokan Bhavan

SHYAM JI

Dance Director

T-105/2, Chamber Colony, Bombay-400074 Tel. : 5511455

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Tel. : 541838
547235
545999

NIRMALA FOTOS

- Video Shooting
- Still Photography

MANOJ SHARMA

86, S.V. Road, Old Khar (West) Bombay-400052.

"शहीदी–पर्व"

इतिहास बनते–बनते बन जाता है। विरोधी कितनी भी रुकावट डाले, परन्तु, बहता पानी अपनी धारा बना ही लेता है। चढ़ता सूरज बादलों को चीर कर भी दुनिया को अपनी गर्मी देता है। सचखण्ड नानक–धाम का भी इतिहास कुछ इसी तरह बन रहा है। इस की गति बड़ी धीमी महसूस होती है, परन्तु, प्रकाशमयी है।

महाराज दर्शन दास जी की शहादत 11 नवम्बर 1987 को इंगलैण्ड में हुई। तीसरा शहीदी पर्व तंवर पार्क, रमेश नगर, नज़फगढ़ रोड, नई दिल्ली में 11 नवम्बर, 1990 को मनाया गया। इस अवसर पर एक विशाल "शान्ति–यात्रा" का आयोजन रमेश नगर से चल कर दर्शन दरबार न्यू महावीर नगर, तिलक नगर तक किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात 10.00 बजे "अरज़ोई–निराधार" से शुरु हुआ। आरम्भ महाराज दर्शन दास जी द्वारा रचित वाणी 'यशवन्ती–निराधार' से विभिन्न रागी जत्थों के कीर्तन द्वारा हुआ।

"शहीदी पर्व" में भाग लेने के लिये इंगलैण्ड से महाराज जी के निवास स्थान से दास भूपिन्द्र कौर (महाराज जी की धर्म–बहन), दास गुरमीत सिंह (भूतपूर्व निजि सचिव महाराज जी) व उन की माता जी और बड़ी बहन, बाबा करनैल सिंह जी व साधसंगत आई। हिन्दुस्तान के अनेक राज्यों–पंजाब,हरयाणा, उत्तर–प्रदेश, महाराष्ट्र से भी संगत ने सामूहिक तौर पर भाग लिया।

कीर्तन के पश्चात् श्रद्धांजलियों का दौर आरम्भ हुआ। दास मान सिंह ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए संगत को इस प्रकार सम्बोधित किया **गुरु रूप प्यारी साध संगत जी,**

नानक नाम चढदी कला तेरे भाणे सरबत दा भला।

हे परमात्मा! मुझे अधिक से अधिक दु:ख दे कि दु:ख सहने की आदत हो जाये। ये शब्द हैं उस महापुरुष के उस सन्त शिरोमणि के जिनकी याद में हम सभी यहाँ बैठे हुए है। आज इस दु:ख और उदास भरे समारोह पर मैं अपने अतिप्रिय और आदरणीय महाराज दर्शन दास जी और उनके साथ हुए शहीद चाचा जोगा सिंह और बाबा सतबन्त सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। जीवन में एक दुसरे को समझाना कि संसार में आना जाना सभी का बना हैं बहुत ही सरल है। परन्तु जिनके चले जाते है उनके हृदय से पुछो कि एक एक दिन उनके लिये कैसा बीतता है। तो उस पीडा को वही जानते है। जो उनके बिना एक पल भी ना रहे हो आज तीन वर्ष तीन युग के समान लगते है। इसके साथ ही होता है वह समय भी दु:खदाई जब साथवाले भी साथ छोड़ जाते है। वे भूल जाते है कि महाराज दर्शन दास हमारा पति भाई बहन या रिश्तेदार नहीं हमारे गुरु है। ऐसे व्यक्ति स्वार्थी हो, गुरु और संगत को छोड़ कर भाग खड़े होते है। समय बीतता जाता है और ऐसे व्यक्तियों पर धूल की परत जमने लगती है और संसार जगत में नाम रह जाता है गुरु का। एक बार की बात है एक व्यक्ति जो बुरी संगत में फंस चुका था डेरे आया। कहने लगा महाराज जी मेरा मार्ग दर्शन करो मैं अपना नाम रोशन करना चाहता हूँ। महाराज जी कहने लगे–पुत्र महात्मा गान्धी की तरह नाम रोशन करो नत्थु राम गोडसे की तरह नहीं।

महाराज जी के जीवन को इतने नजदीकी और बारीकी से देखने का सुअवसर और लोगो के बीच मुझे भी प्राप्त हुआ। परन्तु सेवा के कुछ अरमान अपने हृदय में लिये मैं अभी भी घुम रहा हूँ। महाराज जी का जीवन आरम्भ से ही संघर्षमयी रहा है। दुसरे के दु:ख और कठिनाई को अपना समझ कर सुलझाना उनका स्वभाव था। वे इसे अपना कर्तव्य समझते थे कि परमात्मा ने उन्हे इसी कार्य के लिये भेजा है। अल्पायु में उनको परमात्मा की रोशनी के दर्शन हुए और उस जोत के सहारे इतना बड़ा मिशन खड़ा कर दिया जिसकी छांव के नीचे हर व्यक्ति ठंडक एवं सुखमयी महसुस करता है। महाराज दर्शन दास की जिस जवान आयु में शाहदत हुई वह निश्चय ही अपने आप में महापुरुष की ही एक पहचान है। ऐसी शाहदत बड़े सौभाग्य से मिलती है परन्तु अफसोस कि जीव जिसकी पूजा करते है उसी की हत्या कर दी। महाराज दर्शन दास जी के हृदय में गहरी करुणा थी और वे अत्यन्त सहानुभुति सम्पन्न थे। उनकी दानशीलता में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था महाराज जी को संगीत से बड़ा ही प्यार था और उनका कण्ठ स्वर बहुत ही अच्छा था जो

संगत समूह का एक दृश्य।

भी उनके सम्पर्क में आता वे उसी के आदर और श्रद्धा के पात्र बन जाते हैं निर्धन और असधाय जन उनकी कृपा के पात्र बने। महाराज जी के हृदय में अपने देश प्रति प्रेम भावना और देश भक्ति भी कूट कूट कर भरी हुई थी। महाराज जी कहा करते थे कि यह पवित्र भूमि है जो एक तीर्थ है। सारा भारत उस महान विभूति की और ऐसे देख रहा था मानो वे परमात्मा के नाम की पताका को फहराने के लिये फिर से जन्म धारणा करके ही आये थे। विदेश में रह कर उन्होने भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ाया। उनकी यह धारणा रही हैं कि धर्म ही देश की राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र बिन्दु है। यही राष्ट्रीय जीवन का प्रधान स्वर है। दास धर्म की उपलब्धियों और असफलताओं को अभी इस लिये नहीं आंका जा सकता क्यों कि महापुरुषों की शाहदत का रंग समय के साथ साथ निखरता है। भारत में यह शिक्षा तभी कारगार सिद्ध हो सकती है जब यह दिखाया जाये कि वह जीवन को कितना अधिक अध्यात्मिक बना सकेगा। इसलिये राजनीतिक प्रचार के लिये भी राष्ट्र की आध्यात्मिकता में कितनी वृद्धि हुई जानना जरूरी है। देश आज के जिस माहौल में गुजर रहा है और हमारे शासक जिस तरह से धर्म का प्रयोग अपने स्वार्थ के लिये कर रहे है उससे धर्म की मर्यादा भंग हो रही है। यदी शासक वाक्य ही धर्म का प्रयोग धर्म की उन्नति के लिये करते है तो देश की उन्नति है अन्यथा देश पिछड़ता जाता है। आज के शासक अध्यात्मिकता में शून्य है। और नाही किसी अध्यात्मिक मिशन को उभरने का अवसर प्रदान करते है। महाराज जी कहा करते थे सच बोलना भी मौत है और सच सुनना भी। इसीलिये इन सच्चाई और शाहदतो के सहारे से मिशन उन्नति के शिखर की और जा रहे है। परन्तु सता में कोई भी आये तब तक किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता जब तक वे आम व्यक्ति के भले के लिये कार्य नहीं करते। परन्तु महापुरुष के आने व जाने का सीधा सम्बन्ध ही साधारण व्यक्ति से है। क्योंकि महापुरुष ही केवल साधारण व्यक्ति के भले के लिये ही कार्य करते है। महापुरुषों के लिये आसू बहाने वालो की गिनती दिन प्रतिदिन बढ़ती रहेगी चाहे अत्याचारी कितना भी अत्याचार बढ़ाले। मैं हमेशा से कहता आया हूँ कि विदेशो की नजरे भारतवर्ष के प्रति ठीक नहीं है। विकसित देशों की यह प्रतिक्रिया रही है कि किसी ना किसी तरह से इस देश को कमजोर रखा जाये और अशान्त वातावरण पैदा किये जाये। कई बार हम इसके शिकार हुए। विदेशो में शान्ति स्थापित करने के लिये कितने भी प्रयास किये जाये परन्तु असफल ही रहेगे जबतक उनकी प्रतिक्रिया भारतवर्ष के प्रति ठीक नहीं होती। यदि महाराज दर्शन दास जी के इस पवित्र देश में शान्ति नहीं होने दी जायेगी तो दुनिया के किसी भी कोने में शान्ति नहीं हो सकती।

नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला।

इसके पश्चात् संत बाबा घसीटा राम जी ने संगत को शहीदी पर्व पर सम्बोधित किया

मेरे सुल्तान महाराज दर्शन दास जी व उन का दूसरा स्वरुप महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी, समूह महाराज जी के मिशन को आगे बढ़ाने वाले समूह, तमाम साध संगत जिओ,

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।

आज महाराज दर्शन दास जी जो हमें रिसाव दे गये, उसे तीसरी बार आज छेड़ा जा रहा है जिस के रिसने से दिल का खून आंखों में आ कर आँसुओं के रुप में बह रहा है और आज तमाम राज्य जिस को मेरे सरताज बेपनाह मोहब्बत करते थे, बेपनाह इश्क करते थे, अपनी नमन आँखों से अर्ज करा रहा है, उन को श्रद्धाजंलि दे रहा है। ऐसे राष्ट्र को, ऐसे राष्ट्र के निवासियों को दास का कोटि–कोटि नमस्कार है। जिनके हृदय में जजबा है, बेपनाह इश्क है, बेपनाह मोहब्बत है मेरे महबूब के लिये। आज हम सब लोग यहाँ एकत्रित हुए हैं। एक महान आदर्शवादी महापुरुष की शहादत और उस का जो बलिदान विधान हिन्दुस्तान ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के बाहर कोने कोने में, दुनिया में अपना रंग लाया। और जो कुछ कसर बाकि रही, महाराज जी की शहादत का उद्देश्य रंग लाकर के रहे गा। महाराज जी बहुत बड़े महान आदर्शवादी आध्यात्मिक संत ही नहीं, एक रहबर ही नहीं, एक राजनीतिज्ञ नेता भी रहे। महाराज जी ने इस संसार की गिरती हुई मानवता को उभारने के लिये और सब को बराबर का हक़ देने के लिये और सब को उस परमात्मा की संतान कहने के लिये, उन को संमझाने के लिये अपने जीवन भर का प्रयास नहीं छोड़ा। जहां वह सरबत के भले के लिये जीऐ जहां उन्होंने सब को एक इतेफाक में, प्रेम में, एक प्यार के सूत्र में बांधा, वहाँ पर सब को भाई–चारे की शिक्षा भी दी। आपसी वैर–विरोध और संसार में फैली हुई जात-पात, बिरादरियों, कौमों के झगड़ों को उन्हों ने अपने दिल में महसूस किया।

परमात्मा जो दर्शन दास जी के रुप में इस धरती पर आया था, इस कुचली हुई मानवता की दशा देख कर द्रवित हो उठा। इस देश की बिगड़ी हुई अवस्था को देख कर द्रवित हो उठा। जिस दरख्त के ऊपर हर वक्त आँधियां आती रहें, उसके ऊपर जो परिन्दा अपना घोंसला बना कर बैठा है, वह कब तक अपने जीवन की आस रख सकता है। वह कभी न कभी तो गिरेगा, उस का आशियाना कभी न कभी तो टूटेगा। उन आँधियों को कौन रोकेगा? उन तूफानों का मुँह कौन मोड़ेगा? हमारे देश को दुनिया ने पायदान समझ कर रौंद दिया। इस देश की आबरु कौन बचायेगा?

वह महान धरती माँ जो महान सपूत को जन्म दे सके–कोटि–कोटि नमन है माँ चानन देई को, बटाला धरती को, उस परिवार को जिस ने हीरे जैसा सच्चा, पवित्र, अमूल्य इन्सान जन्मा। महाराज जी की शहादत और उन के साथ उन के प्यारों की, उनके अनुयायियों की–बाबा सतवंत सिह जी की व चाचा जोगा सिंह की जो शहादत हुई, यह नहीं कि उन के पूर्व कर्म के संस्कार थे न उन्हों ने कोई गुनाह किये थे, कहते हैं ना–

"जैसा बीजे सो लुणे, कर्म संदड़ा' खेत।" ऐसी बात नहीं है। जैसे शरीर के अन्दर खून है और उस खून की रवानगी से शरीर ज़िन्दा रहता है, हरकत में रहता है। जिस वक्त माँ की आबरु सो जाती है, जिस वक्त यह आवाम सो जाता है उस की सचेत बुद्धि मर जाती है, मध्यम हो जाती है और उस को अपनी पहचान नहीं रहती। जिस को अपने हक की याद नहीं रहती और अपने शरीर पर अपनी लाश ढोता है। उस वक्त ऐसे महापुरुष अपनी शहादत दे कर, अपना खून देकर–जैसे कि सरदार भगत सिंह ने दिया, महात्मा गाँधी ने दिया, हमारे गुरु अर्जुन देवजी महाराज जी ने दिया या गुरु गोबिन्द सिंह महाराज जी के साहबजादों ने दिया और महापुरुषों ने दिया और उनके खून ने वतन के तमाम नौजवानों के अन्दर एक नई हरकत पैदा की। हिन्दुस्तान ही नहीं दुनिया के अन्दर जोश पैदा किया। आवाम की सोई हुई आत्मा को एक हिलोर दी।

आप का यहां बैठना, महाराज जी को याद करना और आप को जिन्दा रहने का हक यह किस ने सिखाया? यह दर्शाया महाराज जी की शहादत ने। क्योंकि महाराज जी के जो (असूल) सिद्धान्त थे, वो सच पर आधारित थे और सब को और मज़बूत करने के लिये उस को और पाकिज़गी (पवित्रता) देने के लिये शहादत दी जाती है। किसी अच्छी बात को और मज़बूत करने के लिये उस को और प्रमाणित करने के लिये महापुरुष लोग शहादत देते हैं और उन की शहादत के अन्दर बीज छुपा होता है, लोगों का भविष्य छुपा होता है, देश का, कौमों का और दुनिया का भविष्य छुपा होता है। महाराज जी व उन के प्यारों की शहादत में बीज़ छुपा हुया था, जिसने आप की सोई हुई आत्मा को जगाना था और हर इन्सान को, हर कौम को, हर मुल्क को आवाज देनी थी, वही जो कबीर साहिब जी भी दे गये।–कि:

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA,

TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

New Art Photo Services

Still Video & Photo Grapher
1000, Dr. Mukerjee Nagar, Delhi-110 009
Phone: 7224740

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA
TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

ESS KAY ENGINEERS & ASSOCIATES

ELECTRICAL ENGINEERS & CONTRACTORS
A-44, Connaught Place, New Delhi-110 001
Ph.: 3327347

संगत को संबोधित करते हुए
संत बाबा घसीटाराम जी

गगन दमामा बाजयो, परेयो निशानो घाओ
खेत जो मांडेयो सूरमा, अब जूझन को दाओ
सूरा सो पहचानिए जो लरे दीन के हेत,
पुर्जा पुर्जा कट मरे, कबीहू न छड़े खेत।''

महाराज जी ने आप की निर्बल आत्मा के लिये, आप के शरीर के अन्दर हरकत पैदा करने के लिये अपना खून, अपने मिशन और अपने प्यारे राष्ट्र के लिये कुर्बान कर दिया। और आप की रगों के अन्दर का खून जो किसी से लड़ना नहीं चाहता, जो किसी से वैर–विरोध नहीं करना चाहता, किसी का खून नहीं चाहता, किसी को मारना नहीं चाहता। हजूर साहब फर्मान करते थे कि ''मरने वाले की शान है, मारने वाले की नहीं।'' इस चमन को एक अमन की आवाज़ दी–सच की आवाज़ दी, अहिंसा की आवाज़ दी। कभी महात्मा गाँधी ने भी आवाज़ दी थी कि **''अहिंसा परमो धरम''**

यह वही धरती है, जहां महाराज दर्शन दास जी ने जन्म लिया, और इस देश में जन्म लेकर के विदेश में जाकर, सोये हुए लोगों के खून को (झंझोड़) जागृत कर, उपक्रम करके जगाया कि सच का रास्ता क्या है, धर्म का रास्ता क्या है। महाराज जी किसी को गुलामी देने के लिये नहीं आये। महापुरुष किसी को गुलामी देने के लिये नहीं आते, वो तो आप को आज़ादी देने के लिये आते हैं और आज़ादी क्या है, अपने धर्म को मानने की अपने मन के मुताबिक आज़ादी उसके घर में परमात्मा के घर को कई रास्ते जाते होंगें। आप को जो रास्ता अच्छा लगता है। उस को आप चुनिए। मंजिल एक है, उसके नाम अनेक हैं। इन (असूलों) (सिद्धान्तों) के लिये महाराज जी ने अपनी शहादत दी, क्योंकि उन को और मज़बूत करना था और महाराज जी ने अपने जीवन के अन्दर जो ज़िन्दगी में तीन बड़े ऊनर माने जाते हैं जिस को राग–विद्या कहते हैं, जिस को काव्य विद्या कहते हैं और चित्रकला विद्या कहते हैं। महाराज इतने बड़े बलिदानी होने के साथ साथ बहुत बड़े संगीतज्ञ भी थे। उनकी आवाज में वो दम था वो कोयल की सुर थे, मोर का राग थे, वह कृष्णा की बाँसुरी की धुन थी, जो लोगों को अपनी तान पर बाँध सकते थे। रात-दिन सारी सारी रात मन्त्र मुग्ध कर के बिठा सकते थे। उनकी ज़बान पर सरस्वती काम करती थी और महाराज ने उस के द्वारा काव्य–संग्रह भी लिखे। जहाँ उन्हों ने देश–प्रेम किया, वहाँ देश के गीत भी लिखे। कहते हैं, अध्यात्मिक और सासांरिक दोनों तरह की उन्नति होनी चाहिए। महाराज जी ने जहाँ हमें बाहरी तौर पर प्रेरित किया, आप की आत्मा को और ताकत देने के लिए महाराज जी ने 'यशवन्ती-निराधार' के नाम से वाणी लिखी जो आप (रोज़ाना) प्रतिदिन सुनते हैं–ताकि जहाँ आप के शरीर को, आपके मन को उन के बोलों से, उन की चीज़ों से, उनके सत्संगों से ताकत मिले, वहाँ पर आप की आत्मा को आध्यात्मिक ज्ञान भी मिले, आध्यात्मिक ताकत भी मिले। अन्दर और बाहर से आप को मज़बूत करने के लिये उन्हों ने उस ऊनर को अपने पास पाला। क्या

आप एक छोटे चित्रकार थे? वो क्षण भीतर किसी अच्छे देश की कल्पना, किसी बिल्डिंग की कल्पना, किसी इन्सान की ज़िन्दगी की कल्पना उस को महान बनाने की कल्पना, एक सैकेण्ड में किसी चित्रकार किसी शायर की तरह कागज पर उतार दिया करते थे और महाराज जी ने चिन्तन किया इस देश की कौमों के बंटवारे का। मनू स्मृति में आता है कि हमारे देश के अन्दर कम से कम 2000 के करीब ब्राह्मणों की जातियाँ थीं। 1000 ग्यारह-सौ के करीब करीब क्षत्रियों की जातियाँ थीं। जब देश को जात-बिरादरी में बाँट दिया जायेगा तो क्षात्रियों कि सिवाय कौन महसूस करेगा कि देश के ऊपर जब कोई आक्रमण होगा, देश और धर्म पर जब कोई विपत्ति आयेगी तो एक ही वर्ग–विशेष–क्षत्रिय लड़ेगा। बाकी सब अपने आप को अपंग महसूस करेंगें क्योंकि ब्राहनण का काम तो ब्रहन ज्ञान है, शूद्र का काम–भारी भरकम काम करना है–वैश्य का काम व्यापार चलाना है। नहीं, महाराज जी ने सब को इकट्ठा किया–हमारी पहचान दी–कि आप जात, मज़हब, बिरादरी से बड़े छोटे नहीं हो सकते। अगर बड़े या छोटे हो सकते हैं तो अपने कर्मो के बल पर–या अपनी करतूतों के बल पर। अगर आप महाराज जी के दर्शाऐ आदर्शों से चलेंगे, तो आप महान बन सकते हैं। करतूत करेंगे, चाहे आप कोई भी है–धूल में मिल सकते हैं। यहाँ महाराज जी ने रास्ता दिया, सब को एकत्रित किया–"तेर-मेर; जात-पात, मज़हब–कौम बिरादरी–इसको संग्रह किया और महाराज जी ने हर चीज़ को अहम् के दायरे के इर्द-गिर्द नहीं घुमाया–'मैं' के इर्द-गिर्द नहीं रखा। महाराज जी ने जो इस का केन्द्र था, उसको परमात्मा रखा–उस को निरंकार रखा कि तमाम दुनिया उस परमात्मा के इर्द-गिर्द घूमती है। उस को छोड़ कर कोई बड़ा नहीं हो सकता । जीवों की गति एक के साथ है–और उस मालिक के साथ सबको जोड़ने का भरसक प्रयास किया, और सब सें ऊपर उठ कर के, आप लोगों को एक रास्ता दिया–जिस रास्ते का नाम उन्होंने दास–धर्म रखा। 'दास' उस के असूलों का नाम था और 'धर्म' केवल परमात्मा की बंदगी–जो कभी न बदला है और न कभी बदले गा।

दास के असूल क्या हैं–सब्र, सिदक, सन्तोख और पाँच चण्डालों की शहादत। कर सकते हो तो किसी का भला कीजिये–बुरा न कीजिये। यह दास के कुछ असूल दिये। सबसे प्यार करना यह असूल दिऐ। इन असूलों को मानने वाला उन का प्यारा है, उन का प्रिय है, उन का शिष्य है। और उस के साथ साथ परमात्मा का ध्यान करने वाला धर्मी है। धर्म कभी टकराव नहीं करता। हम यही बात करते हैं कि जब दो धार्मिक आदमी कहीं आपस में लड़ेगें, दो धर्म आपस में लड़ेंगे तो दुनिया के अन्दर नास्तिकतावाद जन्म लेती है। यह मुल्क नास्तिक है, यह दुनिया नास्तिक है, ये लोग नास्तिक हैं–उनका का सारा दोष नहीं है। दोष है उन धर्मियों का–जो धर्म का चोला पहन पर आपस में लड़ते हैं। आपस में टकराव करते हैं और आने वाला कल जिस को अच्छी तरह से समझ नहीं है, वह नास्तिक हो जाता है–नास्तिकता के रास्ते पर चला जाता है।

आप लोग धर्म के लिये शहादत दे सकते हैं, धर्म के रास्ते पर चल सकते हैं, धर्म के लिये कुर्बानी व बलिदान दे सकते हैं, मगर धर्म के रास्ते पर चलते हुए धर्मी बन कर के जीना नहीं चाहते। यही अफसोस था महाराज दर्शन दास को–जिन्होंने धर्म की खातिर शहादत ही नहीं दी, बल्कि धर्म के रास्ते पर चल कर भी दिखाया और उन्हीं पर दुनिया को चलाने की कोशिश भी की और यही आवाज़ दी कि हे धर्मात्माओं तुम धर्म का चोला पहन कर मत लड़ों, इन्सानों को धर्म का चोला पहन कर के उस चोले को बदनाम मत करो और इन छोटे छोटे लोगों को नास्तिक मत बनाओ। ये लोग गुरुद्वारों, मन्दिरों मस्जिदों से प्यार नहीं करेंगे। ये संत, महात्मा, महापुरुषों का कभी सत्कार नहीं करेंगे। उनके मन में घृणा आ जायेगी। इन परम–धामों के लिये, इन परम लोगों के लिये, उन्हों ने जब दुनिया को पैगाम दिया, वहाँ धर्मी लोगों को भी पैगाम दिया, जो धर्म के रास्ते पर चलते थे, जो धर्म का प्रचार करते थे, जो धर्माचार्य थे उन को भी कहा। सो आप इन को पहचानिये, इन को जानिए, आप इन को देखिये। जो महाराज आप को आंसू नहीं दे गये। महाराज गुरु अर्जुन साहिब जिस समय शहादत देने के लिये गये, माता गंगा को मिले, साथियों को मिले, सब को मिले–लाहौर जाने से पहले कहने लगे–

"जो आया सो चलसी, आपो अपनी वारी।"

जो लोगों का भविष्य जानते थे, तो अपना भी जानते थे। जिस काम को करने हेतु आते, वो कर जाते थे। आप को सोना नहीं है, आप को जो अर्ग देना है, उस की शहादत का आँखों से आँसू देने हैं, उस की श्रद्धाजँलि के लिये तो उस के आदर्शों पर चल कर दीजिये उस के रास्ते पर चल कर दीजिये। अमन के पुजारी का

शहीदी पर्व पर लंगर ग्रहण करते हुए संगत।

रास्ता था अमन सच सबर, सिद्दक और सतोखं यही वक्त कहने के लिए वो आऐ थे, और उन्होंने अनेकों टुकड़ों को इकट्ठा किया और उनको एक नया नाम दिया 'दास-धर्म' और उनके लबों पर नाम दिया—'नानक नाम चढ़ी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।" हिन्दुस्तान का ही नहीं, हिन्दुस्तानी का ही नहीं, बल्कि तमाम मुल्कों का भी। ये लोग कोई मुल्कों पर राज नहीं करते ये लोग राज करते हैं अपने प्यारों के दिलों पर और जहाँ जहाँ इन का प्यारा है, वहीं वहीं इन का धाम है। हमारे लोगों के लिये जो मनुष्य जाति की अहमता को नहीं पहचान पा रहे, अपने फर्जों को भूल चुके थे। आज हमारी खातिर शहादत दी है महाराज दर्शन दास जी ने ताकि हम लोगों के अन्दर वो महान् खून दौरा करे, ये हरकत में आये और एक आदर्श जीवन जियें। इस भारत माता का जो हमारे ऊपर कर्ज़ है, उसे उतारो। और धन्य हैं वो, माँ-बाप, हमारे बुर्जुग हमारे सरताज़ बाबा सतवन्त सिंह जी के जन्म-दाता, चाचा जोगा सिंह जी के जन्म-दाता जिन्होंने ऐसे सपूतों को जन्म दिया, जिन्होंने अपने महबूब के मिशन के लिये अपनी जान की परवाह नहीं की और महाराज जी से अग्रणीय शहीद हो गये और उनके साथ चले गये—बाणी में कहा गया है:—

जिस प्यारे सयों नयों, तिस आगे मर चलिए
धृग जीवन संसार, ताके पाछे जीवन।।"

सो साध-संगत जिओ, हम सब लोग यहाँ पर बैठे हैं

हम आप से यही विनती करते हैं, यही कहना चाहेंगे कि आपने श्रद्धांजलि उनको देनी है सबसे पहले हम उन लोगों के लिये जो महाराज जी के मिशन से बेमुख हो गये, जिनको अपना फर्ज़ भूल गया है, जो महाराज जी की रहनुमाई का अभी तक कर्ज़ नहीं उतार पाये, जिनको अभी तक उनके घर का खाया हुआ नमक याद नहीं है। उनकी आत्माओं को, उनके कानों को झिंझोड़ना चाहते है कि पेट तो सब भरते हैं अपनी आन और शान के लिये सब जीते हैं पर जिस आन और शान के रास्ते महाराज दर्शन दास जी ने चलाया था, अगर वो श्रद्धाजंलि देना चाहते हैं, महाराज दर्शन दास को, बाबा जी को चाचा जोगा सिंह जी को, उन को अपनी आत्मा को एक नया रंग देना होगा, वापिस आना पड़ेगा, उन लोगों को उस रास्ते पर जिस राह पर महाराज दर्शन दास उनको उँगली पकड़ कर चला गये, तब जाकर के उनकी श्रद्धांजलि महाराज दर्शन दास जी के कदमों में महाराज दर्शन दास जी के सेवकों के कदमों में मन्जूर होगी, अन्यथा कोई उनकी श्रद्धांजलि मंजूर नहीं होगी, कोई उन का प्यार उनके घर में मंजूर नहीं होगा। कई बार आप को, प्रेरणा देते हैं और जो लोग

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Phone : 6842180 P.P.
6449996 R

METAL PLATERS INDIA

for
Quality Zinc Plating

Jasbir Singh

B/176/2 Okhla Industrial Area Phase-I
New Delhi-110020.

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Shop : 7231111, 7226297

Res. 7110024

Bhupinder Singh Harinder Singh & Co.

Fruit & Vegetable Commission Agents
Specialists in : POTATO AND ONIONS
300-A New Subzi Bandi, Azadpur Delhi-33

आज यहाँ बैठे हैं, उन से एक निवेदन करेंगे कि वो भी महाराज जी के रास्ते पर चलें, जो आपने एक वक्त के बाद चुना, जब आप की शंकाएँ दूर हुई, जब आप के अन्दर महाराज जी की श्रद्धा जागी। हम तो यही कहेंगे, हम भी आप के साथ हैं, क्योंकि हम भी महाराज दर्शन दास के महाराज तिरलोचन दर्शन दास के सेवक हैं, हम सब को आज महाराज दर्शन दास के चरणों में इन फूलों की नहीं, इन आँखों की ही नहीं, अपनी करतूतों की, अपने अवगुणों की, अपनी कुरीतियों की जो हम ने पाल रखी हैं, उन को तिलांजलि देते हुए एक प्यार की, मधु-मुस्कान की और उस के रास्ते पर चलने की अहद लेते हुए श्रद्धांजलि दें यही सब से बड़ी और यही सब से महान श्रद्धांजलि होगी। इसके साथ ही हम जो तमाम साध संगत जो U.K. से यहाँ पहुँची है, महाराज जी का जो परिवार यहाँ पर बैठा है, हिन्दुस्तान से बाहर जो महाराज का डेरा है और वहाँ से आये हुए महान् पूज्यनीय पारिवारिक लोग हैं, तमाम कमेटियां व समूह साध-संगत को दास की नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।

और अन्त में महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी ने संगत के सम्बोधित किया।

शहीदी पर्व पर संगत को सम्बोधित करते महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी।

महाराज दर्शन दास जी की धर्म बहन दास भपिन्द्र कौर शहीदी दिवस पर इंग्लैण्ड से तशरीफ लाये।

गुरु रूप प्यारी साध संगत जीओ,

नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला।

आज हम यहाँ पर अपने गुरु पिता, महाराज दर्शन दास जी के तीसरे शहीदी पर्व पर इक्ट्ठे हुए हैं। सन्त महात्मा तो शुरु से ही अपने आप को देश पर, और दूसरों के लिये, दूसरों की भलाई के लिये अपने आप को कुर्बान करते आये हैं। महाराज दर्शन दास जी भी जो देश को सब से महान् मानते थे और कहा करते थे कि देश-प्रेम ही सब से बड़ी पूजा है।

इन्ही सब सिद्धान्तों को मान्यता देते हुए देश-प्रेम के लिये अपने प्राणों की आहुति दी और हमें सच्चे मार्ग पर चलने के लिये नई प्रेरणा दी महाराज दशर्न दास जी ने अपने लहू का एक एक कतरा देश के लिये न्यौछावर कर दिया। और वह हमेशा यही चाहते थे कि हमारा देश खुशहाल हो और इस देश में रहने वाला हर प्राणी (इन्सान) दुनिया के लिये प्रेम का प्रतीक बन, इस दुनियां में रोशन हो। इस के साथ साथ महाराज़ यह भी कहा करते थे कि दूसरों के सुख या दूसरों के दुःख का बोझ केवल महापुरुष ही उठा सकते हैं। मुहम्मद साहब की ओर देखो, उन्होंने जो कुछ किया, दूसरों के लिये किया। गुरु तेग़बहादुर जी ने अपने

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From

Phone : 4624859

He Man's Personality by

SUBHASH TAILORS

SUBHASH TAILORS

GURU NANAK MARKET, BHOGAL
NEW DELHI - 110014

Maker of Success:

Success by Confidence
Confidence by dashing personality
Dashing personality by Elegant Dresses
Elegant Dresses by immaculate Tailoring
immaculate Tailoring by
Prop Dass Subhash Kumar Wadhwa

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Phone : 500145

PAHWA STEEL & IRON WORKS

Sheet Cutting & Sharing Machine (Job Works)

Manufacturing & specialist in :

Press sheet Doorfarms, section door & windows

All kinds of Iron Bar, Angle section Round
Pipe & Square pipe sold here

Office
A-26, Rajouri Garden
New Delhi--110027

Factory :
A-242, Okhla Phase-I
New Delhi-110019.

शीश की कुर्बानी दी अपने लिये नहीं, दूसरों के लिये दी। गर्म लोह की यातना गुरु अर्जुन देव जी ने अपने लिये नहीं सही–बल्कि लोगों के लिये सही।

गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने बच्चों को दीवारों में (नींवों) में चिनवा दिया–अपने लिये नहीं, धर्म की ख़ातिर। जो कुछ भी महापुरुषों ने किया अपने लिये नहीं, दूसरों के लिये किया। इसी तरह आप को भी दूसरों के लिये जीने के लिये जन्म मिला है। आप भी अच्छे कार्य करें, जिससे लोगों के सामने आप एक मिसाल (आदर्श) बन जायें। इस से आप तो अमर हो ही जाओगे, आप के साथ रहने वाले भी अमर हो जायेंगे।

युगों–युगों से महापुरुष इस धरती पर जन्म लेते आये हैं और हमेशा ही उन्होंने नये धर्म की नींव रखी और नयी रीत दी। महाराज दर्शन दास जी ने दास-धर्म बनाया–जिस के द्वारा महाराज जी ने खुला सन्देश दिया कि कोई भी इसे अपना सकता है और दास धर्म में रहते हुए अपने परामात्मा को मान सकता है। दास धर्म की छत्र–छाया में रह कर आप सभी सुख प्राप्त कर सकते हैं। अगर आप इसके (असूलों) सिद्धान्तों को मान कर चलते हैं।

महाराज जी ने हमें आपस में मिल-जुल कर प्यार करने का और प्यार बाँटने का जो सन्देश दिया है। आज हम भी महाराज दर्शन दास जी की वाणी को दोहराते हुए आप को यही सन्देश देते हैं कि आप सभी आपस में भाई-चारा रखें और हम आप को वचन देते हैं कि अगर आप सच्चाई को मान कर, एक दूसरे से मिल कर कार्य करेंगे तो महाराज दर्शन दास जी आपके अंग-संग रहेंगे।

शान्ति यात्रा के कुछ दृश्य

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA
TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

Phone : 5754395

JAGIR ENGINEERING WORKS

Specialist in : Spindal Bore, Band Bore P.V.C. Machine Worm Threading

Plot No. N-26, Gali No. 10 (Old) Ind. Area Anand Parbat, New Delhi-5
Behind Hindustan Traders

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA
TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Tel. Off. : 279733
276574
Resi. : 7126126

KWALITY PAPER PRODUCTS

207, Chawari Bazar, Delhi-6.
Resi. : E-4/22A, Model Town, Delhi-9.

Prop. Naveen Kumar

पंजाब

बहारे जहां गूंजती रहती हर पल,
वो पंजाब भारत का प्यारा किधर है।
जहां भंगडे व बोली की दुनिया थी सजती,
अमन चैन का वो नजारा किधर है।
जहां भाई-भाई के दुख का सहारा,
तो सुख और सरगम का तारा किधर है।
जहां मेले लगते थे खुशियों के हर दिन,
रो गुलशन बहारों का नजारा किधर है।
बना भाई-भाई के खून का प्यासा,
वो मधुरिम सुखों का सितारा किधर है।
जो धन-धान्य देता था भारत को हरदम,
वो सबकी खुशी का सहारा किधर है।
जहाँ में शहादत की बातें करे क्या,
वो कुर्बानियों का दुलारा किधर है।

दास राजन

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From

Phone Shop : 5412225
Resi. : 5434651

Riche-Rich

Collection
Specialist in Children Wears
H-15, Main Market, Rajouri Garden New Delhi-110027.

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Tel. : 3269865
7124972

SANDEEEP STATIONERS

All kinds of office stationery supplier and printers
SUBHASH CHAWLA
Shop No. 1720/3, Roshan Pura, Nai Sarak, Delhi.

अनमोल-वचन—संकलित (द्वारा दास आदर्श)

को नु हासो किमानन्दो, निच्च पंजलिते सति
अन्धकारेन ओनद्धा, पदीपं न गवे सथ।।

यह हँसना कैसा? यह आनन्द कैसा? जब रोज़ ही चारों और आग लगी हो और संसार उस में जल रहा हों, तब अंधकार में घिरे हुए तुम लोग प्रकाश को क्यों नहीं खोजते?

(धम्मपद)

सुरसरि जल कृत बारुनि जाना।
कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना।।
सुरसरि मिले सो पावन जैसे।
ईस अनीसहि अंतरु तैसे।।

गंगाजल से भी बनाई हुई मदिरा को जान कर संत लोग कभी उस का पान नहीं करते। पर वही गंगाजी में मिल जाने से जैसे पवित्र हो जाती है, वैसे ही ईश्वर और जीव में भेद है।

(तुलसीदास)

व्यथित रहे ईश्वर के संग नित,
वही साध्य भू-जीवन साधन।
उस से युक्त जगत सत् सुखमय,
उस से विरत मृषा, माया भव।।

(सुमित्रानन्दन पंत)

जे चरन सिव अज पूज्य रज
सुभ परसि मुनिपतिनी तरी।
नख निर्गता मुनि बंदिता
त्रैलोक पावनि सुरसरी।।
ध्वज कुलिस अंकुस कंजजुत
बन फिरत कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद मुकुंद
राम रमेस नित्य भजामहे।।

जो चरण शिव जी व ब्रहना जी द्वारा पूज्य हैं, तथा जिन की कल्याणमयी रज का स्पर्श पा कर गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या तर गई, जिनके नख से मुनियों द्वारा वन्दित, त्रैलोक्य को पवित्र करने वाली गंगाजी निकलीं और ध्वजा, वज्र, अंकुश और कमल जैसे चिन्हों से युक्त चरणों में बन में फिरते समय कांटे चुभ जाने से गढ्ढे पड़ गये थे। हे मुकुन्द! हे राम! हे रमापति! हम आप के उन्हीं दोनों चरणों को नित्य भजते रहें।

(तुलसीदास)

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Tel. No. 539518

For Medicine and Cosmetics
Remember

SURESH MEDICOSE
AND
POLY CLINICS

(Opening Shortly)

New Mahavir Nagar, Outer Ring Road, New Delhi-18

Note : Doctors may contact for space in the Poly Clinics

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Phone : 2517110

Nasib Singh & Sons

Ambassador, Maruti Cars and Vans Deluxe Buses and Metadors for Marriage Party & Picnic of Tours available

Malka Ganj
Near Ramjas College
Delhi-110007

Res. C-6/35
Lawerence Road,
Delhi-75

जन्म दिवस समारोह
महाराज दर्शन दास जी

साध-संग जिस हरि-हरि ध्याया
दर्शन अगम रुप जग माहि समाया

जब जब भी धरती पर परमात्मा ने जन्म लिया, उस ने केवल जीवात्मा का भला किया। अपने शुभ कर्मों द्वारा प्रत्येक के दिल में अपना स्थान बना लिया। सचखण्ड नानक धाम की ओर से महाराज दर्शन दास जी का जन्म-दिवस समारोह 7-12-90 को न्यू महावीर नगर पार्क नज़फगढ़ रोड में मनाया गया। इसी तरह इस वर्ष मुम्बई में भी महाराज जी के जन्म दिवस का कार्यक्रम न्यू-मुम्बई में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। महाराज जी के समस्त अनुयाईयों ने अपने अपने घरों में जन्म-दिन की खुशी में दीप माला की।

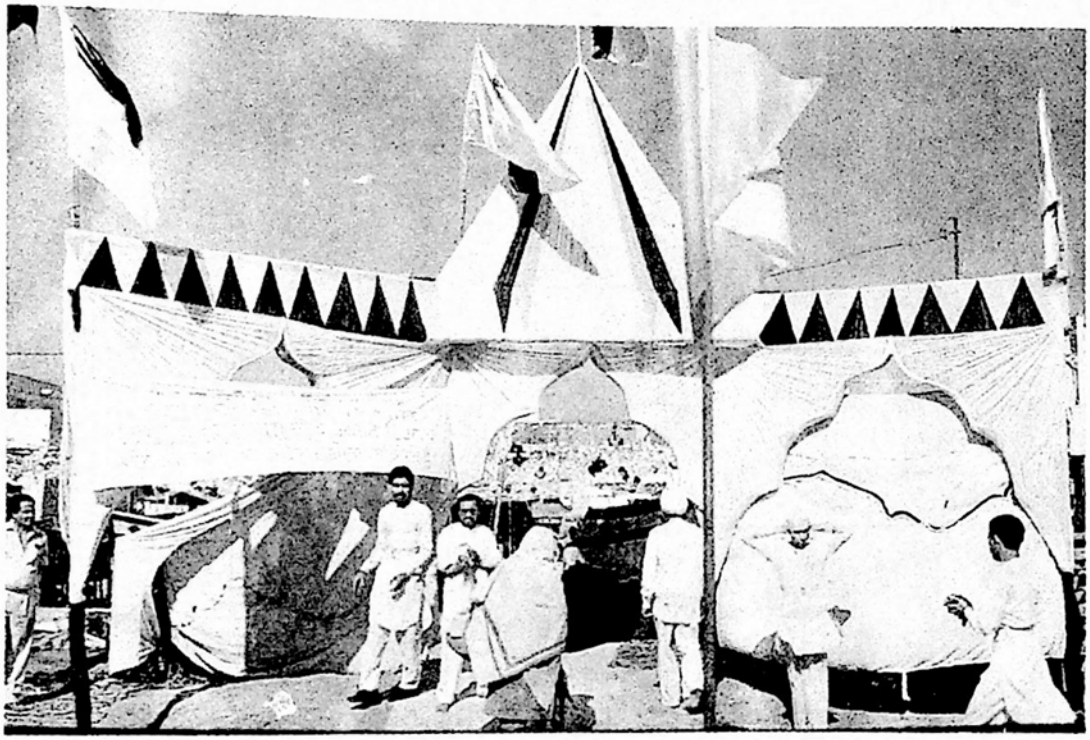

ज्योति दिवस (7 दिसम्बर) समारोह के पण्डाल का दृश्य।

दिल्ली में समारोह की शुरुआत 'अरजोई' से हुई। कई हज़ार श्रद्धालुओं ने समारोह में भाग लिया। अरजोई के पश्चात् ही महाराज जी द्वारा रचित वाणी 'यशवन्ती-निराधार' में से वाक् लिया गया और सन्त बाबा घसीटा राम जी ने सत्संग किया।

वाक्—यशवन्ती निराधार धाम पहला

गुरु नानक सबहां तो वड्ड, तेरा महल चौबारा खिमा खुमारी नाम देहो, खोजत मन भयो गवारा।"

गुरु रुप प्यारी साध संगत जिओ

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।

यह रचना महाराज दर्शन दास जी की है, अपने इस संदेश द्वारा महाराज जी इस नाम की बड़ाई, उपमा व प्रशंसा कर रहे हैं कि इस संसार 'जगत में आ कर, हम लोग झूठी व नाशवान चीज़ों के दायरों में फंस कर हम उस परमात्मा को भूल गये हैं और इस संसार जगत में हमें जो कुछ भी नज़र आता है, यह सारा ही झूठा, नाशवान अतः बेकार है। यह भी जो प्रभु की रचना है, हम उस रचना के बीच, उन इन्द्रियों व

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Ph. : 5738880 P.P.

DAS JEWELLERS

Das Sanjay

Specialist in :
All kinds of fancy and latest
Design of Gold ornaments like
Kara Churi, Neckless Sets
Chain and Rings etc.

Gaurav Market
Shop No. 20 Ist Floor
2368/13-14, Beadon Pura
Gurdwara Road,
Karol Bagh,
New Delhi-5

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Dass Builder

Sale & Purchase
Flat, Plot, Shops and Kothies etc.

S-7/C-9/67, ROHINI DELHI-110085
Partners : Kamal Bedi & Roopesh Bedi

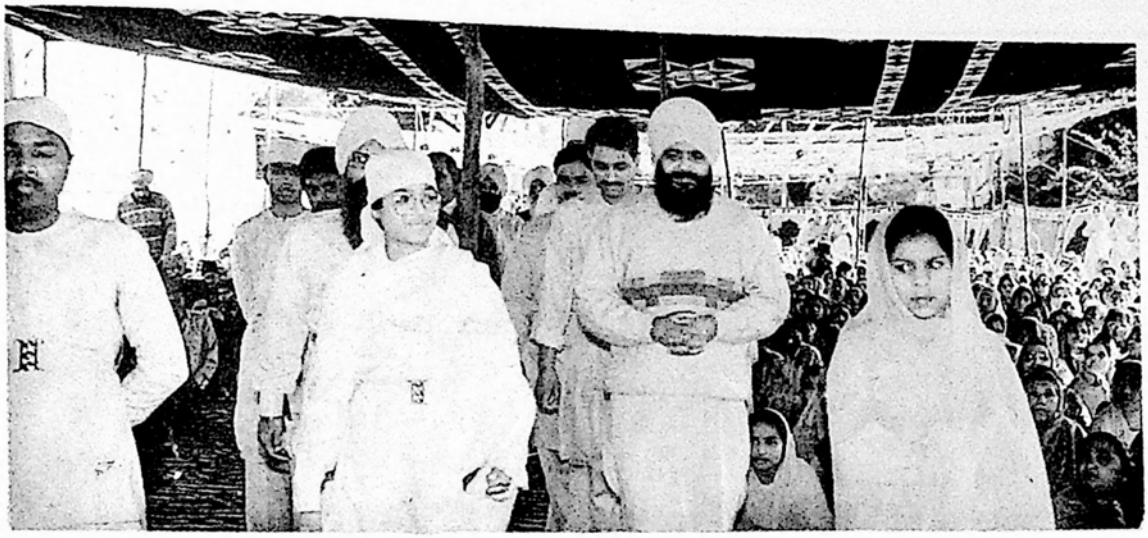

पण्डाल में पधारते हुए महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी।

केन्द्रियों के बीच जो हमें केवल इस्तेमाल करने के लिये मिलीं थीं, हम ने उन को इस्तेमाल करने की बजाए, उन को भोगना शुरु कर दिया।

महाराज जी कई बार हमें 'सत्संगों द्वारा समझाते रहे हैं कि परमात्मा ने जो भी रचना इस संसार में बनाई, हमारा उन के साथ तो प्यार हो गया, लेकिन यह सारी रचना को बनाने वाला जो मालिक था, जो परमात्मा था, उस के साथ हमारा प्यार न हो सका, हम उस के साथ अपना प्यार न जोड़ सके। पर सवाल यह पैदा होता है कि जिस परमात्मा को हम ने कभी देखा नहीं, जिसा का कोई रंग-रुप, कोई आकार नहीं है; वह परमात्मा एक ऐसी जगह पर रहता है, जहां आम व्यक्ति का जाना नामुमकिन है। हजूर गुरबाणी में फर्मान करते हैं, "रुप न रेख, न रंग किछ, त्रै गुण ते प्रभु भिन्न।" बहुत कठिन है? फिर उस परमात्मा को याद किस तरह किया? जाये, क्योंकि उस का कोई स्थूल रुप नहीं है, उस परमात्मा का कोई वजूद नहीं है। वजूद न होने के कारण निराकार, निर्गुण के कारण यह जानते हैं कि वह मालिक ही कर्त्ता है, लेकिन हम उस के साथ प्यार नहीं कर सकते। हजूर साहब फर्मान करते हैं कि फिर इस का रास्ता कैसे मिले? इस का रास्ता

संत बाबा घसीटा राम सत्संग करते हुए

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala **Tere Bhane Sarbat Da Bhala**

With Best Compliments From :

RELLY REPAIRING SHOP

Specialists In :

All kinds of Lathe Work, P.V.C. Cable P.V.C. Extruder, P.V.C. Grinder, P.V.C. Mixer and All Metal Welding

1/7273, Babar Pur Road East Gorakh Park,
Shahdara, Delhi-11 00 32

Phone :228 41 53

Prop. M.S. Sokhey

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala **Tere Bhane Sarbat Da Bhala**

With Best Compliments From :

Sawhney Furnishers

Deals In :— Quality Furniture For Domestic & Official

★

Show Room : C-177 Fateh Nagar, Jail Road,
New Delhi-110018

Prop Narinder Singh & Son

हमारे महापुरुषों ने धर्म-ग्रन्थों में, गुरबाणी व अपने अनुभवों द्वारा, प्रत्येक शब्द, पंक्ति व पद द्वारा हमें यह समझाया है कि इस धरती पर जो भी रब के प्यारे व रब के भगत जन्म लेते हैं, उन के बीच व रब के बीच कोई अन्तर व भिन्नता नहीं है। महाराज फर्माते हैं:

"हरि का सेवक सो हरि जेहा
भेद न जानयो मानख देहा।"

परमात्मा निराकार है, और जो धरती पर अवतरित हुआ है, वह साकार व सगुण बन कर आया है। साकार, सरगुण व निर्गुण में कोई अन्तर नहीं है। सरगुण की आवश्यकता इसलिये होती है कि मनुष्य का टिकाव एक जगह बन जाये। उस से मनुष्य का प्यार, प्रीत, स्नेह हो जाता है। अतः साकार के पास जा कर मनुष्य अपना रास्ता पूछता है।

आज महाराज दर्शन दास जी, जिन की गोद में बैठ कर, हम आनन्द प्राप्त कर रहे हैं, साहिबां का आज जन्म दिवस है। इस जन्म-दिवस पर हमें एक दूसरे को केवल मुबारकबाद या बधाई ही नहीं देनी है वरन् यह देखना है कि सर्गुण रब दुनिया में क्या करने आया? दुनियां में आ कर यह नहीं कि हमें सुखों के लिये

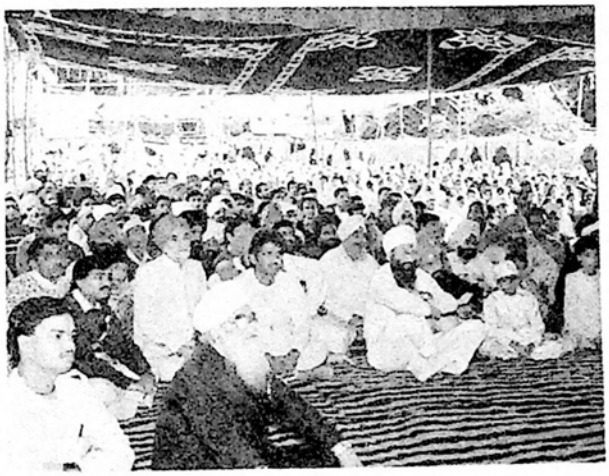

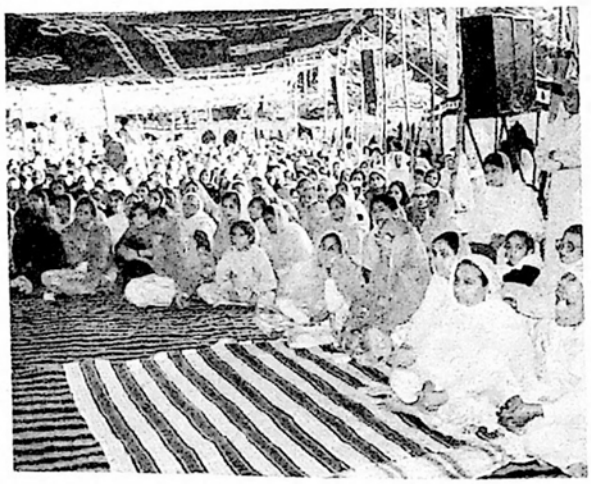

संगत का दृश्य

बुलाता रहा, हम पहले भी कई बार विनती कर चुके हैं कि कोई भी संत-महात्मा इस धरती को सुखों की नगरी बनाने के लिये नहीं आया। अगर यह सुखों की नगरी बनाने के लिये आये होते तो इन से पहले कई संत-महात्मा इस धरती पर आये, वो इस धरती को सुखों की नगरी बना कर चले जाते। ये केवल हमें दलदलों से निकालने के लिये अपनी बांह आगे बढ़ाते हैं—कि आओ दुनिया के जीवो तुम्हारी बाँह पकड़ कर तुम्हें पार उतार दिया जाये, तुम्हारा उद्धार कर दिया जाये।

क्राईस्ट साहब को एक बार सेवादार कहने लगे कि आप कहते हो, महाराज कि मैं 'Son of God" हूँ, परमात्मा का पुत्र हूँ—जो आप के पिता हैं, उस के दर्शन कभी हमें भी करवाओं, उस के साथ कभी हमें भी मिलवाओ। यह सुन कर क्राईस्ट साहब कहने लगे—कि मुझे बहुत दुःख है, बहुत अफसोस है कि मेरा पिता मेरे अन्दर, मेरे बीच बैठ कर ही काम करता है, इस बात का तुम्हें आज तक भी पता नहीं चला? इतना समय तुम्हें यहां आते बीत गया, तुम्हें आज तक यह पता नहीं चला कि मुझ में और उस में कोई अन्तर नहीं है।

आगे बाबा जी ने फर्माया कि महाराज जी हमें समझाया करते थे कि असली मार्ग, नाम का जो रास्ता है, वह सब से ऊँचा और सुच्चा है। परमात्मा को मिलने का सब से आसान मार्ग जो कलियुग में था, इस समय भी है और रहेगा। वह मार्ग साध-सगत की शरण अतः नाम कह कर याद किया जाता है। हमने कई बार सत्संगों में बिनती की है कि:—

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Ph. : 7110815

BHARTIYA PLASTICS

Manufacturers of PVC Footwear & Tru—tone Colours

DAS SANJAY

147/15, Onkar Nagar (B) Trinagar Delhi-35

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

Phone : 2529441

SWARAN COLOURS CO.

Dealers in :

All kinds of Dyes, Chemicals & Textile Auxiliaries

GULZAR SINGH

168, Pocket A/3, Sector-8 Rohini Delhi-110085.

महाराज दर्शन दास जी के ज्योति दिवस पर संगत लंगर ग्रहण करती हुई।

"कबीर सेवा को दोऊ भले, इक संत इक राम
राम जो दाता मुक्त को, संत जपावे नाम।"

महाराज जी हमें बुरी चीज़ें परहेज़ के तौर (रुप में) पर छोड़ने के लिये कहते हैं कि मीट, अंडा, शराब, तामसिक पदार्थ व राजसिक पदार्थ परमात्मा को पाने की राह में रुकावट हैं, इन के सेवन करने से हमारा आत्मिक बल कमज़ोर होता है, हमारा अहार-व्यवहार ठीक नहीं रहता। जैसा कहते हैं कि "जैसा खाईये अन्न, तैसा होवे मन। जैसा पीए पाणी, तैसी बन जाये बाणी।"

तो हे! संसार के जीवो तुम इन मज़हबी दायरों से ऊपर उठ कर के, एक धर्म की जो लीला है, उस में तुम आओ। जहां पर आप आज बैठे हैं, यह एक संगत का एक रुप है—यहां न कोई हिन्दू है, न कोई मुसलमान है, न कोई सिख है, न कोई यहां ईसाई है। न परमात्मा की कोई जाति है, न ही मनुष्य की कोई जाति है, न मज़हब न कबीले हैं।

यह दुनिया ही एक जेलखाना है, संसार का हर प्राणी, हर जीव यहां पर कोई-न-कोई कर्म-काण्ड भुगत रहा है, अपने किये हुए की सज़ा भुगत रहा है। स्वर्ग व नरक सब इस धरती पर है। किसी ने आज भोगना है, किसी ने कल भोगना है। उस के घर से कोई नहीं बच सकता। वह मालिक जहां सब की रक्षा करता है, जहाँ वह निरवैर है, वहाँ वह न्यायकारी भी है। महाराज अनेको बार सत्संग में फर्मान करते रहे कि-हे! संसार के जीवो अगर तुम यह समझते हो कि परमात्मा ने हमारे ऊपर दया की है, किसी महापुरुष का मिलन कराया है, उस महापुरुष ने दया की है और हमें नाम दिया है। हमें अमृत—वेला के समय उठ कर सिमरन, भजन, बन्दगी करनी चाहिये।

रब कभी कोई बुरा कर्म नहीं करता है, वह तो दुनिया का भला करने के लिये आया है, वह तो सब के भले के लिये संदेश लेकर आया कि 'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला।' उस ने किसी को क्या दुःख देना है? रब तो धरती का आप मालिक है। उसने कहा कि यह पराया देश है, हम ने इस से ऊपर उठना है। हमारे देश का एक नमूना है, सचखण्ड का सतलोक का और वह नमूना हमारा शरीर है—"Body is the moving Temple of God." कि इस शरीर में वह आप रहता है—उसे नाम—सिमरन व

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

LUCKY FRUIT JUICE

AZAD MARKET CHOWK

DELHI

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala **Tere Bhane Sarbat Da Bhala**

Phone : 264222

Please Contact For :

All Type of Excercise Books With Good Quality
Paper & Stationary For Best Result

STUDENTS COPY HOUSE

B-97. Tagore Garden Ext.
New Delhi-110027
Prop Dharam Pal

भजन–बन्दगी द्वारा प्राप्त किया जा सकता है और इस नाम के मालिक संत, महात्मा इस धरती पर बन कर आते हैं आर यह कहते हैं, "भाई, जो यह हमारी आत्मा है, वह मन की सत्ता (ताबयादारी) के अधीन हो, उड़ती फिर रही है, भोगी को भोगती है, नौ दरवाज़ों में फंस चुकी है। ये फ़ीके दरवाज़े हैं, फ़ीके स्वाद हैं।

बाबा जी ने आगे फर्माया कि संत महात्मा तो हमें नाम दान देकर उस रब से मिलाने के लिये धरती पर आते है। जन्म दो प्रकार के होते हैं। हमारा भी जन्म हुआ। एक जन्म वह जो माँ ने दिया। असली आयु (उमर) वह है, जिस दिन हमें महापुरुष ने जन्म दिया। वह जन्म किस दिन देता है? उस दिन, जिसदिन हमें नाम-दान देता है, जिस दिन भक्ति के रास्ते पर चलाता है। जितना समय आप को इस आध्यात्मिक रास्ते पर चलते हुए हो गया, रब्बी मार्ग पर चलते हुए हो गया, उतनी आप की आयु है।

China (चीन) के अन्दर बहुत बड़े महापुरुष हुए, जिन्हें कन्फ्युशक्स कह कर याद किया जाता है। उन का जब अंत समय आया तो उन्होंने चेलों को पास बिठाया, बहुत बुर्जुग थे। कहने लगे–"मेरे मुँह में झाँक कर देखो।" चेले कहने लगे, "क्या देखें?" कहने लगे, "इसमें दाँत हैं?" चेलों ने कहा, "दाँत तो कोई नहीं है, महाराज जी।" कहने लगे, "दुबारा से झाँक कर देखो, कोई दाँत तो नहीं है? चेलों ने कहा, "कोई दाँत नहीं है।" कहने लगे, "फिर झाँक कर देखो, कि इस मुख में जीभ है?" कहने लगे, "हाँ, जीभ है।" कहने लगे, "जीभ का जन्म दाँतों से पहले हुआ, बाद में दाँतों का जन्म हुआ, परन्तु उन का अंत पहले हो गया और जीभ मुखमें उसी तरह है और आज भी शरीर का साथ उसी तरह दे रही है।" सेवक कहने लगे, "महाराज जी। समझ नही पड़ी।" कहने लगे, "जीभ का इस लिये कुछ नहीं बिगड़ा क्यों कि यह नर्म थी, दाँत इस लिये नहीं रहे, क्यों कि ये सख्त थे।" यह निर्मलता का रास्ता है, यह रब्बी मार्ग–प्यार का रास्ता है।

बाबा जी ने सब जीवों से कहा–अमृत वेला के समय उठ कर सिमरन किये बगैर पता नहीं हम सब का रोटी खाने को दिल कैसे करता है? बग़ैर आत्मा को भोजन दिये बिना? नियम बनाओ कि अमृत–वेला के समय उठ कर, या जब भी हम उठते स्नान-पानी कर के, महाराज जी का दिया हुआ यह मस्तक पर शोभा श्रृंगार–तिलक लगा कर–अगर पानी और लंगर भी ग्रहण करना है बाद में। उस का लंगर समझ कर कि दाता तुम्हारा दिया हुआ ही खाते हैं, तुम्हारा दिया हुआ ही पहनते हैं, सब कुछ तुम्हारा है। खाना-पीना, रहना, उठना, बैठना जब उस के निमित्त हो जाता है, फिर सब कुछ गुरु के लेखे लग जाता है और गुरु 'त्रिकोटी' से ऊपर है। वह इन भोगों में कभी नहीं फँसता। सो भले लोगो। अटूट विश्वास अपने मुर्शद पर, अपने महाराज पर होना चाहिये, फिर जा कर उस बड़े की बड़ाई में हम सब लोग शामिल हो सकते हैं। सो इस के साथ ही।

"नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला।"

सत बाबा घसीटा राम जी का विदेश से दिल्ली आगमन पर स्वागत।

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA
TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

DAS MOTORS

MARUTI

E-91, Jeewan Park, Pankha Road
Opp. A-2, Janak Puri, New Delhi

MARUTI SERVICE STATION
& repairs of all kinds of care

Lucas TVS
Authorised Sales and Trade Electrical

Prop. DAS DAVINDER

Ph.5505810

Ph.5554322

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA,
TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

B.B.N. PRODUCT

WZ-16A, South Extension
Uttam Nagar, New Delhi-110 059

All Kinds of Fitter & Cases for Layland,
Tata, Maruti, Fiat, Ambassador
Electric Stamping for Cooler & Water Pump

जन्मदिवस समारोह

–महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी–

महाराज जी को जन्मदिन की बधाई देते हुए।

संगत को सम्बोधित करते
महाराज तिरलोचन दर्शन दास जी।

संगत समूह का एक दृश्य।

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With best compliments from :

MARUTI

SUNNY MOTOR AND PROPERTY DEALER

A-12 SHAM NAGAR,
KHAYALA ROAD, NEW DELHI-18
SALE PURCHASE OF MARUTI CARS & VANS
Prop. DAS HARPAL SINGH Ph. : 591926

DHAN DARSHAN

Nanak Naam Chardi Kala Tere Bhane Sarbat Da Bhala

With best compliments from :

MANCHANDA ART PRESS

PROMOTIONAL PRINTING PACKAGING

Specialist in :
Job Work Printers & General Order Suppliers

J-111, VISHNU GARDEN, NEAR SHITLA MANDIR,
NEW DELHI-110018

विदेश

सचखण्ड नानक धाम का कार्यक्रम नियमित रूप से इंग्लैण्ड में भी चल रहा है। पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी क्रिसमस उत्सव पर सचखण्ड नानक धाम की दास धर्म सेवा-समीति ग्लासगो स्कॉटलैण्ड ने Disabled Children Hospital को 251 पौण्ड दान में दिये। ग्लासगो में प्रत्येक अर्धमासिक अवधि में सत्संग होते हैं तथा संगत व समिति में महाराज जी की शिक्षा अनुसार बहुत ही आपसी भाईचारा व परस्पर प्यार है।

बाबा करनैल सिंह जी ग्लासगो कमेटी के साथ 251 पौण्ड Disabled Children HOspital के स्टाफ को दान करते हुए।

एक और दर्शन दरबार का उद्घाटन

27.12.90 को गाँव भौवापुर साहिबाबाद जिला गाज़ियाबाद में एक भव्य सत्संग का आयोजन किया गया। वैसे तो इस गाँव में नियमित रुप से सचखण्ड नानक धाम की तरफ से अर्धमासिक सत्संग होता है, परन्तु इस दिन भव्य सत्संग का आयोजन सचखण्ड नानक धाम द्वारा किया गया। सचखण्ड नानक धाम के परिवार में एक और दर्शन दरबार की वृद्धि की गई। भौवापुर गाँव में दर्शन दरबार की नींव रखी गई। इस दिन दिल्ली की संगत ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। सत्संग संत बाबा घसीटा राम जी ने किया। सत्संग में उन्होंने परमात्मा द्वारा बनाये मनुष्यों की सेवा करने तथा महाराज दर्शन दास जी द्वारा चलाये गये अहिंसा के मार्ग को अपनाने को कहा। उन्होंने परमात्मा को सदैव याद करने के लिये भी कहा क्यों कि परमात्मा ही सारे जगत का स्वामी है।

सचखण्ड नानक धाम का उद्देश्य भविष्य के कार्यक्रमों में सब लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान देने का है। इस स्थान पर छोटे छोटे बच्चों का एक स्कूल खोलने की योजना भी है।

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

Maharaja

WHITELINE

A P P L I A N C E S

BRINGING STATE OF THE ART
HOME APPLIANCES
AT YOUR DOORSTEP

The Maharaja White Line range :

* Washaid—Automatic washing machine.
* Auto Iron
* Supreme Sandwich Toaster
* Mixer — Grinder
* Juicer
* Vacuum Cleaner

They'll go through anything to keep you happy.

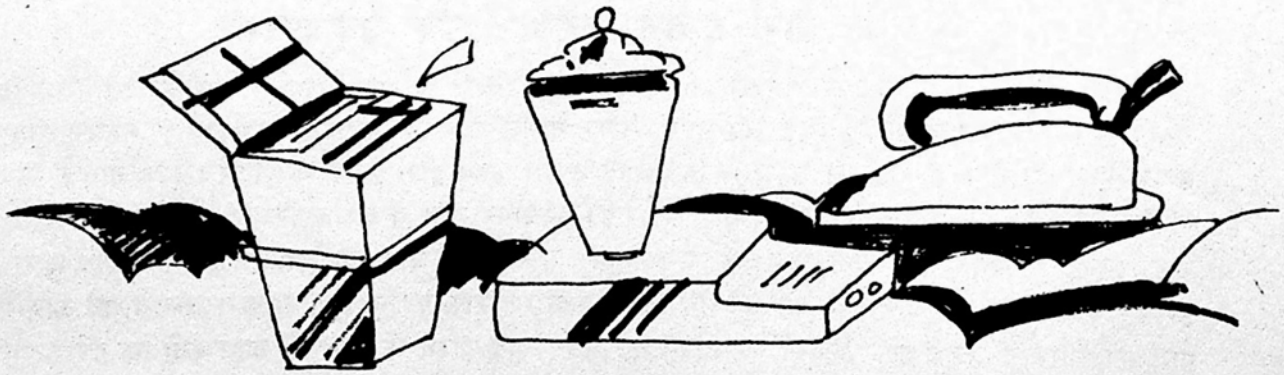

Ph. ५७३२९२१

Technocrat Marketing Pvt. Ltd.
21/51, Old Rajinder Nagar, New Delhi

दास और दास धर्म

समय-समय पर पीर-पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं ने धरती पर जन्म लेकर परिस्थितियों के अनुसार कर्म का सही मार्ग दर्शाया, लेकिन पीर-पैगम्बरों के चले जाने के थोड़े समय बाद हम धर्म की परिभाषा भूलते गये और भूलते चले आ रहे हैं। आज भी हम धर्म की परिभाषा यानि सही धर्म क्या है, भूल गये हैं जिस के कारण धर्म के नाम पर अधर्म फैलता जा रहा है।

धर्म का सम्बन्ध हमारे जीवन के हर पहलू के साथ जुड़ा हुआ है। हम अगर धर्म को एक अर्थ में समझेंगे तो हम धर्म को सही अर्थों में नहीं समझ पायेंगे। हमारे जीवन मे बहुत से पहलू हैं, जैसे:

1) **सामाजिक**
2) **आर्थिक**
3) **राजनीतिक**
4) **व्यवहारिक**
5) **व्यवसायिक**

इस के अलावा (अतिरिक्त) इन्सान कई वर्गीकरणों में बंटा हुआ है, जैसे:

राजा-प्रजा, ब्रहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इस के अतिरिक्त हमारा जीवन तीन अवस्थाओं में--बचपन, जवानी और बुढ़ापे में से गुज़रता है, जिससे हम कई नातों, रिश्तों को जोड़ते हैं, जैसे माता-पिता, भाई-बहन, रिश्तेदार आदि। ऊपर लिखे सब का सम्बन्ध धर्म से है।

समाज में रहते हुए हमारा धर्म है कि हम एक दूसरे के दु:ख-सुख के साथी बनें, गरीब की मदद करें, व्यवहार में हम मीठा बोलें, सही बोलें। आर्थिक और व्यवसायिक जीवन में हम ईमानदारी के काम करें और हक़ की कमाई खायें। राजनीतिक जीवन में हम दुनिया की भलाई करें और इन्साफ पसन्द हों, यह धर्म है।

इसी प्रकार पिता का धर्म है कि हक़ की कमाई से परिवार की पालना करें और माता का धर्म है कि बच्चों की सही ढंग से परवरिश (पालन-पोषण) करे और अच्छी शिक्षा दे। अगर बच्चा स्कूल से कॉपी, पैन्सिल आदि चुरा कर लाता है और माँ खुश हो, यह धर्म नहीं क्योंकि गलत शिक्षा है। उसे चाहिये कि बच्चे को समझाये कि चोरी करना अच्छी नहीं। राजा का धर्म है, इन्साफ करे, प्रजा का धर्म है कि राजा के हुक्म का पालन करे और देश की सेवा करे। ब्राहमण का धर्म है प्रभु सुमिरन करे और धार्मिक शिक्षा दूसरों को दे। क्षत्रिय का धर्म है कि देश की रक्षा करे। और ज़्यादा मुनाफा न खाये। शूद्र का धर्म है कि सेवा करे। लेकिन एक ही इन्सान ब्राहमण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य हो सकता है। क्योंकि ब्राहमण वही है जो ब्रहम में लीन है और वही समय पड़ने पर देश की रक्षा करने के लिये क्षत्रिय बन सकता है और अपने परिवार के गुज़रान के लिये कारोबार करता है तो वैश्य है और घर में झाड़ लगाना या मल मूत्र साफ करना शूद्र का धर्म निभाना है।

ऊपर लिखित से विदित है कि धर्म एक अनुभवी अवस्था है अर्थात् Practical Life है, जो हमारे जीवन को एक खूबसूरत रंग देता है। धर्म हमारे जीवन के हर पल साथ है।

समय समय पर परिस्थितियों के मुताबिक गुरुओं और पीर-पैगम्बरों ने धर्म की पोशाक बदली और धर्म को सशक्त करने के लिये अलग अलग ढंगों से इस को खुराक दी। आज के युग में महाराज दर्शन दास जी ने कुछ असूल बनाये जो कि धर्म की पोशाक और खुराक हैं। धर्म मानो एक शरीर है और शरीर पोशाक पहनने से ही अच्छा लगता है और अच्छी खुराक देने से ही शरीर सशक्त अर्थात् मज़बूत होता है। महाराज दर्शन दास जी ने जो असूल बनायें हैं उन को "दास" के रुप में अंकित किया है जो इस प्रकार हैं:--

संत और समाज

इतिहास साक्षी है कि जब कभी इंसानियत का खुन हुआ, पाप सर चढ़ कर बोला, धर्म राजनीति के शिकंजे में फंस कर तड़पने लगा और काल ने अपनी मैली चादर के नीचे समाज को निगल जाने का सिलसिला आरम्भ कर दिया तो ऐसे समय में नियति के नियमानुसार किसी महापुरुष का अवतार होता है और वह अपने उपदेशों के माध्यम से समाज के उद्धार का प्रयत्न करता है। यहाँ यह उल्लेख करना अनुचित न होगा कि जहाँ महापुरुष समाज सुधार में अपनी छाप छोड़ जाते हैं, वहीं साहित्यकार भी अपनी लेखनी द्वारा तत्कालीन समाज की यथास्थिति का अपने ढंग से चित्रण करता है।

मध्यकालीन भारतीय समाज के ढाचें को देखने से स्पष्ट होता है कि उस समय के साहित्यकार ने अपने कर्तव्य से विमुख होकर शासको की प्रशंसा में उन के गुणों की व्याख्या करने में अपना राग अलाप रहे थे, वहां गुरु नानक देव जी, संत कबीर तथा चैतन्य महाप्रभु ने समाज को अपनी नजरों से देख और समाजिक कुरितियों को दूर करने का प्रयास किया।

जब समाज पत्तन के रास्ते पर अग्रसर होता है तब जनता का ध्यान भक्ति और भगवान की और जाता है। 20 वीं सदी के मध्य से अब तक समाज अनेक कुरितियों का शिकार होता आ रहा है और नियति के नियमानुसार एक महाशक्ति का अवतार हुआ जो महाराज दर्शन दास के नाम से समाज रूपी आकाश पर चन्द्रमा बन कर चमका और उन्होंने भटकी हुई जनता का ध्यान भक्ति और भगवान की और दिलाया। उन्होंने आजीवन लोक भलाई एवं सामाजिक कुरितियाँ दूर करने में अपने कर्तव्य का भली भांति पालन किया।

युग पूरुष ने जहां ईश्वर के नाम का दान दे कर ईश्वरिय अस्तित्व को सर्वोपरी माना है, दूसरी और उन्होंने दास धर्म की भी स्थापना की है जिसका मुख्य उद्धेश्य सरबत का भला है। उन्होंने समाज की निम्नलिखित कुरितियों को दूर करने का प्रयास ही नहीं किया बल्कि अपने जीवन की आहूती भी दे दी।

समाज में स्त्री का स्थान : स्त्री को लक्ष्मी का अवतार माना गया है और उस की पूजा भी की जाती है। जिस समाज या परिवार में स्त्री का आदर नहीं किया जाता वहाँ नरक का वास होता है। खुशहाल समाज के लिये स्त्री जाति को समानता का अधिकार एवं सम्मान मिलना अनिवार्य है। महिलाओं को स्वयं भी अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करना चाहिए जिस में हमें बाधक नहीं बनना चाहिए बल्कि प्रोत्साहित करना चाहिए।

समानता : उन्नत समाज के लिये छुआछात जैसी बुराई को दूर करना अत्यन्त अनिवार्य है। समस्त समाज को भाई चारे व समानता के अधिकार के प्रयोजन के लिये प्यार का पाठ पढ़ाना चाहिए। घृणा के वृक्ष को जड़ से उखाड़ फैंकने में ही हमारी भलाई है क्योंकि इस के साथ आपस में द्वेष की भावना का भी अन्त हो जाता है।

धर्म व राजनीति : वास्तविक धर्म तो वह है, जब हम उस शक्ति का नियमानुसार सिमरन करें जिस ने मनुष्य जाति की संरचना की है। अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये हम ने अनेक धर्मों की स्थापना की है लेकिन यह भी प्रयत्न करना चाहिए कि इन धर्मो को राजनैतिक काल चक्र से दूर रखे और इस के नीचे कुचलने न दिया जाये नहीं तो धर्म के विनाश की संभावना निश्चित है।

स्वस्थ्य साहित्य : अशलील साहित्य की रचना से समाज का पतन निश्चित है। इस से समाज में विलासिता एवं चरित्रहीनता के साम्राज्य को प्रोत्साहन मिलता है। प्रगतिशील समाज की भलाई के लिये साहित्यकार का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह जनता के विचारों और चरित्र को ऊंचा बनाने के लिये स्वस्थ्य साहित्य की रचना करें।

स्वालम्बीबव स्वाभीमान : अपने स्वाभीमान को कायम रखने के लिये किसी भी व्यक्ति का स्वावलम्बी होना अत्यन्त आवश्यक है और यह तब ही संभव होगा जब व्यक्ति भिक्षा का साहारा छोड़ स्वयं मेहनत मजदूरी कर के अपने परिवार की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति करेगा।

सच्चे पैगम्बर ने समाज की बहुमुखी प्रगति के लिये देश विदेशों में इसे सही रास्ते पर लाने के लिये सच का संदेश दिया। काल चक्र भी बहुत शक्तिशाली होता है और जहां "राम" होता है वहां "काल" भी होता है और इसी काल चक्र के कारण हजुर महाराज दर्शन दास भक्ति और शक्ति का अपना काम बीच में ही छोड़ कर ज्योति-जोत समा गये किन्तु प्रकृति के कार्य न कभी रुके है, न रुकते है और नहीं भविष्य में रुकेंगे। हर शाम के बाद सुबह होती है। महाराज के होते हुए ही दूसरी महाशक्ति अवतार ले चुकी थी जिस ने उन के पश्चात् दास धर्म एवं उस के नियमों को उन्नति के शिखर पर पहुचाने का कार्य संभाल लिया है। आओ हम सब परमात्मा से प्रार्थना करें कि महाराज तिलोचन दर्शन दास जी की हजारो वर्ष आयु हो और वे समाज की सेवा का कार्य भली भांति करते रहें।

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत दा भला

दास बोध सिंह

DHAN DARSHAN

NANAK NAAM CHARDI KALA
TERE BHANE SARBAT DA BHALA

With Best Compliments From:

HAPPY TOYS CO.

Manufacturers of :

MAHABHARAT STUFFED TOYS
ELEGRNT, SOFT, CUDDLY & WASHABLE

MAHABHART-TOYS

54, Pocket A/3, Sector 8,
Rohini, Delhi-110085

"धन दर्शन"

भला मांगे सब का भला मांगे
दर्शन के प्यारे, सब जग से न्यारे
भला मांगे.....

लोक भलाई मिशन हमारा, नानक धाम है सच्चा द्वारा
जात पात यहाँ नहीं कोई, सबका मालिक एक है सोई
सब्र सिदक से भरा खज़ाना, आओ मिलकर हम सब मांगे

भला मांगे.....

सतगुरु का चर्चा दिन रात यहां पर, नानक नाम का जाप यहां पर
रोते जो आए दर्शन के द्वारे, सब हंसते जाए सब दुखिया बिचारे
संकट मोचन जल जो पीए दुख निवारे फिर क्यों न मांगे

भला मांगे .....

यह भाथे तिलक सुहाग निशानी, हुक्म में रहके नितकार कमानी
शांत स्वरुप ये सफेद है वर्दी, दीन दुखियों की यह है दर्दी
दास धर्मी सब अमन पुजारी, सारे जग का भला यह मांगे

भला मांगे .....

दहेज कोढ जो जग को खाए, दास धर्म में कति न भाए
साद मुरादी विवाह की रस्में, गुरु के सनमुख जीवन की कस्में
सब प्रभु के बंदे एक धर्म प्रभु का, दास धर्म में सब यह माने

भला मांगे .....

मांस शराब को यहां कोई न छुए, कोई न खाए घत डंगर मुए
गुरु दर आके सब लंगर खाए, मांगी मुरादें यहां दिल की पाए
दिल श्रद्धा से तन धन की सेवा, सेवा करके फल कभी न मांगे

भला मांगे .....

सब ग्रन्थों की यहां एक सी पूजा, मंदिर मस्जिद समझे न दूजा,
सब धर्मों का यहां होता सत्कारा, सत्संग में लागे सचखण्ड का नजारा,
मिलके प्रभू का कीर्तन गाए, अपने प्रभू के मन को भाए हृदय रखें दर्शन तांघें

भला मांगे .....

लोगो मातृ भूमि है शान हमारी। भारत माता जान हमारी
हम सब सच्चे एक भारतवासी, इसकी खातिर हम चूमले फांसी
इस धरती ने जन्मा पाला गले में जिसके नदियों की माला इस धरती की क्यों खैर न मांगे

भला मांगे .....

चारं रंगो का ध्वज ये हमारा, कुर्बानी का ये लाल किनारा
रंग हरा हरियाली, सफेद शांत सा, भगवा जो दीसे रंग वीरता जैसा
गणेश प्रतीक जो हाथी देखे, यह सब की कंत शुभ-शुभ मांगे

भला मांगे .....

— संत बाबा घसीटा राम कन्त

दास और दास धर्म

समय-समय पर पीर-पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं ने धरती पर जन्म लेकर परिस्थितियों के अनुसार कर्म का सही मार्ग दर्शाया, लेकिन पीर-पैगम्बरों के चले जाने के थोड़े समय बाद हम धर्म की परिभाषा भूलते गये और भूलते चले आ रहे हैं। आज भी हम धर्म की परिभाषा यानि सही धर्म क्या है, भूल गये हैं जिस के कारण धर्म के नाम पर अधर्म फैलता जा रहा है।

धर्म का सम्बन्ध हमारे जीवन के हर पहलू के साथ जुड़ा हुआ है। हम अगर धर्म को एक अर्थ में समझेंगे तो हम धर्म को सही अर्थों में नहीं समझ पायेंगे। हमारे जीवन मे बहुत से पहलू हैं, जैसेः

1) **सामाजिक**
2) **आर्थिक**
3) **राजनीतिक**
4) **व्यवहारिक**
5) **व्यवसायिक**

इस के अलावा (अतिरिक्त) इन्सान कई वर्गीकरणों में बंटा हुआ है, जैसेः

राजा-प्रजा, ब्रहमण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इस के अतिरिक्त हमारा जीवन तीन अवस्थाओं में—बचपन, जवानी और बुढ़ापे में से गुज़रता है, जिससे हम कई नातों, रिश्तों को जोड़ते हैं, जैसे माता-पिता, भाई-बहन, रिश्तेदार आदि। ऊपर लिखे सब का सम्बन्ध धर्म से है।

समाज में रहते हुए हमारा धर्म है कि हम एक दूसरे के दुःख-सुख के साथी बनें, गरीब की मदद करें, व्यवहार में हम मीठा बोलें, सही बोलें। आर्थिक और व्यवसायिक जीवन में हम ईमानदारी के काम करें और हक़ की कमाई खायें। राजनीतिक जीवन में हम दुनिया की भलाई करें और इन्साफ पसन्द हों, यह धर्म है।

इसी प्रकार पिता का धर्म है कि हक़ की कमाई से परिवार की पालना करें और माता का धर्म है कि बच्चों की सही ढंग से परवरिश (पालन-पोषण) करे और अच्छी शिक्षा दे। अगर बच्चा स्कूल से कॉपी, पैन्सिल आदि चुरा कर लाता है और माँ खुश हो, यह धर्म नहीं क्योंकि गलत शिक्षा है। उसे चाहिये कि बच्चे को समझाये कि चोरी करना अच्छी नहीं। राजा का धर्म है, इन्साफ करे, प्रजा का धर्म है कि राजा के हुक्म का पालन करे और देश की सेवा करे। ब्राहमण का धर्म है प्रभु सुमिरन करे और धार्मिक शिक्षा दूसरों को दे। क्षत्रिय का धर्म है कि देश की रक्षा करे। और ज़्यादा मुनाफा न खाये। शूद्र का धर्म है कि सेवा करे। लेकिन एक ही इन्सान ब्राहमण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य हो सकता है। क्योंकि ब्राहमण वही है जो ब्रहम में लीन है और वही समय पड़ने पर देश की रक्षा करने के लिये क्षत्रिय बन सकता है और अपने परिवार के गुज़रान के लिये कारोबार करता है तो वैश्य है और घर में झाड़ लगाना या मल मूत्र साफ करना शूद्र का धर्म निभाना है।

ऊपर लिखित से विदित है कि धर्म एक अनुभवी अवस्था है अर्थात् Practical Life है, जो हमारे जीवन को एक खूबसूरत रंग देता है। धर्म हमारे जीवन के हर पल साथ है।

समय समय पर परिस्थितियों के मुताबिक गुरुओं और पीर-पैगम्बरों ने धर्म की पोशाक बदली और धर्म को सशक्त करने के लिये अलग अलग ढंगों से इस को खुराक दी। आज के युग में महाराज दर्शन दास जी ने कुछ असूल बनाये जो कि धर्म की पोशाक और खुराक हैं। धर्म मानो एक शरीर है और शरीर पोशाक पहनने से ही अच्छा लगता है और अच्छी खुराक देने से ही शरीर सशक्त अर्थात् मज़बूत होता है। महाराज दर्शन दास जी ने जो असूल बनायें हैं उन को "दास" के रुप में अंकित किया है जो इस प्रकार हैं:—

1) सच बोलना
2) सत्संग करना
3) विकारों की शहादत
4) सिदक रखना
5) सरबत का भला मांगना।

इन ऊपर लिखे असूलों पर चलने वाले इन्सान को कोई भी नंगा नहीं कर सकता, भाव शर्मिन्दा नहीं होना पड़ता, इस लिये यह बहुत अच्छी पोशाक है और इन असूलों से मन मज़बूत होता है, इस लिये यह मन के लिये बहुत अच्छी खुराक है। क्योंकि शरीर का संतुलन मन और आत्मा से है। इस लिये इस को और मज़बूत बनाने के लिये दास धर्म के अनुयाइयों को सफेद वर्दी पहनाई और आत्मा को मज़बुत बनाने लिये प्रभु नाम दिया।

जिस प्रकार बीमार इन्सान को परहेज़ बताया जाता है, ठीक उसी प्रकार धर्म की परिभाषा में मीट, अंडा, शराब और नशीले पदार्थों का सेवन न करने का परहेज दिया।क्योंकि जब हमें हमारी धर्म–पुस्तकें, गुरु, पीर-पैगम्बर यह बताते हैं कि हमारा शरीर ही असली मंदिर है तो यह कहां का धर्म है कि हम इस में मांस, मदिरा आदि फेंकते जायें। जो मन्दिर ईंटो और चूने का इस दुनिया में हम खुद बनाते हैं, उसमें हम कभी भी मास, मदिरा नहीं ले कर जाते, लेकिन जो असली मंदिर है उस को हम गंदगी से भरते जा रहे हैं, जिस से हम अनेकों प्रकार की बीमारियों से घिर जाते हैं।

इस लिये आज के कलयुग में महाराज जी ने बड़े सीधे–साधे असूल (नियम) हमारे सामने पेश किये, जिस से कोई भी मुनकिर नहीं हो सकता।

दास धर्म को अपनाने से हमारा व्यक्तित्व निम्न प्रकार का हो जाता है:–

1) इन्सान के अन्दर से हिंसा और घृणा खत्म हो जाती है, व दया और प्रेम जागृत होता है।
2) हमारे अन्दर अनुशासन आ जाता है।
3) हमारे अन्दर देश-प्रेम जागृत होता है।
4) हम मानव एकता के बन्धन में बंध जाते हैं।
5) हमारे अन्दर दूसरों के लिये कुर्बानी का जज़्बा होता है।
6) हमारे अन्दर अपने फर्ज़ को समझने और उसको निभाने की आदत पड़ती है।
7) हमारे अन्दर हॅक की कमाई कमाने की और उस में से दीन-दुखियों की मदद करने की आदत पड़ती है।
8) हमारे अन्दर परमात्मा के भाणे में रहने की आदत पड़ती है।
9) हमारे अन्दर सहन–शक्ति और इंसाफ करने की आदत पड़ती है।
10) हमारे अन्दर परमात्मा को मिलने के लिये उत्साह पैदा होता है।
11) दास धर्म एक ऐसा समाज पैदा करता है, जिस में जाति-पाति, मज़हब–कौम, ऊँच-नीच, काला-गोरा (रंग-भेद) की कोई जगह नहीं और सब को एक समान देखता है।

प्यारे भाईयों और बहनों जागो! गफ़लत की नींद से जागो और अपने आप को सुदृढ़ इन्सान बनाने के लिये महाराज जी द्वारा स्थापित किये गये दास धर्म को अपनाओ, ताकि हम अपने आप को, समाज को, देश को और दुनिया को बदल डालें और हम ऐसा वातावरण पैदा करें कि सारी दुनिया एक ही लगे, कोई भी अलग नज़र न आये।

नानक नाम चढ़दी कला
तेरे भाणे सरबत दा भला

दास अवतार सिंह

गुरु का महत्व

संसार में मनुष्य के विकास के लिये तीन बातों का होना बहुत आवश्यक है—स्वच्छता, नियमितता व सुन्दरता (बाहरी ही नहीं) बल्कि मन वचन व कर्मों की भी और यह शिक्षा मिलती है गुरु के बताये गये मार्ग का अनुसरण करने से। वह ही आध्यात्मिक उन्नति करवाता है:—

जपजी साहिब में भी आदेश दिया गया है:

"सोचे सोचि न होवई जे सोचि लख वार।
चुपै चुपि न होवई जे लाई रहा लिव तार।।
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरिआ भार।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चले नालि।।
किव सचिआरा होईए किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।।

गुरु नानक जी कहते हैं कि हम चुप चाप हो कर बैठ जायें तो भी मन की वासनाओं का उठना बन्द नहीं होता भले ही हम भूखे रहें और सारे संसार को अपने काबू में कर लें, तो भी हमारी असली भूख मिटने वाली नहीं। हमें इन बाहरी बातों से सत्य के दर्शन होनेवाले नहीं। फिर हम सच्चे कैसे बनें? झूठ का परदा कैसे टूटे? हमें सत्य के दर्शन कैसे हों? हम मालिक के पास कैसे पहुँचे? एक ही उपाय है उस का 'हुकमि रजाई चलणा' और उस के हुक्म का ज्ञान हमें कौन करवाता है—ज़िन्दा हस्ती, पूर्ण गुरु जो हम भटके हुए जीवों को 'नाम-दान' दे, हमारे कर्मों का बोझ अपने ऊपर उठा हमें इस दुनिया के कर्त्तव्य निभाते हुए नाम—सिमरन करने की रीत बताता है। हमें अपने आप को उस मालिक की मरज़ी पर छोड़ना सिखाता है।

मानव-योनि श्रेष्ठ मानी जाती है, परन्तु बिना गुरु के बतलाये हुए मार्ग पर चलने से, यह योनि ही व्यर्थ बीत जाती है—परन्तु गुरु के मिलाप से, उस की शरण में रहने से मनुष्य प्रभु-नाम जपता है, अनेक जन्मों के पापों से छुटकारा पाता है, सन्तों की चरणधूल माथे पर लगा, उन के बताये गये मार्ग का अनुसरण करने से इस भव-सागर से पार हो जाता है।

"गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरुदेव महेश्वर।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।"

अर्थात् गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है और गुरु ही शिव है। गुरु तो साक्षात् सर्वोच्च परमात्मा है। ऐसे गुरु को कोटि कोटि प्रणाम्। गुरु ही ज्ञान व नाम के प्रसार द्वारा हमारे अज्ञान का संहार करता तथा शिष्यों के जन्म को सार्थक बनाता है गुरु ग्रंथ-साहिब में कहा गया है:—

"गुरु के चरन रिदैले धारउ,
गुरु पार ब्रहम सदा नमस्करउ।
मसकते भरमि भुलै संसारि,
गुरु बिन कोइ न उतरसि पारि।"
(ग्र० सा० पृ० 864)

अर्थात् 'हृदय में गुरु-चरणों' का ध्यान करो। गुरु ही परमेश्वर है, उसे सदा प्रणाम करो संसार में कोई भी भ्रम में नहीं रहता। कोई भी गुरु के बिना सद्गति प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसा ही धाम है-सचखण्ड नानक धाम, महाराज दर्शन दास जी का धाम जहाँ केवल स्थूल रुप से ही नहीं वरन् सूक्ष्म रुप से भी महाराज जी सेवक की प्रति पल रक्षा व सहायता करते हैं। इस संसार में ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक रुप से भी उस को मार्ग दर्शाते हैं—एक मूलमत्र सिखाते हुए—जो कि आज के स्वार्थी प्राणी को दूसरों के लिये जीना सिखाता है—वह मूल मन्त्र है 'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत दा भला' अर्थात् जियो तो ऐसे जियो कि दूसरे जीवों व प्राणियों के लिये भी कल्याण की गंगा बहाते हुए।

दास आदर्श

शराब छुड़ाइये!
अपने घर में खुशियाँ लाइये!

अपने घर में फिर से खुशी लाने के लिए हमारे देसी नुस्खे को शराबी को बिना बताये किसी नमकीन खाद्य पदार्थ में मिलाकर खिलाने से पुराने शराबी भी कुछ दिन बाद शराब से नफरत करने लगते हैं और सदा के लिए शराब छोड़ देते हैं।

हर जगह 10 बजे से 2 बजे तक

मिलें:

डा. वीरेन्द्र सिंह

चीनी अस्पताल, दत्त रोड़, मोगा (पंजाब)

भटिंडा (हर मंगलवार)	विकास होटल, कचहरी के सामने, निकट बस स्टैंड	लुधियाना (हर शुक्रवार)	मंजिल होटल, बस स्टैंड के सामने
जालन्धर : (हर बुधवार)	राजा होटल, गढ़ा रोड, निकट बस स्टैंड	नई दिल्ली (हर शनिवार)	3, एकान्त, पंचकुइयां रोड, निकट बनवारी लाल अस्पताल
अमृतसर (हर वीरवार)	पारस होटल, बस स्टैंड के सामने	चंडीगढ़ (हर रविवार)	346, सतकार भवन, सैक्टर 21-ए, निकट बस स्टैंड

हनुमानगढ़. जंक्शन (राज.) : हर वीरवार—न्यू चमन होटल (सिर्फ दवा के लिए)

जरूरी नोट : हमारी नकल करने वालो से बचें

R.K.
Under Garments

- Banian
- Underwear
- Socks
- Brassieres
- Panties

KEEPS YOU YOUNG AND ATTRACTIVE

Trade Enquiries

Anand Enterprises

2nd Floor 1141 Bharat Building, Sadar Bazar
Delhi-110006 Phone : 739394, 519359

दास धर्म का संविधान

1. **जानकारी :** मानवता की सेवा हेतु महाराज दर्शन दास जी ने ''दास धर्म'' की स्थापना 16 फरवरी 1980 को की थी। इसके पाँच नियम इस प्रकार हैं :-

सच बोलना,
सिदक रखना,
साध संगत करना
शहादत (विकारों की)
सरबत्त का भला मांगना।

महाराज जी का संदेश है कि मनुष्य आत्मिक शांति प्राप्त करना चाहता है, तो उसे तामसिक और नशीले पदार्थों से छुटकारा पाकर उपरोक्त पांच नियमों को अपनाना होगा।

2. **उद्देश्य :** दास धर्म का मुख्य उद्देश्य दूसरों के लिए भला करना है।

3.**मर्यादा :** माथे पर सिंधूर का तिलक आवश्यक है।
सभी धर्म ग्रंथों का सत्कार करना है।
मजहबों व धड़ों के भेदभाव मिटाकर मानवता के दायरे में लाना है।
अपने से छोटे वर्ग के लोगों से प्यार करना है।
किसी भी धर्म का व्यक्ति इसका सदस्य बन सकता है।
सभी सदस्यों को पूर्ण अधिकार है कि वो किसी भी प्रकार की सेवा करें।

4.**रहत :** वर्दी सफेद होनी आवश्यक है।
डयूटी के समय वर्दी पहनना आवश्यक है।
वर्दी के साथ लोई या शाल की मनाही है।
वर्दी के साथ काली गुरगाबी व सफेद जुराबें आवश्यक हैं।
जिस सेवादार ने केश न रखे हों उसे क्लीन शेव व कटिंग करवा के साफ सुथरा होना आवश्यक है।
केशधारी को साफ सुथरी दाढ़ी रखना आवश्यक है।
डियूटी के समय हाथ पीछे बांध कर खड़े होना आवश्यक है।

5. **हिदायतें :** महाराज जी को मात्था टेकना मना है, केवल हाथ पीछे करके ''नानक नाम चढ़दी कला-तेरे भाणे सरबत्त दा भला।।'' बोलना है।
अंडा, मीट, शराब व नशीले पदार्थों के सेवन की मनाही है।
कोई भी सेवादार किसी प्रकार का शस्त्र नहीं रखेगा।
काले वस्त्रों की मनाही है।
कोई भी सेवादार अपने नाम के साथ जाति व गोत्र नहीं लिखेगा।

सचखण्ड नानक धाम के डेरों के पते

सचखण्ड नानक धाम (रजि.)
डेरा महाराज दर्शन दास
WZK-12A, न्यू महावीर नगर
नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-18

सचखण्ड नानक धाम (रजि.)
डेरा महाराज दर्शन दास
लौनी रोड़, लौनी,
जिला. गाजियाबाद (उ.प्र.)

सचखण्ड नानक धाम (रजि.)
डेरा महाराज दर्शन दास
बाई पास, बटाला,
जिला. गुरदासपुर (पंजाब)

सचखण्ड नानक धाम (रजि.)
डेरा महाराज दर्शन दास
11, चर्चहिल रोड, हैन्डवर्थ
बर्मिंघम (यू.के.)

सचखण्ड नानक धाम के सत्संग भवन

दर्शन दरबार
549, सैक्टर-17
फरीदाबाद (हरियाणा)

दर्शन दरबार
36A, विकास कालौनी,
बरसद रोड, पानीपत (हरियाणा)

दर्शन दरबार
डेरा महाराज दर्शन दास जी
गा० भौवापुर हस्नपुर
जि० गाजियावाद उत्तर प्रदेश

दर्शन दरबार
ज्योति कालोनी
गाँव जमालपुर अवाना
नजदीक टयुबवैल
चण्डीगढ़ रोड लुधियाना

भारत में उदय व विस्तार

निम्नलिखित स्थानों पर भी मासिक सत्संग तथा अन्य सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

जम्मू कशमीर
दास एन० एन० खन्ना
48 सुभाष नगर
जम्मू

पंजाब
चण्डीगढ़, बंगा, लुधियाना
खन्ना, मंडी गोबिदगढ़, कपूरथला

हरियाणा
गुड़गांव
महाराष्ट्र
बम्बई
उत्तर प्रदेश
गाजियाबाद देहरादून, रूडकी,

NANAK NAAM CHARDI KALA, TERE BHANE SARBAT DA BHALA

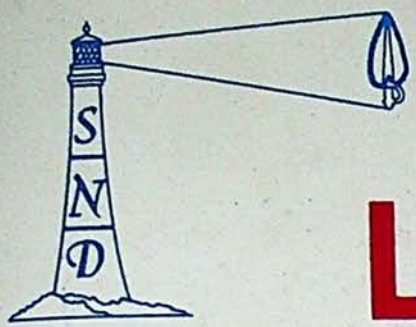

S.N.D. LIGHTING CENTRE

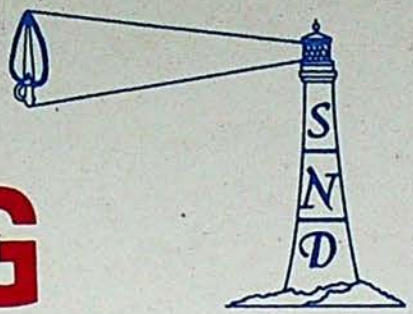

Commercial - Decorative - Low Voltage Lighting
Chandeliers and Disco Lighting

19-21 CONSTITUTION HILL,
HOCKLEY, BIRMINGHAM, B19 3LG
Telephone 021-236 1884

सचखण्ड नानक धाम के द्वितीय कर्णधार

महाराज तिरलोचन दर्शन दास

हे परमात्मा तू अपनी धरती पर शान्ति की बौछार कर दे।

महाराज दर्शन दास